पीथळ

('वेलि' रा कवि पृथ्वीराज राठौड़)

राजस्थानी नाट्य संग्रह

सूरजसिंह पंवार

पंवार प्रकाशन
रामपुरिया कॉलेज के पीछे, बीकानेर (राज.)
फोन : 01512-2206057

राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी
रै आर्थिक आंशिक सहयोग सूं प्रकाशित

आवरण : सूरजसिंह पंवार
संस्करण : प्रथम 2006
मूल्य : एक सौ पैंतीस रुपया मात्र
लेखक : सूरजसिंह पंवार
लेजर टाइप सैटिंग : राजस्थान कम्प्यूटर एण्ड प्रिण्टर्स, रामपुरिया मौहल्ला, बीकानेर
मुद्रक : कल्याणी प्रिण्टर्स, अलख सागर रोड, बीकानेर

PITHAL (Drama Collection) Rs. 135.00
BY
SURAJ SINGH PANWAR

''बडे शोख से सुन रहा था ज़माना
तुम्ही सो गए, दास्तां कहते-कहते''

लाडेसर स्व. कुं. महेन्द्रसिंह भाटी
(पूर्व एम.पी.)
री दूजी पुण्य तिथि माथै...

Padamshri Dr. Laxmi Kumari Chundawat
D Litt (Ex M P)

Laxmi Niwas, D-194, Banipark, Jaipur-302 006 ✆ 205749

प्रिय सूरजसिहजी,

आपकी पुस्तक प्राप्त हुई, मुझे हर्ष मिश्रित आश्चर्य हुआ कि आप तुलसीनाथसिंहजी धाभाई परिवार के भाणेज हैं। आपतो हमारे अपनें है। पुस्तक मे धाभाई जगन्नाथसिंहजी का फोटो देख मुझे महाराणा श्री फतेहसिहजी का युग याद आ गया और अनेक स्मृतिया ऊभर आई। पता नहीं अब तक मेरा आपसे मिलना क्यों नहीं हुआ।

आपके नाटक पढे, अभिभूत हुई। राजस्थानी संस्कृति से ओतप्रोत पारिवारिक पृष्ठभूमि ''मूंढे बोले''। सग्रह के तीनों नाटको नें मुझ पर अपना प्रभाव ड़ाला हैं।

डॉ. एल.पी. टैस्सीटोरी पर आपने खूब लिखा, जो सेवाएं उनकी रही उस पर बीकानेर निवासियों ने बहुत कम लिखा। आपने उस कमी की भरपाई कर दी। वहां के उस समय के वातावरण का आपने सफल चित्राकन कर दिया। महाराजा श्री गंगासिहजी का युग जिसने देखा है वही इस नाटक का सही मूल्यांकन कर सकता है।

बारहठ किशोरसिंहजी, मेनन साहब आदि का नाटक में स्थान देना कितना स्वाभाविक है, नजदीक से समझनें वाला व्यक्ति ही यह तथ्य पेश कर सकता है।

'पीथळ' (पृथ्वीराज राठौड़) भी पूरी मौलिकता लिए हुए है। वार्तालाप की भाषा पाठक को आकर्षित किए बिना नहीं रह सकती। भाषा जाहिर करती हैं कि दरबारी अथवा कोर्ट की तहज़ीब, अदब, कायदे से लेखक की कितनी वाकफियत है।

पंवार साहब बहुत कुछ लिखना चाहती हूं पर मजबूरी है हफ्ते भर से बीमार हूं। आपकी रचनाओं ने मुझे उत्साहित किया, कलम पकड़ने को।

आप जयपुर आएं तो अवश्य मुझसे मिलें।

सस्नेह

लुक्ष्मीकुमारी चुण्डावत

इतिहास रौ मिनखतणौ सरूप

मरुभौम रा आपरा जीवन मोलां री दीठ सू 'वेलि' रा कवि प्रिथ्वीराज राठौड़ अेक 'मानक' चरित्र कैया जा सकै। त्याग, तप, स्वामी भगती, निडरता अर युयुत्सु योद्धा रूप कवि प्रिथ्वीराज री बादसाह अकबर रै दरबार में अेक निरवाळी अर मानजोग ओळखांण ही। मध्यकालीन भारतीय इतिहास मांय राजस्थान री रियासतां रा दिल्लीपत अकबर री केन्द्रीय सत्ता सागै रिस्तां रा बखाण इतिहास री किताबा मांय तौ मिळै ई है, पण उण इतिहास रौ मिनखतणौ सरूप फगत साहित रै पानां ई ओळखीज सकै।

हिन्दी अर राजस्थानी रंगमंच रा नांमी रंग-निर्देसक, अभिनेता अर नाटककार स्री सूरजसिह पवार आपरा आ तीन रंग-आलेखां मांय इतिहास रै इणी मिनख-रूप री सोय करी है। कांई औ फगत अेक संजोग है कै अेक 'डूंगजी-जवारजी' नै छोड़'र बाकी दोवूं नाटक राजनीति री नितूगी उठा-पटक रै अेन बिचाळै ऊभा मिनख रै मिनखी चारै री रुखाळ करता दोय साहित-पुरखां प्रिथ्वीराज राठौड़ अर एल.पी. टैस्सीटोरी माथै केन्द्रित है।

अनुभवी नाटककार स्री सूरजसिंह पवार इतिहास रा पाना दरज कोरा-मोरा 'तथ्यां' पर ई निर्भर नीं रैय'र अेक नाटककार रै आपरै रचाव री जरूरत मुजब नुंवी कल्पनावां अर नाट्य-दृस्य री साव अनूठी उद्‌भावनावा समेत अेक रोचक पाठ रै सिरजण सारू खरी खेचळ करी है।

अठै आ बात कैवणी म्हनै साव अजोगती नीं लागै कै अेक आधुनिक दीठ रै लेखक सारू हुनरमंद रचनाकार हुवण सागै रचाव में अंवेरीजतै खास 'देस-काळ' रै प्रति अेक आलोचनात्मक दीठ ई घणी जरूरी हुवै। इण दीठ सूं इतिहास री अेक निरवाळी व्याख्या - मिनख जूण री रचनाकार रै आपरै अनुभवगत कर्‌योड़ी नुंवी व्यंजना - सामीं आवै। राजस्थानी रगमच री आपरी ओळखाण अर राजस्थानी रंग-आन्दोलन सारू पंवार साहब रा नाट्यालेख अर बांरी रंग-जातरा गीरबै जोग योगदान कर्‌यौ है। आं नाटकां समेत बांरी आ जातरा धकली मजलां तै करती रैवैला, इणरौ म्हनै पतियारौ है।

–डॉ. चन्द्रप्रकाश देवल

लेखकीय

मूलत म्ह रगकमा हूं। सृजन करणो म्हारी प्राथमिकता कोनी फेरूं ही म्हैं सृजन करणो म्हारो धर्म समझूं।

खाली मनोरंजन री दृष्टि सू या सस्ती वाह–वाही लूटण नै ना तो नाटक लिखूं अर ना नाटक खेलूं। खाली म्हारै मन रै भावां री पूर्ति करण खातर म्हैं नाटकां रो सहारो लेवूं क्यूंकै सृजन रै अलावा रगमच ही एक इसो माध्यम है जिकै रै जरियै बडै सूं बडै अर छोटै सू छोटै आदमी री फितरत अर सामाजिक विषमतावा रा कच्चा चिट्ठां रै सागै–सागै, देश रै मांय पग–पग माथै फैलोडै भष्टाचार अर विसंगतियां रो खुलासो कियो जा सकै।

हूँ जाणूं हूँ कै आछै सूं आछै साहित्य, आछी सूं आछी फिल्मा अथवा नाटक देख'र आज तांई कुण सुधरियो है, फेरूं ई आलोक री क्षीण रेखा है कै परिस्थिति सूं बधर अगर कोई भलो माणस दो ऑसू बहावण नै विवस हुजावै तो अेमै लेखक री सार्थकता समझूं। कैवण रो मतलब मानव हृदय नै उद्वेलित करणो ही म्हारो ध्येय है।

ज्यादातर म्हैं हास्य–व्यग्य रै माध्यम सू ही चूंठिया भर–भर'र अर मीठा–मीठा थप्पड मार–मार'र लोगां नै हंसाया है, हंसाया ई कोनी, बानै मांय रा मांय झकझोरिया अर बांनै सोचण नै बाध्य कररिया है।

विख्यात साहित्यकार डॉ रामचरण "महेन्द्र" (कोटा, राजस्थान) रा उद्‌गार–

"आज का जो हास्य निम्नकोटि का हास्य व्यंग्य हो रहा है उसमे नाटककार श्री पंवार का व्यंग्य सर्वथा भिन्न है। उनमें अरविन्द तिवाडी, हरिशंकर परसाई जैसी पैनी दृष्टि है, जो सहज में बहुत–कुछ कह जाती है।

दिन–प्रतिदिन के सामाजिक और पारिवारिक जीवन मे व्याप्त असंगतियों पर चोट करने में पंवार सचमुच सिद्धहस्त हैं, शिष्ट हास्य–व्यंग्य के क्षेत्र में प्रवेश कर वे समर्थ व्यग्यकारों की अग्रिम पंक्ति में आ खडे हुए हैं।"

इयां हंसणो–हंसावणो म्हारो स्वभाव है या इया समझलो हसण अर हंसावण री म्हारी आदत–सी पडगी। म्हारै सूं दो घडी संचलो को बैठीजे नी, इण खातर राजस्थान रा जाण्या–मान्या जनकवि स्व मोहम्मद सदीक आं शब्दां में आपरा उद्‌गार प्रकट करिया–

"श्री सूरजसिंह पंवार की एक खास जीवनशैली है, जहां न शिकवा है न शिकायत, यदि है तो जिन्दादिली, यदि जिन्दगी से बेजार, हारा–थका, गमयापता कोई इनसान भूले–भटके इनके पास पहुँच जाता है तो सुकन के साथ–साथ

तसल्ली व नया हौसला और जिन्दगी जीने का एक नया अन्दाज लेकर नई मंजिल का हमवार होकर लौटता है। जिन्दगी की हर जद्दोजहद में मुस्कराते रहना इनका आलम है। यह खुसूसियत है इस इनसान मे।

सच पूछो तो हसना और हसाना सूरजसिंह के पर्यायवाची बन गये है। पवार एक कलाकार हैं या दीवाने है या फिर कोई खुदाई इमदाद, ईश्वर की विशेष कृपा है इन पर, वरना यू हसना-हंसाना जीवन का एक मुकम्मल उसूल कैसे बन सकता है। एक शेर देखें-

"या तो दीवाना हंसे, या तू जिसे तौफीक दे,
वरना तेरी दुनिया मे रहकर मुस्करा सकता है कौन ?"

जणै कोई इसो आदमी या कोई विद्वान, केनैई इतो सराह देवै या बैरी इत्ती बडाई कर दै तो आदमी मन ई मन माय फूल'र कुप्पो हुजावै, आ आदमी री दिमागी भूख हुवै। ई हालत माय मै हास्य नाटक लिखणां कुकर छोड सकू।

कवि हुवे या कोई शायर गजल या कोई नुवी कविता लिखै, पैलां आपरै आइला-मायलां नै पढ'र सुणावे अर कविता रा भाव जाणै, तो म्हैं अछूतो कठै सू रैसू। इया आपरी औलाद सगळा नै चोखी लागै, पण औलाद तो परायां रै सरायां ई सरीजै।

खैर मुदै री बात करां, आज तांई म्हैं हास्य अर सामाजिक नाटक लिख्या। नाटका नै लोगा खेल्या अर सराया भी पण अबकी बार म्हैं तीन इतिहासिक नाटक लिखण री हिम्मत करी है-बिया तो इतिहासिक नाटक लिखणो कोई दोरो काम कोनी, क्यूकै विषय, कहाणी अर घटना आदमी रै जेहन मांय हुवै पण इतिहासिक नाटक लिखण मे सब सूं पैली एक छोटै-सै मच माथै इतिहासिक स्थल नै दरसावणो ब्होत दोरो काम है। वेशभूषा-ढाल-तलवार (प्रोपर्टीज) भेळी करणी एक नाटककार रै खातर पूरी माथापच्ची रो काम हुजावै।

फेरु ही कई "मानवी शेरा" अर वींरागनाओं री याद आदमी रै मन-मानस मे बणावी राखण खातर टेम-टेम सूं दूजी फिल्मां अर नाटका दांईं लेखकां नै इतिहासिक नाटक भी लिखणा अर खेलणा ई चाईजै। आ म्हारी हम सफर लेखकां अर रगकर्मियो सूं अरदास है।

उपरोक्त सगळी बात्यां ध्यान मे राख'र ई, म्हैं तीन नाटका रो ओ संग्रह आपरै सामनै प्रस्तुत कररियो हूं, अेमै हू कठै तांई सफल होवूंला, आ म्हैं सुधी पाठकां अर विज्ञजनां माथै छोडू। जठै तांई म्हारो प्रश्न है, म्हनै सन्तोष है।

-सूरजसिंह पंवार

।।जय सरस्वती माँ।।

पीथळ

पहलो दरसाव

बीकानेर नरेश राजा रायसिंहजी रो कमरो। राजा रायसिंहजी अर उणां रा छोटा भाई पृथ्वीराज बैठा बंतळ करै अर महल मांय सूं किणी लोकगीत रा सुर होळै–होळै सुणीजै। कीं ताळ पछै किणी रै चालणै रो लखाव करावती आवाज हुवै अर पहरैदार आवै।

पहरैदार : *(मुजरो करतां)* खम्मा अन्नदाता ! महाराज रामसिंहजी दरसण सारू हाजर हुया है।

रायसिंह : रामसिंह एकला ही है या उणां रै सागै कोई दूजो भी है ?

पहरैदार : महाराज रामसिंहजी रै सागै उणां रो अंगरक्षक उदैवीरसिंह अर तीन मिनख भळै है जिकां नै मैं पैलपोल देख्या है।

रायसिंह : रामसिंहजी नै मांय भेजदै अर संगळियां नै मेहमानखानै में बिठाय'र कलेवै–पाणी रो जुगाड कर देवो।

पहरैदार : *(मुजरो करतां)* खम्मा अन्नदाता।

(पहरेदार रो बारै जावणो अर रामसिंह रो आवणो)

रामसिंह : मुजरो, हुकम !

रायसिंह : रामसिंहजी, पधारो ! आपरी ई उडीक ही। खासी देर करदी आवण में !

रामसिंह : *(बैठता थकां)* हां हुकम, मेवाड सूं महाराण रो सनेसो लेय'र एक दूत आयग्यो जिकै सूं बंतळ करण में बगत लागग्यो! ता पछै भी महलां में आवण सारू कई रीत–रकीना निभावण पडै!

रायसिंह : *(मुळकतां थकां)* थांरै खातर किसा रीत–रकीना है ! ओ थांरो खुद रो घर है। अर फेर आपरै आवण री सगळां

नै हिदायत भी तो दे दी ही।

रामसिह : कांई हुकम है ? किया याद फरमायो ?.......

पृथ्वीराज : *(बिचाळै ई)* बीकानेर–नरेश रै सामैं एक धरमसंकट खड़्यो हुयग्यो। एकै·पासी भाई रो हेत अर दूजै पासी राजा रो फरज !. ..

रामसिंह *(बिचाळै ई)* म्हारे खातर काई हुकम है, फरमावो ! हाथोहाथ धरमसकट रो निस्तारो कर देवूंला।

पृथ्वीराज : शहंशाह अकबर कानी सूं एक फरमान आवण पेटै थां सूं सला–सूत करण सारू ही थानै तेडीज्या है।....

रायसिह : *(बिचाळै ई)* भाई पृथ्वीराजजी ! रामसिंहजी नै बादशाह अकबर रै फरमान री विगत बता देवो अर जे अै खुद पढणो चावै तो आं नै पढाय देवो।.. ..

रामसिंह : *(बिचाळै ई)* ना तो मैं उणनै देखणो चावूं अर ना पढणो चावूं। मैं आछी तरा जाणूं कै उणमें कांई लिख्यो हुसी। लिख्यो हुवैला कै बागी रामसिंह नै जीवतो या मर्‌योड़ै नै म्हारे सामैं पेस कर्‌यो जावै। इण रै सागै ओ इल्जाम ही पक्कायत लगायो हुवैला कै बो बागी थारै अठै जेरे--साया है अर सल्तनते--मुगलिया रै बागी नै पनाह देव॰ रै अंजाम सूं थे चोखी तरां वाकिफ हुवोला।

पृथ्वीराज : थां रो सोचणो सोळै आना साचो है। फेर भी इणनै आंख्या मांयकर काढ लेवो तो आछो रैसी।

रामसिंह : बां नापाक हाथां अर कुटिल इरादां सूं मांड्यडै फरमान नै देखणो तो अळगो रैयो, मैं उण पर थूकं अर इण रै हाथ लगावणो भी पाप समझूं, भाईसा !

रायसिंह : रामसिहजी ! जबान पर थोड़ो आंकस राखो। राजा रै कुळ में हुय'र ऐडी बेओपती अर ओछी बोली थारै ओपती कोनी।

रायसिंह : ओपणै, नीं ओपणै रै पचडै में नीं पड़णो ही थां खातर आछो रैसी, महाराज ! म्हारी समझ म्हारे सागै है। मैं जिकी पोसवाळ मे भण्यो, बठै अै सब बातां सिखाईज्या

करती ही। मै कोई मुगलिया मदरसां मे को भण्यो नीं, जठै चीकणी–चोपडी रोट्या री खैरात बांट–र गुलामी रा पाठ भणाईजै।

रायसिंह · सींव ना उलांधो रामसिह ! आ मत भूलो कै थांरो भाई हुवणै रै सागै मै बीकानेर रो राजा अर मुगलिया सल्तनत रो एक लूठो सिपहसालार भी हूं। आछै–आछै वीरां नै बां री औकात बता चुक्यो हूं। मरजाद रै दायरै में रैवणो आछो समझूं अर आ ही चावूं।

रामसिंह . आपरै चावणै–नीं चावणै सूं म्हारो कोई लेणो–देणो कोनी। मैं तो अठै आवणो ई को चांवतो हो नीं, पण भाईसा पृथ्वीराजजी रै कैवणै नै हू टाळ को सक्यो नीं, जिकै सूं आयग्यो। मैं साच नै उजासी है। मै आ धौसपट्टी सुणणै री आदत वाळो कोनी अर ना ही मोम रो पूतळो हूं जिको किणी री गरमी सूं पिघळ जावू।

रायसिंह : *(जोर सूं)* रामसिह !

रामसिंह : बीकानेर नरेश ! कान खोल'र सुण लिरावो कै लोह से लोह जद भिडै तो फूल को बरसै नीं, आगून री चिरणगार्‌यां निकळया करै, जिकी दावानल री भात भी पसरती लाय बण सकै।

रायसिंह : थे कैवणो काई चावो हो ? म्हारै धीरज नै परखी ना चढावो ! मनै चुनौती देवणो मूंघो पड जावैलो अर आ मत भूलो कै.....

पृथ्वीराज : *(बिचाळै ई)* आपसे में झोड करण सारू आपां अठै भेळा को हुया नीं, रामसिंहजी ! म्हारी दोनां सूं अरज है कै बात नै बतुळियो ना बणावो अर समझदारी रै सागै धीरज सूं हालत री नाजुकता नै समझो। शहंशाह अकबर रो फरमान है कै उणनै जीवतो या मर्‌योड़ो रामसिंह चाहीजै अर आपां इण रो इसी भांत सलटारो करणो चावां कै सांप मर जावै अर लाठी भी नीं टूटै।

रामसिह : मनै लखावै कै सत्ता रै पळपळाट में बादशाह चूंधीजग्यो आभै सूं फूल तोड़णा भी एक सुपनो ही है। कांई ठा,

देर–सबेर अकबर नै रामसिह री ल्हास तो मिल सकै, पण बा ही हजारूं मुगलां रा माथ कट्यां पछै ही भलां ही मिलो।

रायसिह रामसिहजी ! आपा पांचूं भायां मे थे सगळां सूं छोटा हो अर स्यात थारो बालपणो अजै गयो कोनी। थे शहशाह अकबर री ताकत नै समझ को सक्या नीं। मुगलिया सल्तनत री जडां इत्ती ऊंडी बडगी कै अबै इण बरगद रै गाछ नै उपाड फेकणो आपणै बख री बात को रैयीनीं।

रामसिंह टणका–टणका हाथी भी कीडी सू मरता सुण्या है। बस सकळप पक्को हुवणो चाहीजै .....

पृथ्वीराज : *(बिचाळै ई)* दिढ़ता री ही तो कसर है रामसिंहजी ! बीकानेर–नरेश रायसिंहजी भारी दोघड चींती में फस रैया है। ना तो अै आपरी धरती पर खून खिंडावणो चावै अर ना आपरै भाई रो मान मारणो चावै। अै चावै कै आप अठै सू किणी दूजी ठौड पधार जावो।

रामसिह · इणरो अरथाव ओ कै मनै अठै सूं देश निकाळो देवणो चावै। म्हारै बाप–दादां सूं विरासत में मिली धरती सूं बेदखल करणै रो आं नै हक कोनी। मै बीकानेर–नरेश रायसिंहजी रो कोई जागीरदार कोनी, बराबर रो भाई हूं, इणनै चेतै राखो.............

रायसिंह . *(बिचाळै ई)* भाई हो इण लेखै ई तो बुलाय'र हालत बताई। म्हारी चावना तो आई है कै रिश्ता बण्या रैवै।

रामसिह : रिश्ता बेअरथा है। रिश्तां री दुहाई देवणो साव बेओपतो है। परापरी मुजब राज्य रै एकठापणै खातर थां नै जिकै दिन बीकानेर रा राजा थरपणो सिकार लियो उणी दिन . आंतरो तो हुयग्यो।

रायसिंह : बीकानेर रो राजा सिकार'र म्हारै पर कोई एहसान को कर्‌यो नीं। ओ म्हारो हक वणतो हो।

रामसिंह : हक ! किस्यो हक ? कियां हक ? बाप–दादां री धरती पर रैवणो मैं भी म्हारो हक मानूं। म्हारी धरती सूं मनै बेदखल करणै रो थां नै कोई हक कोनी।...

पृथ्वीराज : *(बिचाळै ई)* देखो, थे दोनूं थोड़ो धीरज राखो। फालतू काम रा आपस में तो उळझो ना अर निरांत सूं इण अवखाई नै पार करण रो रस्तो दूढो।

रामसिह : निरांत सूं किणी भांत रो रस्तो बैठतो मनै तो को लखावै नीं। आं क्षत्रिय राजावां री बुद्धि तो कठै ही नाठ'र दापळगी।

पृथ्वीराज : देश रो ओ ही तो दुरभाग है। सगळा राजा आप--आपरी डोढ दाळ री खीचडी न्यारी--न्यारी सिजावण लाग रैया है। आं री आ अकड ही तो सगळां नै एकजुट को हुवण देवै नीं। आप मांय सूं ही किणी एक नै बडो मानण नै त्यार कोनी।

रामसिह : किणी दूजै री मातहती मंजूर नीं हुवै तो कम--सूं--कम खुद रै स्वाभिमान री रिछपाल तो करै। इण गुलामी रै जूअै नै अळगो क्यूं नीं फेंकदै ! आपणै सामनै महाराणा प्रताप रो एक अनुकरण जोग आदर्श है। आपरो राज बधावण री तो उणां री आमना कोनी पण फकत खुद री अस्मिता री रिछपाल सारू भचभेडी खाय रैया है। धिरकार है उण राजपूत राजावा नै, जिका एक परदेसी हमलावर रै नचाया नाच नाचता थकां उणां पर वार करै अर मुगल सल्तनत री जड़ां सींचै।

पृथ्वीराज : आपरो सोचणो सौ टंच साचो अर खरो है, रामसिंहजी। आपणो आपसी मनमुटाव ही तो देश री गुलामी री वजह है अर आज तो हालत आ है कै खिलअत अर मनसबदारी खातर आपां उंतावळा हुवां। एक--दूजै नै नीचो अर पोचो दिखावणो आपणो धरम बणग्यो। शहंशाह अकबर आपरै च्यारूं पासी .जी--हजूरियां रो जमावडो कर राख्यो है जिका उणां रा कसीदा पढता रैवै।

रामसिंह : माफ कराया भाईसा ! थे भी तो उणी पंगत में हो अर बादशाह अकबर रै नौ रत्नां मांय सिरै हो।

पृथ्वीराज : सैमूंडै तो इयां ही लखावै, रामसिंहजी ! पण म्हारै हियै में आज भी देशप्रेम हबोळा चढै अर जद भी मौको मिलै

तो मैं इण खातर तड़फा तोडण मे कसर को·राखूंनीं। मै अकबर रै चाटुकारां माय सूं कोनी। मौको पड़्यां अकबर नै भी दर्पण दिखावण में चूक कोनी करूं। महाराणा प्रताप थांरा ही नीं, म्हारा भी आदर्श पुरुष है।

रामसिह : भाइसा ! हुय सकै कै आपरो ओ ही मकसद है, पण आगळयां तो उठै ही है। स्वाभिमान री बठै ठौड कठै ? किणी–न–किणी रूप में चाटुकार बणणो ही पड़ै नींतर कवि गंग जैडा बैला बीत जावै। सरसुती रै उण लाडेसर नै हाथी रै पगा तळै सरे आम रोद्योग्यो, तो ही पण किणी रै कानां पर जूं तक नई रेंगी। कसूर कांई हो ? फकत आ ही तो बात ही कै उण अकबर री दियोडी भीख स्वीकारी कोनी अर कैयो...

एक को छोड़ बीजा को भजै, रसनाज कटो उस लब्बर की।
अब तौ गुनियाँ दुनियाँ को भजै, सिर बांधत पोट अटब्बर की।।
कवि गंग तो एक गोविन्द भजै, कछु शङ्क न मानत जब्बर की।
जिनको हरि में परतीत नही, सो करो मिल आश अकब्बर की।।

पृथ्वीराज : साचाणी ओ नागो नाच हो आंकसबायरी सत्ता रो। म्हारै पीड हुई अर अकबर नै चेतायो कै ओ आछो नीं हुयो। उण भूल नै सुधारण पेटै ही अकबर कवि गग रै बेटै नै बुलायो अर आपरै दरबार में ऊंचो ओहदो देवण री आमना दरसाई अर कवि रंग रै मरण रो दुख प्रकट कर्‌यो। कवि गंग रो बो बेटो भी कमती नीं हो अर कैयो–

सब देवन को दरबार जुर्‌यो, तहँ पिङ्गल छन्द बनाय सुनायो।
काहू तें अर्थ कह्यो न गयो तब, नारदजी नै प्रसंग चलायो।।
मृत लोक में नर एक गुनी, कहि गंग को नाम सभा में बतायो।
सुनि चाह भई परमेसुर को, तब गँग को लेन गणेश पठायो।।

वो भी बाप री ज्यूं ही स्वाभिमानी हो। बो तानो कसतां उथळो दियो कै म्हारो बाप तो महान हो अर देवराज इन्द्र रै दरबार मे सलाह–सूत करण सारू उणां री जरूरत ही। इणी कारण इन्द्र आपरै निजी गजराज नै भेज'र आपरै दरबार में बुला लिया।

रायसिंह : हरेक री आप–आपरी मजबूरी हुया करै। आप–आपरो जीवणै रो ढंग हुवै। पृथ्वीराजजी ! आपरी अर म्हारी मजबूरी न्यारी–न्यारी है। अणेसो तो इण बात रो है कै आपसी भरोसै रा आसार दुड रैया है। एक–दूजै रो चरित्र–हनन कर रैया है। चाटुकारिता अर चुगलखोरी ही आज रो चरित्र बणग्या। आपां सगळा ही उण री भेंट चढ रैया हां। भाखर सू भचभेड़ी नै कोई भी समझदारी नीं कैय सकै। मनै तो म्हारी अबखाई रो सलटारो चाहीजै। रामसिंहजी बीकानेर री धरती छोड देवै तो आछो रैसी नींतर मनै कोई करडो उपाव करणो ही पडसी।....

रामसिंह : *(बिचाळै ई)* आ धमकी किणी और नै देया ! बीकानेर नरेश रायसिंहजीसा ! कान खोल'र सुण लिरावो कै आ म्हारै बाप–दादां री धरती है अर म्हारो मन कैसी तद ताई अठै रैसू। मनै बागाणै रो सुपनो लेवणो छोड ही देया। जंगळां में अलमस्त विचरणियै सिंघां नै पींजरा में रोड़ीज को सकै नीं। घणी करोला तो राज रा टुकडा कर देवूंला।... ....

पृथ्वीराज : *(बिचाळै ई)* रामसिंहजी ! थां नै छल–कपट सूं बन्दी बणावणै रो तो कोई सवाल ही कोनी। थे अठै म्हारा मेहमान अर नूंतीज्योडा हो। थांरी हिफाजत म्हारो फरज बणै।

रामसिंह : मनै थां ऊपर ही भरोसो है। म्हारो मतो तो आप सुण ही लियो। बीकानेर–नरेश म्हारै सूं भिडणो चावै तो त्यार बैठ्यो हूं। बियां'स मैं म्हाराणा प्रताप सूं सीधो सनमन राखूं अर की जोधा भेळा करण में लाग्यो थको हूं। जद ठी समझूला तद राणा कनै चल्यो जाऊंला अर उणां रै झण्डै तळै ही लडूंला। जय जोगमाया री।

(खाथवळ सूं बारै जावणो। रायसिंह अर पृथ्वीराज ऊभा देखता रैवै।)

मंच पर होळै-होळै अंधारो

दूजो दरसाव

(सम्राट् अकबर रो दरबार। अबुल फजल, फैजी, खानखाना, रहीम अर कई अमीर–उमराव बैठा है। मांय सूं नेडी आवती आवाज सुणीजै–बाअदब, बामुलाहिजा होशियार ! शहंशाहे-आलम, नूरे-इलाही, शहंशाहां रा शहशाह जलालुद्दीन अकबर तशरीफ लाय रैया है। सावधान ! बाखबर, बा-अदब, बामुलाहिजा होशियार !

सगळा दरबारी ऊभा हुय जावै। अकबर दरबार में आवै, राजगादी पर बैठै। सगळा दरबारी झुक'र सलाम करै अर पछै पाछा बैठ जावै।)

बादशाह : खानखाना !

खानखाना : *(ऊभो हुय'र)* हुकम आलमपनाह ! आदाब बजा–लावूं।

बादशाह : मुलक रा हालचाल काई है, बयान कर्‌या जावै। अमनोचैन कियां-कैड़ो है ? देश री जनता रै कोई दुख-दरद तो कोनी ?

खानखाना : हुजूर रै रहमोकरम अर इकबाल री बुलन्दी सूं चारूं पासी खुशहाली अर अमन–चैन है। सगळी रियाया बादशाह-सलामत नै दुआवां देवै।

बादशाह : अफगानिस्तान रा काई हाल है ?

खानखाना : अफगानिस्तान रै बलवै नै कुचल दियो अर सरकस बागियां रा सिर कलम कर दिया गया है।

बादशाह : बीकानेर रै राजा रायसिंह री खैर-खबर ?

खानखाना : बीकानेर रा राजा रायसिंहजी अफगानिस्तान री सरजमीं पर सुलताने-मुगलिया री बुलन्दी रा परचम फहरा'र काल ही आगरा पूग्या है, हुजूर !

बादशाह : मरहबा ! राजा रायसिंह जैहड़ै सिपहसालार पर मनै फख्र है, खानखाना।

खानखाना : हुजूर !

बादशाह : मनै इंतहा खुसी है मैं बहादुरां री कदर करणी जाणूं। काल ही तो राजा रायसिंह नै 'राजा' रो खिताब नवाज्यो है। उण री मनसबदारी मे भी इजाफो कर दियो। अबै राजा रायसिह पांच–हजारी मनसबदार है।

फैजी : (ऊभो हुय'र) हुजूर'रो इस्तकबाल बुलन्द रैवै !

बादशाह : मैं थां लोगां नै एक खुशखबरी सूं भळै मुखातिब करणो चावूं। मेवाड रो राणा प्रताप मनै शहंशाहे-हिन्द तसलीम कर लियो है। राणा प्रताप सल्तनते-मुगलिया रै जेरे-ताब रैवणै रो अहद कर लियो।

दरबारी : मुबारक ! मुबारक ! मुबारक !

बादशाह : आ म्हारी जिंदगी री सगळां सूं बडी फतह है।

खानखाना : हुजूर रो इस्तकबाल बुलन्द रैवै।

(पृथ्वीराज दरबार में आवै)

बादशाह : आव पीथळ ! बेसब्री सूं थारी-ई बाट जोवै हो।

पृथ्वीराज : मातहत सूं कोई गुस्ताखी हुयगी काईं, आलमपनाह ?

बादशाह : नीं, पीथळ ! एक अहम खबर सूं तनै रू-ब-रू करावणो चावूं।

पृथ्वीराज : हुकम करो, आलमपनाह !

बादशाह : पृथ्वीराज ! जिकै राणा री वीरता अर सूरवीरता रा गुण गावतो तूं धापै कोनी, बो थारो नरकेसरी आज म्हांरै पींजरै मे बन्द हुयग्यो। बो झुक-परो मनै सलाम बजावणनै बेताब है।

पृथ्वीराज : साफगोई नै गुस्ताखी ना समझ्या आलमपनाह ! बेअदबी वास्तै माफी चावूं। क्यूंकै हकीकत नै झूठी नीं कैईज सकै। पहाडां नै काट्या जा सकै, पण झुकाईजै कोनी। सिंह भूखो हुयां मर भलां ही जावो, पण घास को खावै नीं।

बादशाह : म्हे तनै पहाड रो झुकणो भी दिखासां, पृथ्वीराज ! ओ खत लै। इणनै पढ अर हकीकत नै जाणलै। थारै महाराणा प्रताप रो खत है। पढ'र म्हानै भी मशविरो दै कै उण नै म्हारै जेरे-साया में पनाह देवूं का मैदाने-जंग मे शिकस्त ?

(पृथ्वीराज कागद लेवै। आगै–लारै सूं सावळ देखै अर पढै।)

पृथ्वीराज : गुस्ताफी माफ हुवै, आलमपनाह ! खत री सच्चाई रो पुख्ता सबूत काईं है ? जठै ताई मैं जाणूं हूं, आ महाराणा प्रताप री लिखावट ही कोनी। महाराणा प्रताप ऐहड़ो कागद लिख ही कोनी सकै। मनै तो इण में कोई धोखो नजर आवै।

बादशाह : पृथ्वीराज ! तो काई मैं झूठ बोलूं ?

पृथ्वीराज : नहीं, आलमपनाह ! पण खत झूठो लागै। मैं महाराणा प्रताप री लिखावट नै आछी तरा जाणूं, ओळखूं।

बादशाह : पृथ्वीराज ! आख मीच'र अंधारो मत कर ! हकीकत नै दर-किनार कर-परी जज्बातां सूं ना खेल। जे तनै इणमें कोई शक-शुबो हुवै तो राणा नै खत लिख'र साच री मोहर लगवा लै।

पृथ्वीराज : आलमपनाह ! दूरन्देसी इणी मे लखावै। आपां नै सच्चाई जाण लेवणी चाईजै, नींतर ऐहडी नीं हुवै कै सल्तनते-मुगलिया नै आवणवाळै बगत मे जलालत अर शर्मिन्दगी सूं बाबस्ता हुवणो पड़ जावै।

बादशाह : पृथ्वीराज ! म्हे इत्ती ऊंची आवाज सुणण रा आदी कोनी।

पृथ्वीराज : आलमपनाह, माफी चावूं। कदैई-कदैई साच कडवाहट मे तब्दील हुय जाया करै।

फैजी : *(ऊभो हुवतो)* हुजूर ! हुकम हुवै तो अरज करूं कै पृथ्वीराजजी नै तो सगळै झूठ अर फरेब ही निजर आवै।

पृथ्वीराज : मियां फैजी ! आप क़ैवणो काई चावो ? चाटुकारिता अर

ठकुरसुहाती करणो म्हारो सुभाव कोनी। थे आ बात क्यूं भूलो कै आपां हुक्मरान री आंख अर कान हां। सही-सही हालात सूं शहनशाह नै आगाह करणो आपणो फरज है, अर ओ ही मैं कर रैयो हू।

अफजल बेग: *(ऊभो हुवतो)* पृथ्वीराजजी ! काई थे केवणो चावो कै म्हे आलमपनाह नै गुमराह करां ?

पृथ्वीराज : मियां बेग ! थे एक दानिशमन्द इनसान हो। थोडी ऊंडी सोचो कै सल्तनत री बहबूदी आपणो फरज है। बहसबाजी में उळझणो अकारथ है। दूरन्देशी इणी में लखावै कै खत्त री सच्चाई जाणली जावै।

बादशाह : बेग !

बेग : हुकम, जहांपनाह !

बादशाह : अदब नै नजरंदाज नीं कियो जावै। मनै पृथ्वीराज री राय सूं इत्तफाक है। अंधेरै में बटेर रो शिकार मूंघो पड़ जाया करै।

पृथ्वीराज : आ आलमपनाह री जर्रानवाजी है।

बादशाह : पीथळ ! मैं सदा ही तनै तरजीह दी है। थारी साफगोई रो मैं कायल हूं। मनै फख्र है कै थारै जैहडो इनसान म्हारै दरबार मे रौनक–अफराज है।

पृथ्वीराज : हुजूर रो रहमोकरम है, आलमपनाह ! आ बात जग-जाहिर है आलमपनाह कै महाराणा प्रताप आपणो अव्वल दरजै रो दुसमीं है, पण हुजूर ! बो बुलंदियां ताई पूगणियो इनसान है। जोड़-तोड़ अर दगाबाजी करणियो इनसान कोनी। राणा प्रताप थांरै सामैं जंग लडै तो आपरै बाजुआं पर भरोसो भी राखै।

बादशाह : मनै आं बातां रो एहसास है, पृथ्वीराज ! म्हारी नजरां में भी राणा एक नेक इनसान है। बो आपरै वजूद री जंग लडै, ओ उण रो हक है, पण म्हारा भी कोई उसूल है। एक ही मुल्क में सर्वोच्च सत्ता रो दो परचम एकै सागै कोनी फहरा सकै। मुल्क में एक सत्ता ही बडी रैसी, या तो हिन्दूपत पातशाही अर का पछै मुगल सुल्तानशाही।

उणनै म्हारे जेरे-ताब हुवणो ही पडसी।

पृथ्वीराज हुजूर रो फरमावणो खरो अर एकदम वाजिब है। पण म्हारी निजू ख्वाहिश है कै आपरै अर महाराणा रै बिचाळै सम्मान रा रिश्ता कायम हुय जावै अर आ जंग खतम करदी जावै।

बादशाह आ नामुमकिन है पृथ्वीराज। मनै समझौतै री कोई सूरत निजर नीं आवै। म्हारी शर्त है कै बो मनै तसलीम करै। राणा आपरै स्वाभिमान नै तिलांजलि देय'र झुक को सकै नीं अर मैं बादशाह हुवण रै हक नै दरकिनार कर को सकूं नीं। म्हे दोनूं ही दो मुख्तलिफ सिरां पर हां।

पृथ्वीराज . आपरो फरमावणो सही है, आलमपनाह ! पण इनसानी बहबूदी खातर कदैई-कदैई एक पांवडो लारै भी जावणो पड जाया करै। मेवाड री धरती रो छोटो-सो टुकड़ो सल्तनत रै सरमायै में इजाफो को कर सकै नीं, आलमपनाह ! जंग मे इणसूं घणी बेसी कीमत चुकावणी पड़ रैयी है।

बादशाह : मैं आछी तरां जाणूं हूं पृथ्वीराज कै मेवाड़ री बिलांत-भर जमीं म्हारो खजानो को भर सकै नीं। न ही धरती रो बो टुकड़ो म्हारै साम्राज्य में इजाफो करण री कूवत राखै पण आ वजूद अर उसूल री जंग है। आ जंग तो लडणी ही पडसी। उसूलां नै बलाए–ताक कोनी राख्या जा सकै, पृथ्वीराज ! परवरदिगार म्हांरै खानदान नै बाजुआं री ताकत अर हिन्द रो पट्टो देय'र इण सरजमीं पर हुकुमत करण नै भेज्यो है। इण साच नै जे राणा कबूल करलै तो मै गौर फरमा सकूं।

पृथ्वीराज : आलमपनाह जे इजाजत बगसै तो मैं इण दिस कदम बधाऊं ?

बादशाह : म्हारै मासी सूं तनै इजाजत है पृथ्वीराज, पण इणनै जेरे-गौर राख्यो जावै कै म्हारै बुजुर्ग दादा शहनशाह बाबर रै हाथां राणा सांगा री करारी शिकस्त रो इंतकाम जे राणा म्हारै सूं लेवणो चावै तो आ उणरी नासमझी है.

भूल है, नादानी है। मुगलिया सल्तनत री जड़ां अबै इत्ती मजबूत हुयगी है कै आंनै कोई हिला भी कोनी सकै। पहाड सूं भचभेड़ो खायां जिको हश्र हुवै, बो ही हश्र उण *अदनै इनसान रो भी हुसी।*

पृथ्वीराज : मैं जाणं हूं कै आलमपनाह रो सोचणो बिलकुल वाजिब है। पण मुल्क री भलाई खातर सियासत में कदैई-कदैई दो पांवडा नीचै उतर-परा मुख्तलिफ फैसला ई करणा पड जावै।

बादशाह : मैं इण पर गौर करसूं पृथ्वीराज ! मैं निजू तौर पर उदारता रो हिमायती हूं। तनै तो ठा ही है कै मुल्लावां अर उलेमावां रै मजहबी कट्टरवाद रै सागै ही हिन्दुवां रै धार्मिक उन्माद रै मैं सख्त खिलाफ हूं। म्हारी सल्तनत में इनसान-इनसान रै बिचाळै मजहब री दीवार खडी नीं हुवण देवूंला। इबादत इनसान री निजू ख्वाहिश हुवै। इणनै लेयनै कौमां बिचाळै टकराव क्यूं ?

पृथ्वीराज : ओ टकरावणो तो जावक ही नासमझी अर नादानी है, आलमपनाह।

बादशाह : पण म्हारी सल्तनत मे ऐहडो किणी भी सूरत में हुवण को देवूंनीं। अल्लाहताला इणरो गवाह है, पृथ्वीराज। मैं जिन्दगी-भर इण उसूल पर अमल करूंला।

पृथ्वीराज : आवणवाळी नस्लां जे इणी बुनियाद पर टिकी रैई तो अठै सुरग रो-सो नजारो हुय जासी, आलमपनाह !

टोडरमल : *(ऊभो हुवतो) शहंशाह री शान में टोडरमल रो आदाब।*

बादशाह : सदरेमाल काई कैवणो चावै।

टोडरमल : जहांपनाह सल्तनत रा सगळा पोशीदा मसला सरे-आम तय करण री इजाजत देय राखी है। म्हारै महकमै रा...

बादशाह : *(बीच में बोलै)* राजा टोडरमल ! सियासत रो कोई भी राज मैं रिआया सूं पोशीदा नीं राखणो चावूं। इणी खातर मैं सरे-दरबार म्हारै जज्बातां रो इजहार करयो है जिकै सूं पूरो मुल्क उणा नै जाणलै........मनै समझलै। राजा [illegible] थारी [illegible] वास्तै [illegible]

उणनै म्हारे जेरे-ताब हुवणो ही पड़सी।

पृथ्वीराज : हुजूर रो फरमावणो खरो अर एकदम वाजिब है। पण म्हारी निजू ख्वाहिश है कै आपरै अर महाराणा रै विचाळै सम्मान रा रिश्ता कायम हुय जावै अर आ जंग खतम करदी जावै।

बादशाह : आ नामुमकिन है पृथ्वीराज ! मनै समझौतै री कोई सूरत निजर नीं आवै। म्हारी शर्त है कै बो मनै तसलीम करै। राणा आपरै स्वाभिमान नै तिलांजलि देय'र झुक को सकै नीं अर मैं बादशाह हुवण रै हक नै दरकिनार कर को सकू नीं। म्हे दोनूं ही दो मुख्तलिफ सिरां पर हां।

पृथ्वीराज आपरो फरमावणो सही है, आलमपनाह ! पण इनसानी बहबूदी खातर कदैई-कदैई एक पांवडो लारै भी जावणो पड जाया करै। मेवाड री धरती रो छोटो-सो टुकड़ो सल्तनत रै सरमायै मे इजाफो को कर सकै नीं, आलमपनाह। जंग मे इणसूं घणी बेसी कीमत चुकावणी पड रैयी है।

बादशाह . मैं आछी तरा जाणूं हूं पृथ्वीराज कै मेवाड री बिलांत-भर जमीं म्हारो खजानो को भर सकै नीं। न ही धरती रो बो टुकडो म्हारै साम्राज्य में इजाफो करण री कूवत राखै पण आ वजूद अर उसूल री जंग है। आ जंग तो लडणी ही पडसी। उसूलां नै बलाए--ताक कोनी राख्या जा सकै, पृथ्वीराज ! परवरदिगार म्हांरै खानदान नै बाजुआं री ताकत अर हिन्द रो पट्टो देय'र इण सरजमीं पर हुकुमत करण नै भेज्यो है। इण साच नै जे राणा कबूल करलै तो मैं गौर फरमा सकूं।

पृथ्वीराज : आलमपनाह जे इजाजत बगसै तो मैं इण दिस कदम बधाऊं ?

बादशाह : म्हारै पासी सूं तनै इजाजत है पृथ्वीराज, पण इणनै जेरे-गौर राख्यो जावै कै म्हारै बुजुर्ग दादा शहनशाह बाबर रै हाथां राणा सांगा री करारी शिकस्त रो इंतकाम जे राणा म्हारै सूं लेवणो चावै तो आ उणरी नासमझी है.

भूल है, नादानी है। मुगलिया सल्तनत री जडां अबै इत्ती मजबूत हुयगी है कै आंनै कोई हिला भी कोनी सकै। पहाड़ सूं मचभेड़ो खाया जिको हश्र हुवै, वो ही हश्र उण अदनै इनसान रो भी हुसी।

पृथ्वीराज : मैं जाणं हूं कै आलमपनाह रो सोचणो बिलकुल वाजिब है। पण मुल्क री भलाई खातर सियासत मे कदैई-कदैई दो पावडा नीचै उतर-परा मुख्तलिफ फैसला ई करणा पड़ जावै।

बादशाह : मैं इण पर गौर करसूं पृथ्वीराज ! मैं निजू तौर पर उदारता रो हिमायती हूं। तनै तो ठा ही है कै मुल्लावां अर उलेमावां रै मजहबी कट्टरवाद रै सागै ही हिन्दुवां रै धार्मिक उन्माद रै मै सख्त खिलाफ हूं। म्हारी सल्तनत में इनसान-इनसान रै बिचाळै मजहब री दीवार खड़ी नीं हुवण देवूंला। इबादत इनसान री निजू ख्वाहिश हुवै। इणनै लेयनै कौमां बिचाळै टकराव क्यूं ?

पृथ्वीराज : ओ टकरावणो तो जाबक ही नासमझी अर नादानी है, आलमपनाह।

बादशाह : पण म्हारी सल्तनत में ऐहडो किणी भी सूरत में हुवण को देवूंनी। अल्लाहताला इणरो गवाह है, पृथ्वीराज। मैं जिन्दगी-भर इण उसूल पर अमल करूला।

पृथ्वीराज : आवणवाळी नस्लां जे इणी बुनियाद पर टिकी रैई तो अठै सुरग रो-सो नजारो हुय जासी, आलमपनाह !

टोडरमल : *(ऊभो हुवतो)* शहंशाह री शान में टोडरमल रो आदाब !

बादशाह : सदरेमाल काई कैवणो चावै।

टोडरमल : जहांपनाह सल्तनत रा सगळा पोशीदा मसला सरे-आम तय करण री इजाजत देय राखी है। म्हारै महकमै रा...

बादशाह : *(बीच में बोलै)* राजा टोडरमल ! सियासत रो कोई भी राज मैं रिआया सूं पोशीदा नीं राखणो चावूं। इणी खातर मैं सरे-दरबार म्हारै जज्बातां रो इजहार कस्यो है जिकै सूं पूरो मुल्क-उणा नै जाणलै......मनै समझलै। राजा [illegible] थारी [illegible] वास्ते [illegible]

फायदेमन्द ही हुया करै। पृथ्वीराज ! तूं थारै दूत नै मेवाड पासी रवाना करदै। मैं उण मगरूर इनसान रो सिर झुक्योड़ो देखणो चावू। दरबार बरखास्त।

(बादशाह तख्त सूं उठै।)

मंच पर होळै-होळै अंधारो

तीजो दरसाव

(महाराज पृथ्वीराज री राणी चम्पादे रो सज्यो–सवर्‍यो कमरो। चम्पादे आरामकुरसी पर बैठी सोचण में लाग्योड़ी है। दूरं सूं घुड़लै लोकगीत री तर-तर नेडी आवती आवाज सुणीजै। चम्पादे अचाणचकै उठै अर झरोखै सूं बारै झांकै।)

आवाज : घुडलो घूमै छै जी घूमै छै.....म्हारो तेल बळै घी घाल.... घुडलो घूमै छै जी घूमै छै। राजाजी रै जायो पूत ..... घुडलो घूमै छै जी घूमै छै। सोनै रो टक्को घाल, घुडलो घूमै छै जी घूमै छै......

(दासी मृगजोत कमरै में बड़ै)

मृगजोत : खम्मा राणीसा ! कई छोटी-छोटी बायां घुडलो लेय'र महल मे आई है।

चम्पादे : बां नै मांय आवण दो अर दरी माथै बैठावो।

(मृगजोत बारै जावै अर पांच-सात टाबरां नै मांय लाय'र बैठावै। राणी आवै, सगळा टाबर ऊभा हुय'र मुजरो करै।)

चम्पादे : घुड़लै रो गीत फेरूं सुणावो।

(आयोडी छोरयां गीत गावण रै सागै नाचण भी लाग जावै। मृगजोत भी छोरयां सागै नाचै।)

अबै गवरजा रो गीत भी तो सुणावो।

(छोरयां फेरूं गीत उगेरै अर नाचै। मृगजोत सरमावती-सी चम्पादे रै पगां मांय बैठ जावै।)

गीत : आ टीकी म्हारी गवरा बाई रै सोवै
कोई पातळिया ईसरजी मोलावै ए

टीकी रमां'क झमा, टीकी पानां'क फूलां
टीकी हस्यो कसूंबो ए....
आ टीकी म्हारी राणीसा नै सोवै
कोई पातळिया राजाजी मोलावै ए
टीकी रमा'क झमा, टीकी पानां'क फूलां
टीकी हस्यो कसूंबो ए...

(लगतो ही दूजो गीत उगेरै)

चंपलै री डाळी हींडो मांड्यो, जे कोई हींडण आय
जी ओ म्हे हींडो माड्यो
राणी-सा हींडै, राजाजी हींडावै, जी ओ म्हे हींडो मांड्यो.....

(ता-पछै तीजो गीत गावै)

ओ तो घणो-ई कमायो अब तो आवो बालम रसिया
गैरो जी फूल गुलाब रो
ओ तो दूध पीवो नी दारू छोडो बालम रसिया
गैरो जी फूल गुलाब रो......

(चम्पादे मुळकती थकी आपरा आंसू पूंछै)

चम्पादे . गीत तो घणो फूठरो गायो बायां ! काई-काई नांव है थांरा ?

मृगजोत . *(बिचाळै-ई बोलै)* सगळा आप-आपरा नांव बतावो राणी-सा नै।

छोरी : खम्मा ! मनै राजकवर कैवै !

चम्पादे : *(मुळक'र)* नांव जैड़ो-ई रूप है ! आपरो नांव ?

छोरी : रुकमणी !

मृगजोत : *(बिचाळै बोलती थकी)* आपणै पारवतीजी री पोती है हुकम !

चम्पादे . पारवतीजी ?

मृगजोत : आपणै महलां मे काम करता हा। आप ब्याव कर'र पधारया तद आपरी सेवा माय ही हा। बडेरण बाजता।

चम्पादे : कुण ? काकीसा.........?

मृगजोत : हां ! हुकम, ठीक पिछाणिया।

चम्पादे : बडा ठसकवाळा हा। मनै चोखी तरियां याद है। बडा महाराज अर राणीसा सू कोई बात नै लेय'र बारो मनमुटाव हुयग्यो। पछै तो पीढ़्या रा संबंध अर प्रीत नै तोड'र रावळो छोड'र पधारग्या।

मृगजोत : बाद मे तो, हुकम, महाराणीसा घणा ही पछताया, घणो ही दुख कर्‌यो अर पाछा बुलावण नै घणा ही तेडा भेज्या, पण बै तो जीवतै–जीव रावळै मांय पाछो पग ही नीं दियो। बा रै ठाकरा भी घणा ही मनाया, पण .....

चम्पादे : (बिचाळै ई) पण, सुणी है कै काकीसा रा धणी तो अजै रावळै पधारै है।

मृगजोत : हुकम ! ठाकरां नै दरीखानै रो भार सूंप राख्यो है। अन्नदाता ठाकरां नै *'जीकारो'* बगस राख्यो है।

चम्पादे : आ बाई कैरी है ?

मृगजोत : नवलसिंहजी री दोयती अर जसोदा री बेटी है।

चम्पादे : तूं तो सगळै टाबरां नै जाणै ! थारो काई नांव है ए बाई ?

छोरी : अणचां.....!

चम्पादे : नांव तो सगळै टाबरां रा एक-सूं-एक फूठरा है। थारो काई नांव बेटा ?

(बीच में बोलै)

मृगजोत : आ आपरो नांव आपनै कोनी बतावैला !

चम्पादे : क्यूं ? काई नांव है बाई ?

(छोरी मूंढो नीचो करलै)

मृगजोत : म्हैं अरज करी-नी हुकम ! आ आपरो नांव आपनै को बतावै नीं।

चम्पादे : क्यूं को बतावै नीं ? तूं चुप रै ! मनै पूछणदै। काई नांव है बाई ! सरम ना कर। बता थारो नांव !

मृगजोत : ऐ बाई रो नांव आपरै नांव सूं मेळ खावै, ईं खातर राणीसा !.....

चम्पादे : काईं ? थारो नांव चम्पादे है ?

(छोरी मूढो नीचो करर्या ही नस सूं हामळ भरै)

चम्पादे नांव माथै म्हारो एकली रो अधिकार थोड़ो-ई है ? कैरी वाई है ?

मृगजोत . जडावबाई री पोती है ।

चम्पादे · जडावबाई तो रैया कोनी नी ?

मृगजोत : हां हुकम ! लारलै साल वछ-वारस रै दिन एक गोधो पटक दिया, पण भुगतिया कोनी। पड़तां-ई सांस निकळग्यो।

चम्पादे : तूं पाछलै जनम मे कोई डाकोतणी ही स्यात ! संगळां रा घर-बार जाणै, सगळां री खबर राखै।

मृगजोत · आप साची फरमावो, राणीसा !

(सगळा हंसै)

चम्पादे : जा ! रिपिया-भर्योडो थाळ ले'र आ। सुण ! टाबरां खातर थोडी मिठाई-ई लाये !

मृगजोत · अबार लाऊं, हुकम !

(मृगजोत मांय जावै)

चम्पादे : ओ बालक किणरो है ? ओ थांरै सागै कियां आयो ?

छोरी : ओ म्हारो छोटो भाई है राणीसा ! ओ कैयो कै मैं भी राणी-सा रा दरसण करसू। रोवण लागग्यो जणै मै सागै लेय आई !

चम्पादे · थारो काईं नांव है लाडी ?

छोरो . नांव तो घणोई फूठरो है–फूसराज, पण घर रा सगळा मनै फूसियो-ई कैवै ।

(सगळा जोर सूं हंसै। मृगजोत थाळी लेय'र आवै। चम्पादे सगळां रै घुडलां.में सोनै रो एक-एक टक्को घालै)

चम्पादे : थारो घुडलो कठै, फूसराज ?

(फूसराज मुळक'र मूंढो नीचो करलै। राणी फूसराज नै-ई एक टक्को देवती उण रै माथै पर हाथ फेरै)

मृगजोत : अबै थे सगळा अठीनै आवो ।

(मृगजोत सगळै टाबरां नै मिठाई बांटै अर सगळा टाबर चम्पादे सामैं झुक'र मुजरो करता थका गीत गावता बारै जावै)

टाबर · ओ तो घणो–ई कमायो, अब तो आवो बालम रसिया

गैरो जी फूल गुलाब रो....

(राणी चम्पादे विचारां में डूब जावै। मृगजोत आवै)

मृगजोत · राणी-सा ! कठै खोयग्या आप ?

चम्पादे : मृगजोत ! मनै म्हारो बाळपणो याद आयग्यो। बाबोसा म्हारै घुडलै में रोज एक सोनै रो टक्को घाल्या करता, पण ऐ गीत-वीत म्हारै सूं नीं गाईजता। ना ई ऐ म्हारै पल्लै पडता। पण अबै तो ऐ गीत इत्ता सुवावणा अर मणमोवणा लागै कै......

मृगजोत : *(बिचाळै ई बोलै)* छोटी-थकी नै तो मनै-ई घणा-ई गीत आवता, हुकम ! पण अबै तो सगळा भूल-भालगी।

चम्पादे : ऐ टाबरिया कोरा गीत-ई गावै है का कीं पढाई-लिखाई भी करै ? टाबरां री पढाई रो काई इंतजाम है ? छोर्‌या नै भी पढणो-लिखणो चाइजै।

मृगजोत : माफी बगसावो, हुकम ! आपणै अठै रा तो मिनख-ई पढणो को चावै नीं। पछै आं टाबरियां नै कुण पढावै ? राजाजी कानी-सूं तो सगळै बडै-बडै गांवां मे एक-एक मारजा राख्या थका है, पण गांवां री काई कैवां, आपणै अठै-ई दुला मारजा दिन-भर बैला बैठ्‌या भांग छाणै अर उबास्यां खावै।

चम्पादे · मारजा राख्योडा है तो टाबर पढै क्यूं कोनी ?

मृगजोत : सुणी है कै दुला मारजा टाबरां नै कूटै घणा है।

चम्पादे : तो कोई दूजो मारजा राखलो।

मृगजोत : हुकम। राजाजी पधारै जणा आप उणां नै अरज करस्या।

चम्पादे · ठीक है, तू मनै याद दिराये। मैं राजाजी नै जरूर अरज करूला कै टाबर नई पढै तो वांनै जोरांमरदी पढावणा चाइजै।

मृगजोत हुकम देवो तो थाळ पुरसावण रो हेलो करायदूं !

चम्पादे नई मृगजोत। आज जीमण री अजै बिलकुल इच्छा कोनी।

मृगजोत मैं काल दिनूगै सूं ई देख रैयी हूं कै आप भीत अणमणा-सा लागो हो। मनै लागै है कै राजाजी री ओळूं सतावै !

चम्पादे · भाग अठै सूं, निसरमी। थोडी बेळा आराम करणदै। जीमणै री मन मे आसी तद हेलो पाड देसूं।

मृगजोत . बडो हुकम। आज दिनूगै-दिनूगै दो-तीन बार कागो बोल्यो।

चम्पादे : *(मुळक'र)* तूं भागै कोनी ?

(मृगजोत हंसै अर नाचती-नाचती गावै—उड-उड रे म्हारा काला रे कागला.....अर बारै चली जावै। चम्पादे एकली कमरै मे अठी-उठी घूमै अर आरामकुरसी पर बैठै। सोचण लागै। मंच पर चानणो होळै-होळै कमती हुवै अर सुपनो लोकगीत मांय सू सुणीजै)

गीत · सूती ही रगमहल में,

सूती नै आयो रे जंजाळ

सुपना रे बैरी भवर मिलादे रे.....

(चम्पादे चिमक'र आंख्या खोलै अर अठीनै-अठीनै देखै मृगजोत आवै)

मृगजोत धाय-मा पधारया है, राणी-सा !

चम्पादे : धाय-मा, अबार। मांय भेजदै अर तूं पाणी लेय'र आ

मृगजोत . वडो हुकम।

(मृगजोत जावै अर धाय-मा आवै)

चम्पादे : धाय-मा, पधारो ! आज तो रात-भर सुपना-ई देखती रैय

कै जाणै राजाजी रो दिल्ली-बादशाह सूं झगडो हुयग्यो अर बादशाह राजाजी नै कैद कर लिया।

धाय : *(मूढै माथै बैठती थकी)* दिल्ली रै बादशाह कनै हाल इत्तो मोटो पींजरो कोनी राणी-सा, जिकै मे बीकानेर रै सिंहां नै सोरै-सांस कैद करलै ! फेर, सुपना कदैई साचा को हुया करै नीं, राणी-सा !

चम्पादे : कैवै है नी कै झांझरकै रा सुपना तो साचा ही हुया करै, धाय-मा !

धाय : कैवत तो आ'ही है। पण सगळा सुपना साचा ही हुवै, आ जरूरी कोनी। आपनै तो भौत मजबूत रैवणो चाईजै। आपरो ब्यांव तो महाराज री संभाळ सारू ही करीज्यो हो।

चम्पादे : महाराज नै मैं काई संभाळूं ! बै ही सगळां नै संभाळै है, धाय-मा !

धाय : आपरो कैवणो सही है, पण आपरा बडा बहन, राणी-सा लालमदे रै कुबेळा देवलोक हुवणै सूं राजमहल पर बजर-सो पड़ग्यो। दो डील पण एक-प्राण हा। हंस-हंसणी रो जोडो बिछडग्यो। लालमदे रै वियोग सूं आकळ-बाकळ हुयोडा बिछोड़ां री झळां सैवण री सामरथ नीं हुवण सूं उणरी चिता नै साखी मान'र अगन-देवता नै भूंडता थकां पृथ्वी उण माथै पक्योडै अन्न रो त्याग कर दियो। इण कठोर व्रत सूं जीवण रो धारो ही बदळग्यो। पृथ्वीराज कैयो— म्हां ऊभां थां बाळिया, लालां हन्दा हड्ड।
थां रांध्या ना खावसां, जा रे अग्ग निखड्ड।।

चम्पादे : ऐरो मतलब तो समझावो, धाय-मा !

धाय : इण रो अरथाव है कै हे अगन ! तूं म्हारै ऊभा-थकां ही म्हारी लालमदे रै डील नै बाळ नाख्यो, ई खातर आज सूं थारै पर पकाईज्योडो अन्न कदैई नीं खावूंला।

चम्पादे : काई-भी कैवो, धाय-मां ! राजाजी आ समझदारी को करी नीं। राजाजी नै इत्ती बडी प्रतिज्ञा नीं करणी चाईजती !

धाय . राणी-सा ! आदमी रै हीयै री थाह लेवणो सोरो काम कोनी। च्यारूं पौर नाच-रंग अर गावणै-बजावणै सू गूजतै राजमहल में मसाणा री-सी सांयत अर सूनापणो बापरग्यो। घणी मान-मनवार करयां पृथ्वी थां सूं फेरां री हामळ भरी।

चम्पादे धाय-मा ! मैं म्हारै कानी सूं तो बांरै मुजब रैवणै अर रिझावणै मे कदैई कोई चूक नीं करी अर ना ई कसर राखी।

धाय आ तो मैं आछी तरां जाणू कै थे भौत ही तेज बुद्धिवाळा हो। विधाता फुरसत री बेळा बैठ'र थांनै सिरज्या हा। था मे साक्षात् सुरसत अर लिछमी रो अणकैयो मेळ लखावै।

चम्पाद : धाय-मा ! थे तो म्हारी अणूती बडाई करण लागग्या।

धाय . धाय-मा नै तो जैहडो दीखै, हाथो-हाथ पुरस देवै। थांरा ओळभा भी तो धाय-मा ही सुणै है, राणीसा !

चम्पादे आप तो घणो ही धीजो बंधावो ! पण जद सूं मैं सुपनो देख्यो है तद सूं ही जीव आकळ-बाकळ हुय रैयो है। तीज माथै पधारणै री कैय'र गया हा। तीज तो आई चावै, पण बांरै पधारण रो तो कोई खुर-खोज-ई कोनी।

धाय . आप तो फिजूल रा ई घबरावो हो, राणी-सा ! राजकाज मे कोई जरूरी काम आयग्यो हुसी ! पृथ्वी नै बंदी बणावणो कोई खालाजी रो घर कोनी। बादशाह घणो चतर अर सावचेत है। राजपूतां नै बाभडाभूत करणवाळो कोई भी काम बो कदैई को करै नीं।

चम्पादे : पण मनै तो हर घडी डर लागतो रैवै, धाय-मा ! राजाजी री खुली-खळकावण री आदत कदैई भी बांरै खातर खतरो बण सकै।

धाय : थांरो ओ डर अकारथ है। सुपना तो जीव रा जंजाळ हुया करै। लगोलग एक ही बात सोचता रैयां 'सूं बा सुपनै मे सरजीवण हुय जाया करै। दूजै पासी मिनख रा जलम-जलम रा संस्कार हियै मैं जम्योडा रैवै अर

मौको पड्यां बै सुपनां मे चेतन हुय जाया करै। सुपनां सूं डरणो नई चाईजै, राणी-सा ! फकत मन में गोट उठावणै अर डरणै मांय कोई भांत री समझदारी को हुवैनीं। फेर, थे तो भण्या-गुण्या हो, स्याणा-समझणा हो। ता पछै भी क्षत्राणी रै उण बीजमंत्र नै क्यूं भूलो राणी-सा कै क्षत्राणी तो आपरो सुहाग खूटी पर टाग्योडो ई राख्या करै।

चम्पादे . आप साची फरमावो धाय-मा ! मै म्हारै मन नै घणो ही समझाऊ, पण ओ मानै जद नी !

धाय मन नै मनावणो पडै, राणीसा ! बियां'स पृथ्वी खाली कवि ही कोनी, बो एक जुझारू वीर भी है। बादशाह कई बार जुद्ध में उणरी तलवार रा करतब देख चुक्यो है। रिपुदमनसिंह आवै, जद बो घणी बातां बताया करै। भलांई जुद्ध हुवो अर का निरांत, रिपुदमनसिंह तो छाया री ज्यूं पृथ्वी रै सागै ई रैवै।

चम्पादे : मैं आछी तरां जाणूं, धाय-मा ! रिपुदमनसिंह भाई-सा रो बां नै घणो-ई सहारो है।

धाय : रिपुदमन एक महीनै रो हो तद पृथ्वी खातर धाय-मा री खोज हुई। सैंठो डील अर रूप लेय'र मैं इण महल मे आई। पृथ्वी अर रिपुदमन नै सागै-सागै म्हारो दूध पाय'र बडा कस्या है, राणी-सा !

चम्पादे : राजाजी आपनै पूरी तरां मा रो मान देवै अर मनै भी हिदायत है कै मैं भी आपनै मा ही समझूं।

धाय : ओ पृथ्वी रो बडपण है, राणी-सा ! नई जणा अठै कुण कोई नै पूछै है ? ममता, मोह अर प्रीत रा अठै दोलड़ा अरथाव हुया करै। स्वारथ अर काळजैबायरा-पणै री तो अठै सींव ही कोनी रैयी। अठै सगळा गळै अर होठां सूं ही बोलै-बतळावै। काळजै रो तो अठै लेखो-जोखो ही कोनी रैयो।

चम्पादे : धाय-मा ! म्हारै पर ओ भूंड रो ठीकरो क्यूं फोड़ो हो ?

धाय. : राणी-सा। ओ रावळो ऐहडी बातां सूं घणो अळगो है,

पण बाकी महला री तो बा ही गत है, जिकी मैं बताई।

(मृगजोत भागती--री आवै)

मृगजोत राणी-सा, राणी-सा ! राजाजी पधारग्या ! राजाजी महल कानी आय रैया है।

धाय बधाई हो, राणी-सा !

चम्पादे आ तो आपरै पगफेरै री बडाई है, धाय-मा ! मृगजोत ! आरती उतारण खातर दास्यां नै बुला। निछरावळ करावो, मैना अर धापू नै गावण खातर बुला। धाय-मा ! धिन घडी, धिन-भाग ! आज दिनूगै-दिनूगै थांरा दरसण हुयां आ वेळा आई ! इण वेळा सारू तो तरसती री आख्यां पथराईजगी ही.....मृगजोत ! पैलां धाय-मा रो मूढो मीठो करा।

मृगजोत अबार मिठाई लावूं, हुकम ! पण.......

(मृगजोत चम्पादे सामीं मुळक'र देखै। चम्पादे गळै रो हार काढ'र मृगजोत नै देवै। मृगजोत हंसती थकी 'घणी खम्मा' कैय'र मांय पासी मुडै अर एक दासी आवै)

दासी . राणीसा ! राजाजी मांय पधारै !

(पृथ्वीराज आवै। धाय-मा उठै। चम्पादे झुक'र मुजरो करै। धाय-मा बलइयां लेवै। मृगजोत राजाजी रै पगां लाग'र जावै।)

पृथ्वीराज : धाय-मा ! थारा दरसण अठै-ई हुयग्या। अबार आपरै कनै आवण री सोचै-ई हो !

धाय . खम्मा ! जीवता रैवो ! भगवान हजारी उमर करै। खूब जस-मान बधै !

पृथ्वीराज : आपरा आसीस है। आप किया हो ?

धाय : आपरै प्रताप सूं सब ठीक है, हुकम !

पृथ्वीराज : राणी-सा तो नाराज लखावै !

धाय : आप सुध नीं लिरावो तो और काई हुसी ?

पृथ्वीराज · माफी बगसावो, आगै-सारू ध्यान राखसां !

मावेडी रा राजा राघव वादशाह रै आगै झुकण नै बिलकुल त्यार कोनी, जदकै वै छोटै-सै राज रा धणी है, पण मोडा-वेगा वांनै राज सू वेदखल हुवणो पड़तो लागै। नाक-कटावू रीत-भांत री सरूआत हुय चुकी है। जैपुर री देखा-देखी तख्त सूं नूवां-नूवां रिश्ता जोडण री होड-सी लागगी है। आपसी ईसको अर लाग री तो कोई मरजाद ही को रैयी नीं।

धाय तो ऐ जाट अर मीणा वैठा काईं करै है ?

पृथ्वीराज जाट अर मीणा तो माथो ऊचो करै, पण वै भी एक डोर में पोईज्योड़ा कोनी। लागै कै एक दिन वांनै भी कचरघाण करीज जासी।

धाय सगळा मिल'र महाराणा रै सागै क्यू नीं मिळ जावै ?

पृथ्वीराज : जे सगळा महाराणा रै सागै हुय जावै तो भारत रो इतिहास ही फुर जावै, धाय मा ! भाग री वात है, धाय-मा। सगळो सैवणो अर भुगतणो ही पड़सी। धन्य है राणा प्रताप नै, जिका एकला हुय'र ई बादशाह अकबर रै नाक मे दम कर राख्यो है।

(चम्पादे सिणगार कर-परी आवै। पृथ्वीराज ऊभो हुवै।)

धाय : अबै मैं चालू हुकम। कालै हाजरी मांय हाजर होवूंला।

पृथ्वीराज : हा, धाय-मा ! फेरूं पधारस्या !

(पृथ्वीराज कोथली मांय सू दो चार गिन्नियां काढ'र धाय मा नै देवे)

धाय : खम्मा ! भगवान लाम्बी उमर बख्सावै।

(धाय मा जावै अर राणी चम्पादे आवै)

पृथ्वीराज : पधारो राणीसा ! काई हुकम है ?

चम्पादे : निरमोही राजा सूं काई वात करीजै जिका कै लांबै बगत ताई आपरी धण री कोई खैर-खबर अर सुध तक नीं लेवै।

पृथ्वीराज : थानै ऐडा ओळभा देवणा ओपता कोनी लागै राणीसा। ओ म्हारै पर थांरो सरासर अन्याय है। क्रिसन-रुकमणी

रै अटूट प्रेम रो आधार लेय'र रुकमणी रै उणियारै थांनै साखी राख'र मैं क्रिसन–रुकमणी री वेलि सिरजी है अर थे मनै ऐहड़ा ओळभा देवो ! साची बात तो आ है कै आप म्हारै काळजै सू एक पल खातर भी अळघा को हुवो नीं।

चम्पादे : बादशाह री संगत सू आपनै भी चापलूसी री आदत पड़गी लागै। हे कविराज ! मैं साधारण-सी नारी थानै कियां जीत सकू ?

पृथ्वीराज : निश्छल प्रेम जतावणो जे चापलूसी कैईजै तो आपरो बगसायोडो ओ ताज म्हारै सिर-माथै........

(चम्पादे मुळक'र पृथ्वीराज री छाती लागै अर उणरै कांधां पर हाथ राखै। लारै सूं गीत सुणीजै।)

गीत : मैं तो थारा डेरा निरखण आई हो......म्हारी जोडी रा जलाल, मिरगानैणी रा जलाल.....

मंच पर होळै-होळै अंधारो

चौथो दरसाव

(बादशाह अकबर रो दरबार ! सगळा उमराव बैठा आपस मे बातां करै। हंसी-मजाक रो माहौल)

फैजी : जनाब बीरबल ! आप घणी लांबी छुट्टी मना'र आया नी। कठै-कठै घूम आया, म्हानै कोनी बतावो काई ? भाभी-जान भी सागै हा काई ?

बीरबल : नई जनाब ! थे कानां में कवा क्यूं लेवो ? थानै आछी तरां निगै है कै मैं म्हारी मातेसरी नै तीरथ करावण खातर च्यार धाम अर सातूं पुरयां री जातरा पर गयो हो।

फैजी : इतरो लांबो सफर कर्यो तो परेशानियां सू रू-ब-रू तो हुवणो ही पड्यो हुसी ?

बीरबल : बिलकुल ई नई। जातरा घणी सुखदाई अर आछी रैई। सगळै सूबा मे आगूंच शाही फरमान भेज्योडो ही हो! शहंशाह रो इकबाल बुलन्द रैवै। म्हानै सगळै सूबां मे शाही मेहमान ज्यूं ही परोटीज्या। लगतै हाथ मैं मेवाड भी जाय आयो।

फैजी : मेवाड़ ? बेवकूफ बणावण नै म्हे ही मिल्या काई, जनाब बीरबल ?

बीरबल : मियां फैजी ! आप इयां क्यूं समझो ? मै हकीकत बयान करी है।

फैजी : मेवाड़ मे बड़णै री इजाजत मिलगी थानै ? थानै बन्दी नीं बणाया ?

बीरबल : ना-सा ! ना तो म्हानै रोक्या अर ना ही बन्दी बणाया....

खानखाना : *(बिचाळै ई)* शहंशाह थानै मेवाड जावण री इजाजत अता फरमा दी ही काई ?

बीरबल : मेवाड़ जावणनै शहंशाह सूं इजाजत लेवण रो मौको ही कद मिल्यो ? जियारत करण नै अजमेर गया। बठै माता जिद कर लियो कै मेवाड में केसरियानाथजी रा दरसण तो करसूं हीज। धरमसंकट में फसग्यो। अठीनै मा री जिद, वठीनै शहंशाह री इजाजत नीं अर मेवाड रै राणा सूं रिश्ता भी आछा कोनी, पण मा-सा नै तो सुरग बठै ही निजर आयो। मैं मा-सा नै समझावण री घणी-ई कोसिस करी, पण बीरबल री कुण सुणतो ? मा-सा कैवण लागग्या कै बडी-बडी डींगा मारै, खुद नै शहंशाह रो वजीर बतावै कै म्हारी आ चालै, वा चालै। इत्तो नेड़ो आय'र ई केसरियानाथजी रा दरसण को करा सकै नीं ? चल्यो जा ! मैं एकली ई चली जासूं।

फैजी : मियां बीरबल सागीड़ा फसग्या, फेर तो !

(सगळा उमराव हंसै)

बीरबल : भाई फैजी ! म्हारी हालत कियां बयान करूं। अठीनै कूवो अर बठीनै खाई। आखिर शाही लवाजमो अर शाही पोशक छोडी। केसरियानाथ जावण रो सराजाम कर्‌यो अर दो खिदमतगारां नै सागै लेय'र मेवाड कानी टुर-बहीर हुयो।

खानखाना : थे बडी हिम्मत देखाळी !

बीरबल : और करतो भी काई ? दूसरो कोई रस्तो भी तो कोनी हो। मा-सा री जिद आगै म्हारी कठै चालै ? शहंशाह रो वजीर तो मा-सा रो खिदमतगार हो। बां रो आपरो बेटो हुकुम-उदूली कियां करतो ?

फैजी : पछै काई हुयो ?

बीरबल : मेवाड़ री सरहद में दो कोस चाल्यां पछै च्यार घुड़सवार म्हानै सुरक्षा-घेरै में ले लिया तद बेबसी लखाई। कोई उपाव तो हो कोनी, सो चुपचाप चालता रैया। सैनिक म्हानै किणी भांत री दखल नीं दी, तो एहसास हुयो के म्हे बन्दी तो कोनी।

अफजल : कोई तिलस्मी कहाणी सुणाओ हो'क हकीकत ?

वीरबल : मियां अफजल ! भरोसो तो करो। मैं हकीकत रो बयान करूं। हरेक वगत मन-विलमावणी वातां नीं करीजै।

खानखाना : वाकई हैरतअंगेज वाकयो है।

वीरबल . ऊजड रस्तो। च्यारू पासी उजाड़ इलाको, सूनी डूंगरयां, तीर-कवाण लियोड़ा उघाडै डीलवाळा भीलां रा छोटा-छोटा गिरोह अर सांय-सांय री आवाज ही। सैनिकां रै साथै मे केसरियानाथ रै दरसणां री वापसी में मेवाड री सरहद पर फाट्यै-पुराणै दस्तरखान पर म्हानै भोजन परोसीज्यो।

फैजी थे सेनिका सूं कोई वोल-वतळावण नीं करी काईं ?

बीरबल . सगळै मोन हो। मैं उणां री वेजुवान भासा नै समझै हो। पाछा घिरती वेळा एक बुजुर्ग सैनिक कैयो कै महाराज थानै सलाम भेज्यो है अर कैवायो है कै मेवाड मे देव-दरसणां खातर भेस बदळ'र आवण री दरकार को हुवै नीं। बा रो पैगाम दिल्ली अर आगरा पुगाय दियो जावै।

अफजल : वलां री शख्सियत है।

बीरबल सरहद रै इण पार आयां पछै मैं घूम'र देख्यो कै सैनिक पाछा घिरग्या। मियां फैजी ! मै झुक-परो उण धरती नै निवण कस्यो अर मन-ही-मन महाराणा नै खिराजे-अकीदत पेश करी।

फैजी : बो इनसान कोनी, फरिश्तो है।

अफजल : कदमबोसी करण रो जीव करै।

(पृथ्वीराज आवै)

पृथ्वीराज . कैरी कदमबोसी री चर्चा हुय रैयी है, मियां फैजी !

फैजी : मेवाड रै महाराणा प्रताप री चर्चा चाल रैयी है।

पृथ्वीराज : *(चिमकतो–सो)* काईं कैयो ? बीरबल अर मेवाड ? ओ मैं काईं सुण रैयो हू वीरबलजी ?

बीरबल · थां ठीक सुण्यो। इणमे चिमकणैवाळी कोई बात कोनी, राजा पृथ्वीराजजी ! शहंशाहे-हिन्द रो वजीर मेवाड कोनी गयो, आपरी मारी मुराद पूरी करण वास्तै केसरियानाथजी रा दरसण करावणनै उणां रो बेटो

बीरबल मेवाड गयो हो।

पृथ्वीराज : तो मेवाड री आछी यादगार लेयनै बावड्या हो थे ?

बीरबल : हां-सा । महाराणा इनसान कोनी, कोई देवपुरुष है, पृथ्वीराजजी !

पृथ्वीराज : बीरबलजी । राणा देवपुरुष तो है ही, पण सागै-सागै एक फौलादी इनसान भी है। बा री तलवार रो पाणी परखणै सूं आछा-आछा मुगल सेनापति कतरावै। बांरै भालै री अणी सूं जंग मे शाही तोपां रा मूंढा घूम जावै। हा, बीरबलजी । उदयपुर रै राणा सूं थारी मुलाकात हुई'का नीं ?

बीरबल : जी नहीं ! दोना री आपो-आपरी मरजाद ही।

(नेपथ्य सूं हेलो सुणीजै—बाअदब, बामुलाहिजा होशियार । नूरेइलाही, शहशाह जलालुद्दीन अकबर तशरीफ ला रैया है। थोडी ही ताळ मे बादशाह अकबर आवै। सगळा उमराव झुकता-थका सलाम-आदाब करै। बादशाह रै तख्त माथै बैठ्या पछै सगळा उपराव भी खुद रै आसणां पर बैठै। चौबदार आवै।)

चौबदार : आलमपनाह नै आदाब बजा लावूं। दुरसा आढा नांव रो एक चारण कवि हुजूर रै इस्तकबाल सारू हाजिर हुवणो चावै।

बादशाह : उणनै सरे-दरबार हाजिर कर्‌यो जावै।

(दुरसा आढा आवै अर आपरी पागड़ी उतार'र अकबर नै आदाब करै। खानखाना अर दूजा उमराव ऊभा हुवता तलवारां खांचै)

खानखाना : *(आगै बधतो)* आ तौहीने-तख्त है ! हुजूर, आ नाकाबिले-बरदाश्त है।

फैजी : इणरो सिर कलम कर दियो जावै।

बादशाह : ठैरो ! जठै हो बठै ही थम जावो। कोई एक पांवडो भी आगै बधण री जुर्रत करी तो उणरो सिर कलम कर दियो जावैला !

(सरणाटो । सगळा आप-आपरी ठौड़ ऊभा रैवै।)

चारण कवि । तूं उण कौम रो है जिकी नै अखलाक अर अदब रो अलमबरदार तसलीम कर्‌यो जावै। इण वेअदवी रो सबव ? जाणै है'क नीं इणरी सजा ?

आढा मनै इणरो इल्म है आलमपनाह । इण अपराध री सजा सजाए-मौत हुवै। मैं दरबार रा कानून-कायदा जाणूं, समझू। इण सू पैला भी मैं हुजूर रै दरबार में कई बार हाजिर हुयो हूं।

बादशाह फेर इण गुस्ताखी रो सबव ?

आढा ना तो आ गुस्ताखी है आलमपनाह । अर ना ही अणचेतै में हुयोड़ी भूल । आ म्हारी जिन्दगी रो हिस्सो बणगी। अबै मैं इणी भात जीवूं।

बादशाह : तनै बेअदबी करणै रो कोई परवानो शहशाहे-हिन्द अता फरमा राख्यो है काई ? किणी नै जलील करणै रो तनै काई हक है ? जाणता-बूझता कर्‌योडै अपराध री सजा तो और घणी सख्त है। शाहों सूं टकरावण री जुर्रत करै ? खतरां नै नूंतणै मे कुणसी समझदारी है ? इणरै मूळ मे कोई राज है तो उणनै जाणण रो मनै हक है।

आढा : आप मालिक हो आलमपनाह । आपनै जाणणै रो पूरम्पूर हक है। आ पागडी भोरा-न-भोर सिवरणजोग हिन्दुआ सूरज उण महाराणा प्रताप री है, जिका अन्याय रै आगै सिर झुकाणो नीं सीख्यो।

बादशाह : चारण कवि !.........

आढा : गुस्ताखी बगसाओ आलमपनाह । इण री आबरू री हिफाजत करणो म्हारो फर्ज है। सिर कट भलाई जावो, पण इणनै पैरया राख'र झुक नीं सकै।

बादशाह : थारी बेलोस बातां सुण'र मनै इन्तहा खुसी हुई, चारण कवि ! तनै देवण खातर राणा कनै कोई दूजी चीज कोनी ही काईं ?

आढा : इण सूं बा री [illegible] री [illegible] जा सकै,

जहांपनाह ! पागडी देवती बेळा बै गळगळा हुय'र कैयो हो कै आ इज्जत ही ऊबरी है, इणनै तू लेजा। क्षत्रिय हूं सो तनै खाली हाथा कियां भेजूं ? आलमपनाह ! मैं बां नै वचन दियो कै मरती बेळा ताई पागड़ी री इज्जत नै महफूज राखूला। ओ ही इण बेअदबी रो सबब है अर आ-ही दास्तान है।

बादशाह : *(गोडां पर हाथ मारतां)* मरहबा. .....चारण कवि पर हीरा-जवाहरात री निछरावळ करी जावै। सदरे–खजाना ! उणनै मालामाल कर दियो जावै ! राजा टोडरमल चारण कवि नै जे कोई शाही मरतब री ख्वाहिश हुवै तो म्हारै कानी सूं नवाजी जावै !

टोडरमल : जी, आलमपनाह ! हुकम री तामील करीजसी !

आढा : हुजूर रो इकबाल बुलन्द रैवै !

(कोर्निश करै ! पागड़ी सिर पर राखै अर बारै जावै।)

बादशाह : शाही हुक्मनामो सरे–दरबार बांच्यो जावै !

खानखाना : *(आदाब कर-परो)* आलमपनाह रो इकबाल बुलन्द रैवै ! आप लोगां नै ध्यान हुवैला कै अरसे-दराज राणा प्रताप रो एक खत आयो हो जिकै में शहंशाहे-हिन्द रै जेरेताब रैवणै रो इकरार हो। उणरी असलियत बाबत शकोसुबहा रो इजहार करीज्यो। खत री असलियत जाणण-सारू सुल्ताने-आली रै हुकम सूं राजा पृथ्वीराज राणा नै एक खत भेज्यो अर उण रो जवाब भी राणा भेज्यो है। शहंशाह रो हुकम है कै उण खत री तफसील नै सरे–दरबार उजागर करीजै।

बादशाह : पृथ्वीराज ! खत नै पढ'र सगळां रै सामने सुणा कै राणा काईं लिख्यो है। खत रो मजमून जाणण खातर मैं बेताब हूं।

पृथ्वीराज : *(बीच में बोले)* आलमपनाह ! म्हारी इल्तजा है कै आप खुद इणनै नजर-गुजार कर लिरावो !

बादशाह : इणनै जे मैं म्हारै ताई ही महदूद राखणो चावतो तो

काल महल मे मुलाकात सूं इनकार कोनी करतो। मैं राज नै पोशीदा राखाणो को चावूं नीं कै राणा काईं लिख्यो है। वेखौफ हुय'र खत नै सरे-दरबार बाच्यो जावै।

पृथ्वीराज हुजूर सूं एकर भळै गुजारिश करणी चावूं कै इणनै खुद ही पढ लिरावो।

बादशाह . पृथ्वीराज ! ओ शहंशाह रो हुकम है। तामील करयो जावै।

पृथ्वीराज गुस्ताखी माफ करी जावै आलमपनाह ! राणा प्रताप लिख्यो है–

तुरक कहासी मुख पतो, इण तन सूं इकलिङ्ग।
उगै जॉही ऊगसी, प्राची बीच पतङ्ग।।
खुशी हूँत पीथळ कमध, पटको मूँछॉ पाण।
पछटण है जेतै पतो, कमला सिर केवाण।।
सॉग मूँड सहसी सको, समजस सहर सवाद।
भड पीथळ जीता भला, वैण तुरक सूँ बाद।।

बादशाह : पृथ्वीराज ! खत रो खुलासो दरबारी भासा में करयो जावै।

पृथ्वीराज : आलमपनाह ! राणा लिख्यो है कै म्हारा आराध्य देव एकलिङ्ग भगवान म्हारै मूंढै सूं उणनै तुरक ही कैवासी। सूरज भगवान अगूणा उगै अर अगूणा ही ऊगसी। हे कमध पीथळ ! राजी हुय'र थारी मूंछ्यां पर ताव लगा। म्हारी खड़ग तो सदा अकबर रै माथै पर मंडराती ही रैसी जिकै रो वार झेलणो उणनै भारी पड़सी। हे पीथळ ! मैं जीवूंला तद ताणी तुरक सूं तो म्हारो झगडो मंड्योड़ो ही रैसी।

(फैजी, अफजल अर दूजा उमराव ऊभा हुवै अर तलवारां पर हाथ राखै)

बादशाह : म्हारो हुकम है कै कोई भी किणी भांत री गुस्ताखी करण री जुर्रत नीं करै। दरबार रै अदब रो पूरो-पूरो ध्यान राख्यो जावै। पृथ्वीराज ! तूं जीत्यो, हूं हार्यो !

खानखाना : आलमपनाह !.....

बादशाह : *(हाथ ऊंचो करता)* मैं इणसू वेखवर कोनी कै राणा रै खत में थारी वाणी वोलै।

पृथ्वीराज : गुस्ताखी माफ हुवै आलमपनाह ! ऐ राणा प्रताप रा ही उद्‌गार है।

बादशाह : मैं आस्तीन में सांप को पाळू नीं, पृथ्वीराज ! थारै सरीसा सिहां नै पाळूं। मैं सिंहां रै सागै खेलण री कूवत भी राखूं। जंग री आ खुली चुनौती मनै मजूर है। खानखाना !

खानखाना : हुकम, आलमपनाह !

बादशाह : मेवाड़ रै खिलाफ आर-पार री जंग रो ऐलान कर दियो जावै। मैं राणा नै सबक सिखा'र ही दम लेवूंला। राणा री आ जुर्रत कै मनै इण भात रै अल्फाज सूं बकारै ! राणा नै इण री कीमत चुकावणी पडसी !

खानखाना : हुजूर ! म्हानै एक मौको भळै दियो जावै। म्हे राणा नै सबक सिखाय'र ई दम लेवाला।

बादशाह : खानखाना ! थे लोग कई मौका चूकग्या। मैं शाही जंग रो ऐलान कर दियो। फेर भी जे उण मिनखां मे सिह सूं मुकाबलो करणै री हसरत है तो मै थारी बात मान लेसूं। पण शहजादा सलीम, हालांकि उमर में तो छोटो-ई है, तो ही, उणनै सागै राख्यो जावै। आ जंग थां लोगां री नई, उण रै नांव सूं लडीजसी। दरबार बरखास्त !

(सगळा लोग ऊभा हुवै)

मंच पर होळै-होळै अंधारो

जाणलो। हूँ आप नै ले'र ही चिन्ता मे हूँ।

ठकुराणी : म्हनै ले'र कांई वात री चिन्ता, आ बात जाणण रो म्हनै पूरो अधिकार है।

डूंगजी : आप म्हारा अर्धांगिनी हो, आपनै सब जाणण रो अधिकार है।

ठकुराणी : म्हैं आपरे हुकम नै सदा सिर माथै राख्यो है। कदेई मरयादावां नै लांघी को नीं, आपरै सुख-दुख में बराबर री भागीदार रही हूँ।

डूंगजी : अे बात नै कुण इनकार करै। आप सदा म्हारो साथ देवता आया हो अर म्हनै ओ पूरो भरोसो है कै आप म्हारो साथ सदा देवता रैसो। बाकी आं दिनां अठैरा हालात कंई बिगड रैया है। बठोठ सूं तीन कोस री दूरी पर अंग्रेजी फौज पड़ाव डाल राख्यो है, पण फौज आगै बध'र हमलो को करणो चावै नीं।

ठकुराणी : हमलो नईं करण रो कारण कांई है ?

डूंगजी : म्हारी समझ में अैरा दो कारण हो सकै। पहलो कारण है म्हारे घर में ही म्हनै कैद राख'र म्हारै आगै-पीछै री जाणकारी राखणी अर मौको आवण पर म्हारै माथै अंकुश लगावणो। दूजो कारण जिको म्हनै मोटे तौर सू दीखै है बो है शेखावटी री जनता में आतंक फैलावणो कै जे वै चावै तो हमलो कर'र आपनै नेस्तनाबूद कर सकै।

ठकुराणी : फेरूं बै हमलो करण सूं हिचकिचावै क्यूं है ?

डूंगजी : बानै अै बात रो डर है'कै हमलो करण सूं शेखावटी री जनता विद्रोह कर सकै है। जिको आज री परिस्थितयां में बांरै हित में कोनी।

ठकुराणी : तो आप आपरै कानी सूं आगै बध'र हमलो कर'र शत्रु नै पाछो खदेड दो।

डूंगजी : आ बात इत्ती सैंज अर सोरी कोनी। अै छोटी टुकडी पर हमलो कर'र अैनै तो भगा सकां पण अैरै लारै जिको

शेखावटी रा मानवी शेर

पहलो दरसाव

(बठोठ रो गढ, गढ रो एक बड़ो हाल-सो कमरो। बठोठ रा ठाकुर डूंगसिंह कमरै मे बैठा हुक्को पींवता कीं सोचता हुया'क मांय कानी सूं ठकुराणी केसरकवर कमरै में आवै।)

ठकुराणी : खम्मा घणी।

डूंगजी : पधारो।

(ठकुराणी कनै बैठै अर डूंगजी रै मूंढै कानी देख'र)

ठकुराणी : म्हैं कई दिना सू देख री हूँ'क आप अणमणा-सा रैवो हो, म्हारो मतलब, काई गम्भीर बात सोचण लाग रिया हो ?

डूंगजी : म्है अर गम्भीर, ओ सिर्फ आपरो सोचणो है।

ठकुराणी : सदा ही हॅसमुख रैवण वाळा रै मूंढै माथे चिन्ता री अै रेखावा छानी को रैवैनीं हुकम।

डूंगजी : कोई खास बात कोनी, आप नै खाली बैम है।

ठकुराणी : खास बात भलां ई मत हुवो, पण आपरै मन री अेकअेक बात जाणण वाळी आप री जोड़ायत नै आप इयां झुठला को सको नीं। साची बताओ, आप म्हासूं कांई छुपा रिया हो ?

डूंगजी : आप कांई बात कर रिया हो ? आज तक कोई भी बात म्है आप सूं छिपाई कोनी।

ठकुराणी : आज तांई छिपाई'क नई छिपाई, म्हनै ठा कोनी, पण आज तो जरूर कोई बात छिपा रिया हो।

डूंगजी : जे आप अबै जाणणनै इत्ता ई उंतावळा हो, तो फेरूं

जाणलो। हूँ आप नै ले'र ही चिन्ता में हूँ।

ठकुराणी : म्हनै ले'र कांई बात री चिन्ता, आ बात जाणण रो म्हनै पूरो अधिकार है।

डूंगजी : आप म्हारा अर्धागिनी हो, आपनै सब जाणण रो अधिकार है।

ठकुराणी : म्हैं आपरै हुकम नै सदा सिर माथै राख्यो है। कदैई मरयादावा नै लांघी को नीं, आपरै सुख-दुख में बराबर री भागीदार रही हूँ।

डूंगजी : अै बात नै कुण इनकार करै। आप सदा म्हारो साथ देवता आया हो अर म्हनै ओ पूरो भरोसो है कै आप म्हारो साथ सदा देवता रैसो। बाकी आं दिना अठैरा हालात कंई बिगड रैया है। बठोठ सूं तीन कोस री दूरी पर अंग्रेजी फौज पड़ाव डाल राख्यो है, पण फौज आगै बध'र हमलो को करणो चावै नीं।

ठकुराणी : हमलो नई करण रो कारण कांई है ?

डूंगजी : म्हारी समझ में अैरा दो कारण हो सकै। पहलो कारण है म्हारे घर में ही म्हनै कैद राख'र म्हारै आगै-पीछै री जाणकारी राखणी अर मौको आवण पर म्हारै माथै अंकुश लगावणो। दूजो कारण जिको म्हनै मोटे तौर सू दीखै है बो है शेखावटी री जनता में आतंक फैलावणो कै जे बै चावै तो हमलो क़र'र आपनै नेस्तनाबूद कर सकै।

ठकुराणी : फेरूं बै हमलो करण सूं हिचकिचावै क्यूं है ?

डूंगजी : वानै अै बात रो डर है'कै हमलो करण सूं शेखावटी री जनता विद्रोह कर सकै है। जिको आज री परिस्थितयां में वांरै हित मे कोनी।

ठकुराणी : तो आप आपरै कानी सूं आगै बध'र हमलो कर'र शत्रु नै पाछो खदेड दो।

डूंगजी : आ बात इत्ती सैंज अर सोरी कोनी। अै छोटी टुकडी पर हमलो कर'र अैनै तो भगा सकां पण अैरै लारै जिको

अपार बळ है वै सूं खुल्लमखुल्ला पार को पा सका नीं। इयै वास्तै बठोठ छोडण री ठाण ली।

ठकुराणी आप छत्री हो'र दुसमण नै पीठ दिखासो ?

डूंगजी ठकुराणी ! म्है पीठ दिखावण वाळी रात जलम्यो कोनी। ओ कोई रणक्षेत्र कोनी जिकै में पीठ दिखा'र कुळ माथै कलक लगारियो हूँ। आमनै–सामनै भिडन्त कर'र इतिहास रै पानां मे नांव तो लिखा सकूं। अैमें म्हारै उद्देस्य री पूर्ति को हुवै नीं। बठोठ रो गढ़ खाली करणो म्हारी रणनीति रो एक हिस्सो है, जे म्हनै म्हारै उद्देस्य री पूर्ति करणी है तो म्हनै शिवाजी रै आदर्श नै अपणावणो पडसी।

ठकुराणी : राजनीति री सतरंज री अै चालां तो हूँ जाणूं कोनी। हूँ तो एक सीधी-सादी बात जाणू, शत्रु गांव री सींव पर खडिया ललकार रिया है, आन अर मान री रक्षा सारू आ भिडन्त हुजावणी चाईजै। चावै प्राण लेवणा पड़े या प्राण देवणा।

डूंगजी आपरा वीरता सू भर्योडा अै ओजस्वी विचार जाण'र म्हनै बडी प्रसन्नता हुई। म्हनै इयै सूं अपार बळ मिल्यो है। आप जिसी जोडायत नै पा'र हूँ धन्य हूँ, जे हालात री मजबूरी नई होवती तो हूँ आपरी बात मान लेवतो, पण अै मौकै पर शक्ति प्रदर्शन करण सूं बात बणै कोनी। शक्ति री जगै विवेक सूं काम लेवणो पड़ रियो है।

ठकुराणी फेरूं आप ज्यूं ठीक समझो बियां करो अर म्हारी चिन्ता बिल्कुल छोड दो। हूँ छत्रराणी हूँ, म्हे म्हारी रक्षा करणी जाणूं। आप म्हारै कानी सूं बिल्कुल निचिंता रैवो। हूँ कुल री मान अर मरयादा नै कठैई ऑच को आवण दूं नीं।

डूंगजी : ओ तो म्हनै आप माथै पक्को भरोसो है। आपरी बात्यां सुण'र म्हारै माथै पर सूं ब्होत बडो बोझ उतरग्यो, आप कानी सूं हूँ अबै बिल्कुल निचिंतो हूँ, फेरूं भी म्हैं भोमसिंग नै आपरै कनै छोड जासूं। बठोठ माथै कोई

मुसीबत आसी तो आप अर भोमसिग मिल'र सम्भाळ लेसो।

ठकुराणी : आप भोमसिगजी नै साथै ले पधारो। बै आपरै सुख-दुख रा साथी है। सूझ-बूझ अर भीड पडियां साथ देवण वाळा आदमी है।

डूंगजी : आपरो कैवणो सही है, पण भोमसिंह नै बठोठ मे छोडण रै लारै म्हारो एक स्वार्थ है। भोमसिह ब्होत सुळझोड़ो अर काम रो आदमी है। विसम सूं विसम परिस्थिति आवण पर भी बो रस्तो निकाळ सकै है। बडै-बडै झंझावातां सूं झूझण री बैमें ताकत है। म्हारो स्वार्थ है, म्हनै बठोठ री पल-पल री खबर मिलती रैसी।

ठकुराणी : राज री जिसी मरजी। बठोठ री चिन्ता आप छोडो। ठाण पर बंध्योडा इयै घोड़ा री हिणहिणाट सुण'र म्हनै म्हारै बचपन री याद आजावे, बाबोसा रै घोडां पर चढ'र म्हैं घणी ही शिकारां खेली है। जे मरयादा आडै नई आवती तो हूँ, घोड़ै पर सवारी कर'र रकाब सू रकाब मिला'र आपरै सागै चालती।

(दरवाजै सूं आवाज)

डूंगजी : लखदाद है आपने, पण अबार आप मांय पधारो, कोई मिलणनै आयो लागै।

(ठकुराणी उठै)

ठकुराणी : खम्मा हुकम। कोई चीज–वस्त री जुरूरत हुवै तो रावळै में फरमा दिया।

(ठकुराणी रो मांय जावणो अर जालिमसिंह रो आवणो।)

जालिमसिंह : खम्मा हुकम, लोटियो जाट अर करणियो मीणो आया है।

डूंगजी : मांय भेज दो अर सुणो, आइन्दा सूं लोटियै जाट नै चौधरी अर करणियै मीणै नै मान रै नांव सूं बतळावणा है।

जालिम : बडो हुकम, आगै सूं ध्यान राखूंला।

(जालिमसिंह बारै जावै, लोटियो जाट अर करणियो

मीणो माय आवै, दोनूं जणां झुक'र....जै माताजी री करै)

डूंगजी जै माताजी री......आ भाई चौधरी, जणै देखां जणै आ जोडी सागै ही दीखै।

लोटियो . मा–जाया तो कोनी, पण पागड़ी–बदळ भाई हॉ ठाकरा, सागै ही जीवण-मरण रा कौल-करार कर राख्या है।

मीणो *(बीच मे बोले)* खम्मा हुकम, एक सौगंध और ले राखी है, जित्ते जीसां आपरी चाकरी में रैसां अर आपरो हुकम बजासां।

डूंगजी : आ थां लोगा री मेहरबानी है। थां जिसा बहादुर साथियां माथै म्हनै घणो नाज है। और सुणो, खम्मा-वम्मा रो चक्कर छोडो–सीधी बात करिया करो, बराबर रा भाई हॉ। बैठो, खडा क्यूं हो ?

(जालिमसिंह मांय आ'र)

जालिम : खम्मा घणी, जवारसिंहजी पधार रिया है।

(जालिमसिह बारै जावे, लोटियो जाट अर करणो मीणो खड़ा हुवै अर बारै कानी सूं जवारसिंह मांय आवै।)

लोटियो . जै जोगमाया री ठाकरां।

जवारसिह · जै जोगमाया री। क्यूं चौधरीं, घर में सगळा ठीक-ठाक है ?

लोटियो : आपरै प्रताप सूं सगळा तगडा है, हुकम।

जवार और भाई करणा, थारा कांई हाल है। घरआळी कान खींचै है या नई ?

लोटियो : *(बीच मे बोलै)* खीच्यां बिना कान इत्ता मोटा थोड़ै ही हुवै।

मीणो : घरवीती कैवै दीखै, अबकी भाभी सूं मिलण दै, घर मे गोधम नई घला दूं तो म्हारो नांव फोर दिये। और सुण इयै ठाकरां री ठिठोळ्यां करण री आदता रै सागै मत हो, आ सूं ऊजळा राम-राम ही चोखा।

डूंगजी : अरे आ नोंक–झोंक तो छोडो अर मुद्दे री बात माथै

आवो। जवारसिंह, आवण में व्होत देर कर दी ?

जवार : हां हुकम, घोडा री नाळ बांधणआळो आयग्यो हो। बैनै समझावण लागग्यो अै खातर देर हुयी, पण अजु ताई दूसरा साथीडा भी को आया नीं ?

मीणो : *(बीच मे बोलै)* आवती वेळा म्हनै गवाड मे सगळा मिल्या हा, आप-आपरा घोडा बांधण गया है, आवता ही होसी।

(उणी टेम बारै कानी सूं अजमेरीसिंह पालडी, मुकन्दसिंह सिहरावट, सावतो मीणो, अनजी, खुमाणसिह बीदावत अर हट्ठीसिंह कान्धलोत रो आवणो।)

लोटियो : लो सरदारां री उमर तो घणी लांबी है, अबार-अबार आप लोगा नै याद करिया हा।

डूंगजी : आओ पधारो, जै जोगमाया री। आप लोगां री ही उडीक ही।

(सगळा एक-दूजै नै मुजरो करै अर बैठै।)

ठिकाणै में तो सब ठीक-ठाक अर राजी-खुसी है ?

मुकन्दसिंह : जोगमाया रै प्रताप सूं सब ठीक-ठाक है। कुकर याद फरमाया, हुकम फरमावो ?

डूंगजी : आप लोगां सूं, आगै री रणनीति पर विचार-विमर्स करणो है।

अजमेरी : रणनीति तो पैलां सूं ई तै करोड़ी है, छापामार लड़ाई लड़णी है। अैनै अमलीजामो पैरावण रो जिम्मो आपनै दे राख्यो है। आप हुकम फरमावो।

मुकन्दसिंह : *(बीच में)* म्हां तो बागडोर आपरै हाथां में सूंप राखी है। म्हानै तो आपरै आदेश री पालना करणी है।

डूंगजी : म्हारो तो कांई हुकम है, हुकम तो थांरा-म्हारा एक ही है। अै गोरी चामड़ी वाळा दरिन्दां सूं देश नै मुक्ती दिरावणी है।

जवार : *(बीच में)* देश रा हालात तो आप लोगां सूं कांई छाना है। चारूं पासी अराजकता रो बोलबालो है। देश में आपाधापी मच री है, हाथ-हाथ नै खा रियो है। पूरूं

कर'र देश जग रियो है। ओ म्हारो देश है, केवण वाळो कोई को रैयोनीं।

अजमेरी सही फरमावो हो, देश री जिकी हालत है, कैसूं छानी है, देश रो कोई धणी है ना धोरी।

हट्ठीसिह *(वीच मे)* देशी रियासता रा हाल तो ओर ही माडा है, ठाकरां। जिकै राजावां रै हाथ मे राज री वागडोर है, वे तो लावी ताण'र सोरिया है अर आपरै स्वार्था मे उळझोडा है।

खुमाणसिंह . हट्ठीसिहजी रो सही फरमावणो है। वां लोगां सूं कोई आस राखणी वेकार है। वै तो खुद आपरी रक्षा रो भार आ गोरा महाप्रभुवां रै हाथां मे सूंप राख्यो है। आंनै दीन-दुनिया सूं कांई लेवणो है ?

मुकन्दसिह · वै तो दारूडी-मारूडी मे मगन है। देश री आजादी सूं आनै कोई लेणो है ना देणो।

लोटियो : *(वीच में)* दो पाटां री चाकी में जनता पिस री है, ठाकरां। फिरंगी जनता नै दवावण में अै राजावां रो सहारो ले राख्यो है अर आपणै हथियारां रो प्रयोग आपा पर ई कर रिया है।

जवार . राजावां री बात छोडो, अै तो नांव रा ई राजा है। अपणै–आप नै प्रजाहितैसी कैवै है अर प्रजा रो सोसण करणो आपरो धरम समझै।

डूगजी *(वीच में)* अै अकल रा दुसमण आ को समझैनीं कै आणो प्रमाद, देश रै खातर कित्तो घातक है।

सावतो · माफी वगसाई जावै ठाकरां, आं जागीरदारां रा जुलम ही आं राजावा सूं कुंई कम को है नीं। लाग-बाग-बेगार लेणो आपरो धरम समझै।

डूगजी : सावता, थारो कैवणो सई है, आपां रै समाज री मूळ रचना मे ई दोस है। आपस मे ऊंच-नीच री लम्बी-चौडी खाई है। छोटै-बडै रो भेदभाव घणो है। ई ढांचै मे मूळ बदळाव आयां सू ई कुंई पार पडसी अर छोटी-मोटी समस्यावां रो तो हाथै ई हल हुय जासी।

सांवतो : सई फरमाओ हो ठाकरां। अै वात नै म्हे भी जाणा हां।

डूंगजी : छोडो, अर मुख्य मुद्दो है फिरग्यां नै अै देश सू खदेडणो। आगे री योजना इनै ध्यान मे राख'र ई वणावणी है। वठोठ अवै आपारै वास्तै सुरक्षित को रैयोनीं। अैनै छोड'र कोई दूजो स्थान खोजणो पड़सी।

(वीच मे वोलै)

जवार : म्हारी समझ में जोडवीड रो आछो स्थान सुरक्षा री दृष्टि सू भी घणो उपयोगी है, भाखर री ओट है। जोडवीड़ रो वीड इत्तो घणो है'कै जठै सूरज री किरणा तक को पौंच सकैनीं अर आम रस्तै सूं हट'र है।

लोटियो : *(बीच में)* सुरक्षा तो है ही, सागै-सागै खास वात आ है'कै वठै जानवरां रै चारै-पाणी री ई कोई कमी को'नी।

डूंगजी : व्होत आच्छो अर फूठरो सुझाव है। आ जाग्यां सब दृष्टि सूं ठीक रैसी। अबै आपणी प्राथमिकता है, आछा हथियार अर आछी नसल रा ऊठ-घोड़ा रो बन्दोबस्त करणो।

अनजी : इयां वास्तै आप सीकर राव सा'ब सूं मिल'र वात करो।

डूगजी : हूँ इयै सिलसिलै में सीकर राव सा'ब अर जैपर दरबार दोनां सूं मिल चुक्यो हूँ, वै आपारी मदद करण नै तैयार कोनी। आपरी सुख-सुविधा नै छोड'र कोई ई आग में कूदणो को चावै नीं।

जवार : वै अपणै-आप नै सार्वभोम शासक मानै।

डूंगजी : वै अपणै-आप नै चावै धरती रा वादशाह मानता फिरो, पण अंग्रेजा री नजरां मे बारी कद-काठी गुलामा सू घणी कोनी।

हट्‌ठीसिह : *(बीच मे)* बुरो नीं मान्या ठाकरां । गुलामी रो ओ जूडो अै उतार क्यूं नई फेकै ?

डूंगजी : साहस री कमी है। लारलै दिनां, झांसी री राणी रो एक दूत तांतियो टोपी देशी रियासतां रै इयां राजावा सूं मिलण नै आयो हो, एकै सागै मिल'र विद्रोह करण रो

संदेशो हो, पण सगळा कन्नी काटग्या अर टकै-सो जवाब दे दियो'कै म्हे अंग्रेज सरकार रा खैरख्वाह हॉ, आप कोई और घर देखो। तांतियो टोपी हार्‌यो-थक्यो म्हासूं अर जवारसिंह सूं मिलणनै पटोदा आयो अर बोल्यो—इयै राजावा कानी तो बारै बज्योड़ी है। अंग्रेजां रै खिलाफ देश में जनता रै मांय जिको व्यापक असंतोस फैल रैयो है, बैरो ई सहारो लेय'र देश मे आजादी री लडाई लडणी पडसी। म्हासूं मदद री गुहार करी। म्हां बानैं पूरी मदद करण रो भरोसो दियो है। अै बात सूं तांतियो टोपी अठै सूं व्होत ई प्रभावित हो'र गयो है। अवै आपांनै आपणो धरम निभावणो है।

मुकन्दसिंह . *(बीच मे)* आपरी जैपर दरवार सूं कांई बातां हुई ?

डूंगजी : वै म्हनै, म्हारै रस्तै सू डिगावणो चावता, साम-दाम-दण्ड-भेद सारी नीतियां रो बां सहारो लियो अर पछै दबाव री राजनीति पर उतरग्या।

अजमेरी : *(बीच मे)* नादिरसाही तो बाणी पुराणी आदत है।

डूंगजी · बा तो है, पण बै म्हारै सभाव सूं चोखी तरियां परिचित' हा, इयै खातर बियां संयम सूं काम लियो। म्हैं म्हारी स्थिति साफ करतां अर्ज करी की स्वामीभक्ती में म्हैं म्हारै कानी सूं दरार कोनी डालणी चावूं, बाकी राज री मरजी। हूं म्हारै रास्तै नै को छोडूंनीं। आखिर अै बात पर समझौतो हुयग्यो'कै हूं बांरै राज में कोई उत्पात को मचाऊंनीं अर बांरै खिलाफ रिआया कोई वगावत करसी तो हूं जनता रो साथ कोनी देवूं। बैरी एवज में बियां पूरो भरोसो दिरायो'कै अंग्रेज सरकार म्हारै विरुद्ध बांसूं कोई मदद मांगसी तो वै ऑख मीच लेसी।

अजमेरीसिंह : आ तो आपांरी व्होत वडी जीत है, ओ मोर्चो तो आपां सहज ही फतह कर लियो।

डूंगजी : थांरो कैवणो सही है। अवै हथियारां वास्तै पइसां रो जुगाड़ करणो पड़सी।

(बीच में बोलै)

मुकन्दसिंह : सगळी शेखावटी पइसैवाळा सेठां सूं भरी पडी है ठाकरां। रामगढ रै एक ही सेठ सूं काम चाल जासी।

डूंगजी : म्हैं रामसिंह नै रामगढ रै सेठ कनै भेज्यो हो, पण सेठ मीठो-सो उत्तर पाछो भेज दियो'कै "आप धणी हो, आपरी छत्रछायां में वसां हां, गरीब वाणिया हां। आपनै धन देवण रो मतलब है, अंग्रेजी सरकार सूं झगडो मोल लेवणो, मोटै राज सूं झगडो बांधणो म्हारै बस रो रोग कोनी। माफी बगसाई जावै।" हूँ जहर रो घूंट पी'र चुप हो'र बैठग्यो।

लोटियो : आप चुप हो'र क्यूं बैठग्या ? सेठ नै हाथोहाथ सबक सिखाय देवणो हो।

डूंगजी : हूँ वैसूं सीधो उळझणो को चावतो नीं, अैसूं जनता मे गलत संदेसो जावतो। जगै–जगै लोगां में आ बात फैल जावती'कै म्हे धोड़ेती हॉ अर वाणिया अर गरीब जनता नै लूंटां। अैसूं अमन अर शान्ति रै नांव पर अग्रेजी सरकार नै आपणै खिलाफ हस्तक्षेप करण रो सीधो मौको मिल जावतो।

हट्ठीसिंह : एकै कानी तो आपरो सोचणो ठीक है ठाकरां, पण साख राखण खातर सेठ नै सबक सिखावणो ही पडसी। नई तो आपांरो सगळो दबदबो ही खतम हुजासी।

मीणो : *(बीच में)* अबार तो मौको हाथ मे है, अंग्रेजी फौज री रसद ले'र सेठ रै ऊंटां री कतार नसीराबाद जावण वाळी है।

(बीच में बोलै)

लोटियो : अै सूं आछो और कांई मौको मिलसी ठाकरां ? हूँ अर करणो मिल'र हाथोंहाथ अै काम नै निपटा देसा।

मुकन्दसिंह : *(बीच में)* ओ काम इत्तो सौरो कोनी, जित्तो थे सोचो हो। सेठ आपरी रसद कम सूं कम दस हथियारबन्द आदमियां रै घेरै मे भेजै है। मुकाबलो हुवण री पूरी सम्भावना है, म्हे लोग भी सागै रैसां।

लोटियो : क्यूं भाई करणा, कांई विचार है ? दो-चार आदमी सागै

लेवणा है ?

मीणो आपणी सख्या कांई कम है ? एक अर एक ग्यारह हुवै। ज्यादा आदमी सागै हुयां सूं खेल रो मैदान संकडो पड जासी। खुल'र खेलण रो मौको को मिलसी नीं।

डूंगजी मुकन्दसिंहजी ! आप निचिंता रैवो। अै दोनूं भायला मिल'र ई काम नै चोखी तरयां निपटा लेसी। ज्यादा आदमी हुवण सूं ओळखाण रो खतरो वध जासी।

अजमेरी हथियार खरीदण सारू, शेखावटी रै सेठां नै छोड'र मथुरा रै धनाढ्य सेठ गणेशीलाल नै क्यूं नीं लूंट लां ?

जवार सेठां नै लूटण-पाटण री बात छोडो, नैड़ो ई शेखावटी ब्रिगेड रो मुख्यालय है। बठै हथियार मोकळा मिल जासी। शेखावटी ब्रिगेड नै ई क्यूं नीं लूटली जावै।

हठीसिंह आप रो सोच तो जवरो है। पण ओ काम इत्तो सोरो कोनी बन्ना।

डूंगजी · जे दबदबो राखणो है तो आ जोखम तो उठाणी ही पडसी। पण अफसोस तो ई बात रो है'कै आ बात पैला चेतै आई क्यूं कोनी।

हठीसिंह · जागा जणै ई सवेरो, ठाकरां।

जवार · अबार बठै सूती गंगा बै रही है। रोज कोई न कोई रो जलमदिन मनाईजै अर छावनी मे छुट्टी रो-सो माहौल है। रात नै नाच-गाणां री महफिलां जमै।

डूंगजी · जवारसिंह ठीक कैवै है। बियै छावनी री म्हनै चोखी तरियां जाणकारी है। इयै काम नै आज ही निपटा लो।

मुकन्दसिह ·· फेरूं देर कांई बात री है ? म्हे तो कमर कस'र तैयार हुय'र ई आया हॉ।

डूंगजी : तो फेरूं आप सगळा लोग तैयार हो ?

(सगळा जणा सागै बोलै--म्हे सगळा जणां तैयार हॉ।)

अजमेरी : हुकम करो, हमलो कणै करणो है ?

डूंगजी : पैलां एक बात सुण लो। जिकां नै मौत रो डर है, बै

अवार ही पाछा जा सकै। धावो आधी रात नै एक बज्यां जूनी टेकरी सूं हुसी अर वापसी पडाव भी जूनी टेकरी पर ही हुसी। धावै रै बाद, जिकै नै जिको मार्ग सुरक्षित दीखै, वो बिनै ही निकळ जावै अर जूनी टेकरी माथै पौच जावै।

जवार : *(बीच में बोलै)* हॉ, एक बात याद राख्या कै आत्मसमर्पण सूं मौत आछी है। वचनभंग, मित्रद्रोह अर विश्वासघात सगळां सूं वडो अपराध है, अैरो पूरो ध्यान रैवै।

(सगळा खड़ा हुय'र एक सुर में बोले—जै अम्बे....)

डूंगजी : जै अम्बे............जय भवानी, आप सब लोग आप-आपरा घेड़ा सम्भाळो।

(सगळा अेकै सागै खम्मा हुकम)

(मंच माथै धीरै—धीरै अन्धारो हुवै, घोडां रै पगां री टापा, सुंणीजै अर अेक सामूहिक गीत सुंणीजै)

गीत : रात के राही थक मत जाना,
सुबह क़ी मंजिल दूर नहीं, दूर नहीं
थक मत जाना...........रात के राहीSSS
धरती के फैले आंगन में
पल—दो पल का रात का डेरा
जुल्म का सीना चीर के देखो
झॉक रहा है नया सबेरा
चढता सूरज मंजूर सही—२
ढलता सूरज मंजूर नहीं—मंजूर नहीं
थक मत जाना.. ....
रात के राहीSSS

मंच़ माथै धीरै-धीरै अन्धारो हुवै

दूजो दरसाव

(शेखावाटी बिग्रेड री छावनी। मेजर जोर्ज, कैप्टिन डिकसन अर कर्नल एल्वीस कुर्सियां माथै बैठा है।)

एल्वीस . मिस्टर जोर्ज, शेखवटी ब्रिगेड नै लूटीजणो अंगरेजी हुकूमत खातर लूठी चिंता रो कारण बण्यो है। इण सूं म्हारी क्रेडिट नै बडो धक्को पूग्यो है। थारै पर आरोप है कै तू झूठी अर गोडै–घड़ी रिपोर्ट हैडक्वार्टर नै भेज'र फकत थारी खाल बचावणी चाई। उण री छाणबीण करण सारू मनै भेज्यो गयो है।

मेजर नो सर, आरोप झूठो अर निराधार है। म्हारै कानी सूं सही तथ्या रै आधार पर त्यार करीज'र रिपोर्ट भेजीजी।

एल्वीस : थारी इन्क्वायरी रिपोर्ट मैं खुद पढी है, बा कोरी बकवास है। झूठ रो पुलिंदो है। इत्तै बडै हमलै रो हुवणो, हथियारां रो लूटीजणो, लुटेरां रो खोज नीं मंडणा–कियां मानणी में आवै। आभै सूं कोई फरिश्ता तो आया कोनी जिका लूंट'र हवा में गायब हुयग्या।

मेजर : खोज तो हा सर, पण हा खली घोडां अर ऊंटा रै पगां रा।

एल्वीस : इणरो मतलब हुयो कै हमलावर घणो चतर है। हमलो भीषण हुयो। यो अर वींरा साथी जम'र शस्त्रगार नै लूंट्यो। आ भी साफ है के ब्रिगेड कानी सूं किणी भांत री रोक–टोक नीं हुई। शे[illegible] लुक्योड़ा पड़[illegible]ग्या।

मेजर : म्हे सचेत हुवता उण[illegible] ...। पाछ[illegible]

एल्वीस : आ ही तो में [illegible]
दिन–रात शराब रै
कोई [illegible]कस कोनी। [illegible]

आ रिपोर्ट भी मिली है कै अड़ोस–पडोस रै इलाकै रा घणकरा सैनिक आपरै घरा में ई रैवै।

मेजर : ओ आरोप सरासर झूठ है। म्हारै खिलाफ दुसमणा री अठै कमी कोनी। हरेक आदमी नाजायज फायदो उठावणो चावै अर बो म्हारै सूं मिलणो पार पड कोनी सकै।

एल्वीस : मेजर, ऐ अरड–फबाऊ बातां ना कर। थारी गफलत रो इण सूं बडो सबूत और काई हुसी कै ब्रिगेड रा हथियार लूंटीजणै रै सागै ब्रिगेड रो निसाण ई ....

मेजर : *(बिचाळै ई बोले)* इण रै लारै कोई लूंठी साजिश है, सर !

एल्वीस : अधर-बम्ब में बातां करणी बंद करो मिस्टर जार्ज। थारी गफलत नै साजिश रो बागो ना पैरा.....। कैप्टन डिकसन, तूं इण बाबत काईं सोचै ?

कैप्टिन : सर, मामलो बिलकुल साफ है। ब्रिगेड लूटीजी है अर म्हारै पासी सूं किणी भांत रो सामनो कोनी हुयो। आ धोळै दिन री रोबरी ही। उण दिनां म्हैं छुट्टी माथै गयोड़ो हो। सूबेदार माधोसिंह सूं आ सगळी जाणकारी मिली कै उण दिन मेजर सा'ब रै जलमदिन री डिनर पार्टी रात रा घणी देर ताई चाली। हमलै री बेळा सगळा मदहोस हुयोडा पड़्या हा। जाग हुवण सूं पैलां–पैलां दुसमण आपरो काम सलटा'र राजी–खुशी बावडग्यो।

एल्वीस : मेजर, साल में कित्ती बिरियां तूं थारो जलमदिन मनावै ? च्यार महीनां पैली जद मैं कैजुअल विजिट पर आयो तद भी थारो जलमदिन हो अर मैं भी उण पार्टी में शरीक हुयो हो।

(थोड़ी ताळ री खामोसी)

कैप्टिन, इण साहसी कारनामै नै अंजाम देवणियो कुण हुय सकै है ?

कैप्टिन : शक री सूई कई लोगां पासी थमै, सर। इण कारण पक्को कीं कैवणो मुश्किल है। आ तो खरी बात है कै ओ कारनामो

दूजो दरसाव

(शेखावाटी बिग्रेड री छावनी। मेजर जोर्ज, कैप्टि डिकसन अर कर्नल एल्वीस कुर्सियां माथै बैठा है।)

एल्वीस : मिस्टर जोर्ज, शेखवटी ब्रिगेड नै लूटीजणो अंगरेज हुकूमत खातर लूंठी चिता रो कारण वण्यो है। इण म्हारी क्रेडिट नै बडो धक्को पूग्यो है। थारै पर आरो है कै तूं झूठी अर गोडै–घड़ी रिपोर्ट हैडक्वार्टर भेज'र फकत थारी खाल बचावणी चाई। उण छाणबीण करण सारू मनै भेज्यो गयो है।

मेजर : नो सर, आरोप झूठो अर निराधार है। म्हारै कानी सही तथ्या रै आधार पर त्यार करीज'र रिपोर्ट भेजीजी

एल्वीस : थारी इन्क्वायरी रिपोर्ट मैं खुद पढी है, बा कोरी बकवास है। झूठ रो पुलिंदो है। इत्तै बडै हमलै रो हुवणो, हथियारा रो लूटीजणो, लुटेरां रो खोज नीं मंडणा–कियां मानणी में आवै। आभै सूं कोई फरिश्ता तो आया कोनी जिका लूंट'र हवा मे गायब हुयग्या।

मेजर : खोज तो हा सर, पण हा खली घोड़ां अर ऊंटा रै पगां रा।

एल्वीस इणरो मतलब हुयो कै हमलावर घणो चतर है। हमलो भीषण हुयो। वो अर बींरा साथी जम'र शस्त्रगार नै लूंट्यो। आ भी साफ है के ब्रिगेड कानी सूं किणी भांत री रोक–टोक नीं हुई। थे डरता लुक्योडा पड्या रैया।

मेजर : म्हे सचेत हुवता उण सूं पैलां तो दुसमण पाछो घिरग्यो।

एल्वीस : आ ही तो मैं कैवणी चावूं। थारै पर आरोप है कै तू दिन–रात शराब रै नशै में चूंच रैवै। सैनिकां पर थारो कोई आंकस कोनी। अनुशासनहीनता री हदां लांघीजगी।

आ रिपोर्ट भी मिली है कै अडोस–पडोस रै इलाकै रा घणकरा सैनिक आपरै घरा में ई रैवै।

मेजर : ओ आरोप सरासर झूठ है। म्हारै खिलाफ दुसमणां री अठै कमी कोनी। हरेक आदमी नाजायज फायदो उठावणो चावै अर बो म्हारै सूं मिलणो पार पड कोनी सकै।

एल्वीस : मेजर, ऐ अरड–फबाऊ बातां ना कर। थारी गफलत रो इण सूं बडो सबूत और काई हुसी कै ब्रिगेड रा हथियार लूंटीजणै रै सागै ब्रिगेड रो निसाण ई....

मेजर : *(बिचाळै ई बोले)* इण रै लारै कोई लूठी साजिश है, सर !

एल्वीस : अधर-बम्ब में बातां करणी बंद करो मिस्टर जार्ज। थारी गफलत नै साजिश रो बागो ना पैरा.....। कैप्टन डिकसन, तूं इण बाबत काई सोचै ?

कैप्टिन : सर, मामलो बिलकुल साफ है। ब्रिगेड लूंटीजी है अर म्हांरै पासी सूं किणी भांत रो सामनो कोनी हुयो। आ धोळै दिन री रोबरी ही। उण दिना म्हैं छुट्टी माथै गयोड़ो हो। सूबेदार माधोसिंह सू आ सगळी जाणकारी मिली कै उण दिन मेजर सा'ब रै जलमदिन री डिनर पार्टी रात रा घणी देर ताई चाली। हमलै री वेळा सगळा मदहोस हुयोडा पड़्या हा। जाग हुवण सूं पैलां–पैलां दुसमण आपरो काम सलटा'र राजी–खुशी वावड़्यो।

एल्वीस : मेजर, साल में कित्ती बिरियां तूं थारो जलमदिन मनावै ? च्यार महीनां पैली जद मैं कैजुअल विजिट पर आयो तद भी थारो जलमदिन हो अर मैं भी उण पार्टी में शरीक हुयो हो।

(थोड़ी ताळ री खामोसी)

कैप्टिन, इण साहसी कारनामै नै अंजाम देवणियो कुण हुय सकै है ?

कैप्टिन : शक री सूई कई लोगां पासी थमै, सर। इण कारण पक्को कीं कैवणो मुश्किल है। आ तो खरी बात है कै ओ कारनामो

अंजाम देवणियो कोई विलक्षण सैनिक प्रतिभा रै सागै–सागै अप्रतिम शौर्य रो धणी है। शेर री माद में बड़'र मारा–कूटो करणो अर राजी–खुशी चल्यो जावणो चलतै आदमी रै बस री वात कोनी। अंग्रेजी हुकूमत खातर बडी चुनौती है। वेगी सू वेगी जे इण दुर्दम्य शक्ति रो दमन नीं करीज्यो तो आम लोगा रो भरोसा हुकूमत पर सूं उठ जावैला... .

मेजर . *(बिचाळै बोलै)* म्हारो शक ददरेवा रै ठाकुर सूरजमल पर है।

एल्वीस ददरेवा रो ठाकुर तो चूरू, हिसार अर सिरसा रै इलाकां मे उत्पात मचावै, अठै तक उण री पहुंच कोनी।

मेजर : तो फेर बीकानेर रो पेमो बावरी हो सकै। सुण्यो है कै बो च्यार–पांच हजार आदम्यां नै सागै लेय'र लूटपाट करै।

एल्वीस बींरो इलाको बीकानेर है। शेखवटी बींरी पहुंच सू अळगी है।

मेजर भरतपुर रै जाट राजा सूरजमल बावत थांरी काईं राय है ? आपणी सधि नै भी ठुकरा दी।

एल्वीस : सूरजमल सूं म्हे सीधी जंग छेड़ राखी है। धौलपुर अर आगरा मे बो म्हानै परेशान कर राख्या है, पण... ..

मेजर . *(बिचाळै बोलै)* फेर आपरी नजर मे कुण आदमी हुय सकै ?

एल्वीस : शेखावाटी इलाकै मे अबार एक नूवीं ताकत माथो उठायो है। बठोठ अर पाटोदा रै ठाकर डूंगरसिंह अरन जवारसिंह रै सागै कीं मीणा अर जाट भी चेत्योडा है। ओ काम बां ही लुटेरा रो है। बै खूंखार भी है अर हिमताळू भी।

मेजर : बां रै गिरोह मे नफरी कमती है। इत्ती बडी हिमाकत बै कोनी कर सकै।

एल्वीस : थारो सोच भोत पोचो है, मेजर। बै सगळा आफत रा सिरमौड है। हुवै–न–हुवै ओ काम उणी गिरोह रो है। गुप्तचरा री रिपोर्ट भी उणी पासी इसारो करै।

मेजर : जयपुर-जोधपुर रा राजा अर सीकर रा राव आपणा आछा दोस्त है। काई बै उणा पर काबू नीं राख सकै ?

एल्वीस : आं लुटेरां सूं तो ऐ राजा लोग भी डरै। बै आपसी कळह में उळझ्या रैवै। एक–दूजै सूं इसको करै। बारो म्हासूं संधि करणै रो मकसद फकत इत्तो–ई है कै म्हे बीच–बचाव कर'र उणा रा आपसी झगडा सलटा देवा अर उणां री सुरक्षा करा।

केप्टिन : *(बिचाळै बोलै)* म्हानै खुद रै बूतै ही आ सूं सलटणो पड़सी, सर ! पूरी ताकत सू आं नै दाबणा पडसी। आं रा हौसला इत्ता बुलन्द हुयग्या है कै जावती बगत ब्रिगेड रो झडो तक उतार'र लेयग्या। हुकूमत खातर इणसूं घणी निमधी बात और काई हुय सकै।

एल्वीस : थारो कैवणो ठीक हे, कैप्टिन। इण घटना पछै फौज रो मनोबल टूटग्यो। नसीराबाद छावनी रै खजानै नै लूंटीज्यां पछै तो फ़ौज और घणी पस्त–हिम्मत हुयगी। नूवैं सिरै सूं उणनै संगठित करणी पड़सी आमूलचूल फेर–बदळ ही एकलपो उपाव है।

(सैनिक आवे)

सैनिक . सर, श्रीमान कर्नल सदरलेंड पधारिया है।

एल्वीस : कर्नल सदरलेंड ? बिना किणी आगूंच समाचार है ?

(सगळा ऊभा हुय जावै अर दरवाजै कानी जावै। कर्नल सदरलैंड आवै।)

सब : गुड मोर्निग सर !

सदरलेंड : गुड मोर्निंग टू आल आफ यू।

एल्वीस : सर, म्हांरै कनै तो आपरै पधारणै रो कोई सनेसो ई कोनी हो।

(कैप्टिन डिकसन सेल्यूट मार–परो बारै जावै)

सदरलेंड · दौरा बिल्कुल सीक्रेट है। हुकूमत पर वडो–भारी दबाव है। अठै रै कांड री गूंज लंदन ताई पूगगी। मेजर जार्ज री छुट्टी करीजगी। उणरो मिलिट्री कैरियर खतम

करीजग्यो।

मिस्टर जोर्ज, थारी बैल्ट अर बैज सरेंडर करदै। हुकम है कै आगरा पूग'र गवर्नर नै रिपोर्ट कर।

(मेजर जोर्ज बैल्ट अर क्राउन उतार'र मेज पर धरै अर बारै निकळ जावै)

कर्नल एल्वीस ! थारै खातर हुकम है कै तनै शेखावटी ब्रिगेट रो कमांडिंग आफिसर थरपीजग्यो। डूंगरसिंह अर जवारसिंह रै खिलाफ अभियान रो बडेरचारो मनै भोळाईज्यो है। अभियान री सफलता ताई मैं थारै सागै ई रैवूला। सैनिक हैडक्वार्टर रो ओ हुकम संभाळ। आर्डर इणी वेळा सूं प्रभावी है।

एल्वीस : सर, मेजर जोर्ज नै दिरीजी सजा घणी करड़ी है।

सदरलेंड : तूं इणनै करड़ी कैवै। बो तो घणो सस्तो छूटग्यो। गनीमत है कै बो एक अंगरेज है अर गुलाम देश में नौकरी पर है। जै इंगलैंड में होवतो तो उणनै तोप सूं उडा दियो जावतो। अंगरेज कानून सूं ऊंचा है, ओ सनेसो बरकीरार राखण सारू ई उणनै हळकी-सी सजा दिरीजी है। ब्रिगेड रो लूंटीजणो कोई छोटी बात कोनी।

(एल्वीस काल-बेल बजावै, सैनिक आवै)

एल्वीस : कैप्टिन डिकसन नै बुला !

(सैनिक जावै)

सर, आजकाल सैकिंड-इन-कमाड रो चार्ज कैप्टिन डिकसन संभाळै है। कैप्टिन यंग अर हुशियार है।

(डिकसन आय'र सेल्यूट मारै)

एल्वीस : कैप्टिन डिकसन ! ओ मिलिट्री हैडक्वार्टर रो हुकम है। इणनै इंप्लीमेंट कराणै री जिम्मेवारी थारी है। सगळै कन्सर्निंग अफसरां नै सूचना भिजवा दै।

(डिकसन जावै, सैनिक आवै)

सैनिक : रामगढ़ के सेठजी आपसूं मिलणो चावै।

सदरलेड : *(बिचाळै ई)* कुण है ओ सेठ ?

एल्वीस : रसद सप्लाई करण वालो कंट्रेक्टर हुवणो चाइजै। बो आपणो बैंकर भी है।

सदरलेड : सेठ पोद्दार ?

सैनिक : जी, सर।

सदरलेंड : उणनै मांय भेजदै अर सुण, दूजो कोई मिनख मांय नीं आवणो चाइजै। मुलाकात रो टेम कोनी।

(सैनिक जावै अर सेठ आय'र मूंढै सू कपडो हटावै)

सेठ : कर्नल सा'ब नै सेठ पौद्दार रा नमस्कार ! आपसू तो अणचींती ही भेट हुयगी। मै तो मेजर जोर्ज सा'ब सूं मिलणनै आयो हो।

सदरलेंड : मेजर जोर्ज रो चार्ज अबे कर्नल एल्वीस ले लियो है।

एल्वीस : *(बिचाळै बोलै)* बैठो, सेठ सा'ब ! बेवक्त कियां आया ? फेर भेस बदळ'र आवणै री वजह ?

सेठ : इण राज में आपारी हिफाजत खुदनै ही राखणी पडै, सा'ब। राज तो अबे रैयो कोनी। चारू–पासी अराजकता री डूंडी पिटै। आप लोगां सूं संपर्क राखण वाळां नै मौत रै घाट उतार दिया जावै। जान री हिफाजत तो करू, माल गयो तो गयो।

सदरलेड : सेठजी, म्हानै इण बात रो घणो पिस्तावो है कै म्हे थांरी हिफाजत नीं कर सक्या। शेखावटी पर हमलो अर सागै ही थांरी रसद लूंटीजणी, दोनूं ही म्हारै खातर चुनौती बणग्या। अंदाजो है कै दोनूं ही कारनामां नै एक ही आदमी अंजाम दिया है।

सेठ : आपरो सोचणो ठीक है, सा'ब ! ओ काम डूंगजी–जवारजी रै दळ रो है।

सदरलेंड : बठोठ रै च्यांरूपासी तो म्हांरी फौज घेरो घाल राख्यो है। बठोठ पर पूरी निगराणी राखी जावै, फेरूं भी बारदातां रो सिलसिलो जारी है।

सेठ : थे बठोठ अर पाटोदा रै ठाकुरां नै जाणो कोनी, सां'ब।

बै घणा दिलेर अर चतर है। बठोठ रो गढ खाली पड़्यो है। बै आपरी गतिविधियां किणी गुपताऊ ठौड सूं चलावै।

सदरलेंड बै कठै लुकै है, सेठजी ? था कनै उणरी कोई जाणकारी है ?

सेठ बांरी मुखबिरी करणी तो मौत नै नूतणी है। म्है तो आप लोगों नै फकत आ ही गुहार करणनै आयो हूं कै जे बांनै बेगा ही काबू नीं करीज्या तो इण इलाकै में भयंकर उत्पात माचैला अर म्हा गरीब सेठां रो अठै रैवणो मुस्किल हुय जावैला।

सदरलेंड सेठजी, म्हे वेगो ही अमन–चैन कायम कर देसां।

सेठ आयै दिन सेठा अर अंगरेजां रा खजाना लूंटीजै अर बा रकम गरीबा मे बाटीजै। जनता बांरी जै–जैकार करै। बांरी शौर्य गाथावा गाईजै। राजपूतानै रै एक खूणै सू दूजै खूणै ताई घूम–घूम'र लोक गायक उणां नै बिडदावै। ब्रिगेड लूटीजणै री घटना बच्चै–वच्चै री जबान पर है। बा री वीरगाथावा सुण'र लोग रोमांचित तो हुवै, पण अगरेजां रै खिलाफ हथियार को उठावै नीं, आ ही गनीमत है। अठै रो आम–नागरिक डरपोक है।

सदरलेंड वैल मिस्टर पोद्दार ! जाणकारी देवण सारू धन्यवाद ! म्हे बांरो पुख्ता इंतजाम कर देसां।

सेठ · अच्छा सा'ब इजाजत चावूं।

सदरलेंड · वैल ! जद कोई काम हुसी, थानै इत्तला करा देसूं।

(सेठ बारै पासी जावै)

कर्नल एल्वीस, बठोठ रो घेरा उठायलो अर फौज नै एकै ठौड़ मोबिलाइज करलो। अलर्ट री पोजीशन मे रैवणो है।

·एल्वीस : हुकम मुजबा ही करीज सी !

सदरलेंड : म्है कालै दिनूगै री चार बजी डूगजी रै सासरै झडवास पासी जावूंला। म्हारै सागै आठ–दस हिमताळू सैनिक

भेज देई।

एल्वीस : सैनिकों री संख्या कम कोनी रैवे ?

सदरलेंड : मै कोई आमें–सामें री भिडंग करणनै कोनी जावू। किणी बीजै मकसद सूं जावूं। आमनै–सामने री भिडत में तो कैप्टिन शा अर मेजर फोरेस्टर जिसा रण–विशारद भी उण सूं पार को पा सक्या नीं। में दूजो ई रस्तो सोध्यो है। वीं नै घोखे सूं बंदी बाणावणो पड़सी।

एल्वीस : थे सावधान रैया। वो चीतै जेडो चुस्त अर चालबाज है।

सदरलेंड : में वेखवर कोनी। इण देश रै गद्दारां री एक परंपरा है। में उणी रो सहारो लियो है। पक्को मुखबिर अर बिचौळियो मिलग्यो।

एल्वीस : फेर भी सावचेती राखणी जरूरी है। भरोसै री इण देश में कमी है।

सदरलेंड : मैं सोच–समझ'र ई पग बधावूं। सफलता री आस में कदेई–कदेई जिंदगी में ऐडा खतरा ही उठावणा पडे। डूंगजी रै साळै भैरोसिंह सूं एक लाख नगदी अर दस हजार सालाना आमदनी री जागीरी पेटै सोदो तय हुयो है, वो उणनै सोयोड़ै नै बंदी बणवा देसी।

एल्वीस : बठै उण रा दूजा साथी भी तो हुवैला।

सदरलेंड : सासरै नै निरांत समझ'र वो एकलो ई बठै आपरै घावां रो इलाज करावै। किणी मुठभेड़ में स्यात उणरै गोळी लागी है।

एल्वीस : अव्यवस्था री इण वैमभरी हालत में म्हारै वास्तै काईं हुकम है ?

सदरलेंड : तूं फौज नै अलर्ट राखी। इण मिशन मे जे म्हारै ताबै नीं खाई तो मैं शेखावटी री ईट–सूं–ईट बजा देसूं। वर्बरता रै नागै नाच रो ऐड़ो तांडव मचावूंला कै शेखावटी री जनता सईकां ताई नीं भूलैली।

मंच पर धीरै-धीरै अंधेरो

तीजो दरसाव

(बठोठ रै गढ रो प्रांगण–चारूं ओर गुलाल उडरी है। जाजम माथै कई सरदार अर जवारसिंह बैठ्या है। दारू री मनवारां चाल री है। चंग बाज रिया है। गैरिया धमाल गा'रिया है अर अेक आदमी लुगाई रा कपडा पैर्योडो कमर मटका-मटका'र नाच रियो है।)

जवार धनजी अरोगो... पनजी आगै वाळो पेग खाली करो।

पनजी म्हारी फिकर ना करो ठाकरां, आगै मानजी नै परोसो।

जवार अरे बीरा, परोसणो तो सगळां नै है, पण आप पाछा पग क्यूं धरो हो ? आप रो नाव तो धाकड पीवण वाळां मे है।

मानजी · *(बीच में)* धाकड भी पछै किसा'क। दूर-दूर तांई रै गांवां मे नांव है आपरो। जिकै ठिकाणै मांय पौंच जावै है आपरी छाप छोडियां बिना को रैवैनीं। छोटो-मोटो राजवी तो दूर सूं ई हाथ जोडै पन्नेसिंहजी नै। जै कैई रो हियो खिसक जावै तो पछै दारू रो गोदाम ही सम्भाळणो पड़ै।

जवार : बठोठ रै गढ मे दारू री कमी कोनी ठाकरां। आप सगळा सरदार मिल'र जे स्नान करणा चावो तो ई दारू को खूटैनीं।

(डूंगजी री लुगाई रो अचानक बैठक मे आवणो अर सगळां रो चौकणो।)

काकीसा आप अर मरदानी बैठक में ? मान-मरयादा अर लोक-लाज रो कुंई तो ध्यान रखावता। आप रो· अठे पधारणो शोभा को देवैनीं। जे इसी ही कोई भीड आ पडी ही तो आप म्हनै मांय बुला लेवता।

ठकुराणी : ब्होत दिना तांई लोक-लाज री चादर ओढ'र रणवासै में बैठी री, पाणी सिर रै ऊपर सू निकळगयो जणै बारै आवणो पड़ियो। मरयादा री कोई सींव हुवै। जद था सगळा ही मरयादा अर पत छोड दी तो म्हासूं पत अर मरयादा री बात करणी बेमानी है। थारा काकोसा आगरै री जेळ में पड़िया सड़ रिया है, घर मे सापो पड़्योडो है अर थांनै रंगरळियां सूझ री है।

जवार : होळी रा दिन है काकीसा, इयै दिनां अै सब बात्या हुवै ही है।

ठकुराणी : म्हारै तो काळजै में होळी जग री है। बठोठ रो गढ जार-जार रो रियो है। अर थे लोग होळी मना रिया हो ? हूँ और अवै घणा दिनां तांई हाथ पर हाथ धरियां बैठी को रै सकूंनीं। म्हनै दीखै है, मरदां रो काम म्हां औरतां नै ई करणो पडसी।

जवार : काकीसा म्हे अवार तांई जीवतां बैठ्या हॉ। आप धीरज रखाओ अर म्हारै माथै भरोसो राखो।

ठकुराणी : धीरज री सीमा अब टूटगी बन्ना, चूड़ियां पैरलो अर घर में बैठ्या रो, तलवार म्हनै देवो, हूँ जंग रोपसूं अर म्हारै धणी नै फिरंग्यां री कैद सूं छुडासू।

शक्तिसिंह : *(बीच में)* मामीसा, म्हां लोगा रै जीवतां आ नौबत को आवैनीं, आप' मांय पधारो।

ठकुराणी : जै आप लोगां नै'ई आपरै करतब्य रो भाण हुतो तो म्हनै बारै आवण री नौबत को आवती नीं।

जवार : म्हांरी विवसता है काकीसा। जैपुर, जोधपुर अर बीकानेर रै राजावां पर म्हानै पकडण रो दबाव बधग्यो है। परिस्थितियां एकदम बदळगी है। नई तो काकोसा नै छोडावण मे इत्ती देरी को लागती नीं।

ठकुराणी : परिस्थितिया री दुहाई कायर दिया करै है बन्ना, डर रै मारै कुणां तको। मूंढा लुकावो हो।

जवार : काकीसा....सींव मत लांघो। जवार ना तो कदेई कायर

तीजो दरसाव

(बठोठ रै गढ रो प्रांगण—चारूं ओर गुलाल उडरी है। जाजम माथै कई सरदार अर जवारसिंह बैठ्या है। दारू री मनवारां चाल री है। चंग वाज रिया है। गैरिया धमाल गा'रिया है अर अेक आदमी लुगाई रा कपड़ा पैर्योडो कमर मटका-मटका'र नाच रियो है।)

जवार : धनजी अरोगो... ..पनजी आगै वाळो पेग खाली करो।

पनजी म्हारी फिकर ना करो ठाकरां, आगै मानजी नै परोसो।

जवार अरे वीरा, परोसणो तो सगळां नै है, पण आप पाछा पग क्यूं धरो हो ? आप रो नांव तो धाकड पीवण वाळां मे है।

मानजी . *(बीच में)* धाकड भी पछे किसा'क। दूर-दूर तांई रै गांवां में नांव है आपरो। जिकै ठिकाणै मांय पौंच जावै है आपरी छाप छोडियां बिना को रैवैनीं। छोटो-मोटो राजवी तो दूर सूं ई हाथ जोडै पन्नेसिहजी नै। जै कैई रो हियो खिसक जावै तो पछै दारू रो गोदाम ही सम्भाळणो पडै।

जवार . बठोठ रै गढ मे दारू री कमी कोनी ठाकरां। आप सगळा सरदार मिल'र जे स्नान करणा चावो तो ई दारू को खूटैनीं।

(डूंगजी री लुगाई रो अचानक बैठक में आवणो अर सगळां रो चौंकणो।)

काकीसा आप अर मरदानी बैठक में ? मान-मरयादा अर लोक-लाज रो कुंई तो ध्यान रखावता। आप रो अठे पधारणो शोभा को देवैनीं। जे इसी ही कोई भीड आ पडी ही तो आप म्हनै मांय बुला लेवता।

ठकुराणी : व्होत दिना तांई लोक-लाज री चादर ओढ'र रणवासै में बैठी री, पाणी सिर रै ऊपर सूं निकळगयो जणै बारै आवणो पड़ियो। मरयादा री कोई सींव हुवै। जद था सगळा ही मरयादा अर पत छोड दी तो म्हांसू पत अर मरयादा री वात करणी वेमानी है। थारा काकोसा आगरै री जेळ में पडिया सड रिया है, घर मे सापो पड्योड़ो है अर थांनै रंगरळिया सूझ री है।

जवार : होळी रा दिन है काकीसा, इयै दिनां अै सब वात्यां हुवै ही है।

ठकुराणी : म्हारै तो काळजै में होळी जग री है। बठोठ रो गढ जार-जार रो रियो है। अर थे लोग होळी मना रिया हो ? हूँ और अबै घणा दिनां ताई हाथ पर हाथ धरियां बैठी को रै सकूंनीं। म्हनै दीखै है, मरदां रो काम म्हां औरतां नै ई करणो पड़सी।

जवार : काकीसा म्हे अबार तांई जीवतां बैठ्या हॉ। आप धीरज रखाओ अर म्हारै माथै भरोसो राखो।

ठकुराणी : धीरज री सीमा अब टूटगी बन्ना, चूड़ियां पैरलो अर घर में बैठ्या रो, तलवार म्हनै देवो, हूँ जंग रोपसूं अर म्हारै धणी नै फिरंग्यां री कैद सूं छुडासूं।

शक्तिसिंह : *(बीच मे)* मामीसा, म्हां लोगां रै जीवतां आ नौबत को आवैनीं, आप मांय पधारो।

ठकुराणी : जै आप लोगां नै ई आपरै करतब्य रो भाण हुंतो तो म्हनै बारै आवण री नौवत को आवती नी।

जवार : म्हारी विवसता है काकीसा। जैपुर, जोधपुर अर बीकानेर रै राजावां पर म्हांनै पकडण रो दबाव बधग्यो है। परिस्थितियां एकदम बदळगी है। नई तो काकोसा नै छोडावण में इत्ती देरी को लागती नी।

ठकुराणी : परिस्थितियां री दुहाई कायर दिया करै है बन्ना, डर रै मारै कुणां तको। मूंढा लुकावो हो।

जवार : काकीसा ...सींव मत लांघो। जवार ना तो कदैई कायर

तीजो दरसाव

(बठोठ रै गढ़ रो प्रांगण—चारूं ओर गुलाल उडरी है। जाजम माथै कई सरदार अर जवारसिंह बैठ्या है। दारू री मनवारां चाल री है। चंग बाज रिया है। गैरिया धमाल गा'रिया है अर अेक आदमी लुगाई रा कपड़ा पैर्योड़ो कमर मटका-मटका'र नाच रियो है।)

जवार : धनजी अरोगो... ..पनजी आगै वाळो पेग खाली करो।

पनजी म्हारी फिकर ना करो ठाकरा, आगै मानजी नै परोसो।

जवार : अरे बीरा, परोसणो तो सगळां नै है, पण आप पाछा पग क्यूं धरो हो ? आप रो नांव तो धाकड पीवण वाळां में है।

मानजी *(बीच में)* धाकड भी पछै किसा'क। दूर-दूर ताई रै गांवां मे नाव है आपरो। जिकै ठिकाणै माय पौच जावै है आपरी छाप छोडियां बिना को रैवैनीं। छोटो-मोटो राजवी तो दूर सूं ई हाथ जोडै पन्नेसिहजी नै। जै कैई रो हियो खिसक जावै तो पछै दारू रो गोदाम ही सम्भाळणो पडै।

जवार : बठोठ रै गढ में दारू री कमी कोनी ठाकरां। आप सगळा सरदार मिल'र जे स्नान करणा चावो तो ई दारू को खूटैनीं।

(डूंगजी री लुगाई रो अचानक बैठक में आवणो अर सगळां रो चौकणों।)

काकीसा आप अर मरदानी बैठक में ? मान-मरयादा अर लोक-लाज रो कुंई तो ध्यान रखावता। आप रो अठे पधारणो शोभा को देवैनीं। जे इसी ही कोई भीड आ पडी ही तो आप म्हनै मांय बुला लेवता।

ठकुराणी : ब्होत दिना तांई लोक-लाज री चादर ओढ'र रणवासै में बैठी री, पाणी सिर रै ऊपर सूं निकळगयो जणै बारै आवणो पडियो। मरयादा री कोई सींव हुवै। जद था सगळा ही मरयादा अर पत छोड दी तो म्हांसूं पत अर मरयादा री बात करणी बेमानी है। थारा काकोसा आगरै री जेळ मे पडिया सड़ रिया है, घर में सापो पड्योडो है अर थानै रगरळियां सूझ री है।

जवार : होळी रा दिन है काकीसा, इयै दिनां अै सब बात्या हुवै ही है।

ठकुराणी : म्हारै तो काळजै में होळी जग री है। बठोठ रो गढ जार-जार रो रियो है। अर थे लोग होळी मना रिया हो ? हूँ और अबै घणा दिनां ताई हाथ पर हाथ धरियां बैठी को रै सकूंनीं। म्हनै दीखै है, मरदा रो काम म्हा औरता नै ई करणो पडसी।

जवार : काकीसा म्हे अबार तांई जीवतां बैठ्या हॉ। आप धीरज रखाओ अर म्हारै माथै भरोसो राखो।

ठकुराणी : धीरज री सीमा अब टूटगी बन्ना, चूड़ियां पैरलो अर घर मे बैठ्या रो, तलवार म्हनै देवो, हूँ जंग रोपसूं अर म्हारै धणी नै फिरंग्या री कैद सूं छुड़ासूं।

शक्तिसिंह : *(बीच मे)* मामीसा, म्हां लोगां रै जीवता आ नौबत को आवैनीं, आप मांय पधारो।

ठकुराणी : जै आप लोगां नै'ई आपरै करतब्य रो भाण हुंतो तो म्हनै बारै आवण री नौबत को आवती नीं।

जवार : म्हांरी विवसता है काकीसा। जैपुर, जोधपुर अर बीकानेर रै राजावां पर म्हांनै पकडण रो दबाव बधग्यो है। परिस्थितियां एकदम बदळगी है। नई तो काकोसा नै छोडावण में इत्ती देरी को लागती नीं।

ठकुराणी : परिस्थितियां री दुहाई कायर दिया करै है बन्ना, डर रै मारै कुणां तको। मूंढा लुकावो हो।

जवार : काकीसा...सींव मत लांघो। जवार ना तो कदैई कायर

हो अर ना कायर है। वक्त री बलिहारी है, काळ माड़ो आयग्यो।

ठकुराणी : म्हनैं ना तो काळ रो डर हे अर ना कोई मौकै री तलाश है। छत्री रै घर मे जलमी हूँ अर छत्री सूं'ई फेरा खाया हूँ। हर कीमत पर बदळो लेसू। चावे म्हारो सो-कांई लुट जावै। मूंछां पर झूठी ताव देवण वाळा बडबोल्या, आं पुरसां रै हाथां मे अबै हूँ म्हारो भाग को छोडूंनीं। रजपूती रणवासां में डूबगी, रजपूती है कठै ?

जवार · काकीसा... आप म्हारी मा समान हो। हूँ आपरो व्होत सम्मान करू, बार-बार अै कटु शब्द बोल'र म्हनै जलील मत करो। आप मांय पधारो। हूँ कोई रस्तो ढूंढसूं।

ठकुराणी . मांय घणा'ई दिन बैठी री। अबै पूरो उथळो कर'र ही मांय जासूं। जै कोई निर्णय लेवणो है तो म्हारै समूढै ले लो।

जवार निर्णय लेवण में थोडो समय लागसी। सगळां सूं पैली तो आगै री स्थिति जाणणी पडसी, बैरै पछै'ई आगै री कोई रणनीति तै हुसी।

ठकुराणी . आप लोगां रै मांय सू आगरै जावण रो बीडो कुण उठावै है ?

जवार : धन्नैसिहजी ? मानजी ? पन्नैसिंहजी ? हट्टीसिंह ?

(सगळा एक-दूसरै कानी देखै अर सरणाटो)

(लोटियो बीच में उठै)

लोटियो : ठकुराणी सा, आगरै हूँ जासूं। रजपूताणी रा तो को चूंघ्यानी पण रजपूत हूँ, लडणो जाणूं हूँ। आप मांय पधारो। धणी-धोरी तो कोई रियो कोनी, म्हे रस्तो भटकग्या। दो महीना री मोहलत बगसाई जावै। या तो भाई डूंगजी बठोठ रै गढ मे हुसी या लोटियै जाट रै मरण री खबर बठोठ पौचसी।

ठकुराणी : मिनखां जिसी भली बात कैई बीरा। जन्म-जन्मान्तर तक थारी रिणी रैसूं।

(ठकुराणी मांय जावै)

लोटियो : क्यूं भाई करणा, कांई इरादो है ?

मीणा : पूछणो कांई है। सागै ई जीवणै-मरणै रा कौल-करार कर्योडा है। इत्ती मोटी चाकरी फेरूं मिलसी कठै ? खून रै रिश्ता सूं कंई उंचा रिश्ता राखां। करजो चुकावण रो चोखो मौको है। भाईचारै अर बराबरी रो जिसो वातावरण अठै है, बिसो दूजी जगै कठै पडियो है ?

जवार : मान भाई, बीड़ो उठावणो सौरो है, पण काम दौरो घणो है। आगरै रो किलो अभेद दुर्ग है।

लोटियो : *(बीच मे)* मिनखां रै वास्तै कोई काम दौरो-सौरो कोनी हुवै, अगर मिनख ठाणलै। आदमी रै संकल्प में बस दृढता हुवणी चाईजै। आधै-अधूरै मन सूं कोई काम चालै कोनी, बन्ना।

जवार : वा भाई चौधरी, थारो तो आज नयो ही रूप देख्यो है। आज तांई हूँ तनै अेक मारण-कूटण वाळै आदमी रै रूप में ही जाणतो हो, पण आज़ पत्तो लाग्यो'क तूं एक सूझ-बूझ अर उचा विचार राखण वाळो आदमी है।

चौधरी : आ सब धोरै वाळा नाथजी री किरपा है। म्हारा गुरु है। बाणों ही आशीर्वाद है। धोरै हाजरी देर पछै आगरै कानी रवाना होसूं।

जवार : आराम सूं जाया, पण आगरै में पूरी सावधानी राख्या। शत्रु सजग भी है अर सबल भी है। आगै री कांई रूप-रेखा है ? कियां कांई करणो है ?

चौधरी : अैमें लम्बो-चोडो कांई सोचणो है। हूँ अर करणो आज ही आगरै रवाना हुय जासां। बठै पौच'र बठैरी तास-बास देखसां।

जवार : आगरै रो किलो म्हारो देखोडो है। आकास छुवती परकोटै री दीवारां अर आगरो अंग्रेजां रो अभेद दुर्ग है। बैनै लांघणो व्होत दौरो काम है। कई बरस पैलां म्हैं भुवासा सूं मिलण नै आगरा गयो हो। फूंफोसा अंग्रेजां

री पलटन में सूबेदार हा अर बियै किलै में ही रैंवता। बो किलो कांई है, फौज री छावनी है। आम आदमी नै किलै माय जावण री मनाई है। बठै री चौकसी अर सतर्कता इत्ती घणी है'कै परिन्दो ही पांख को मार सकै नीं। फेरूं अंग्रेज ब्होत बड़ी चतुर कौम है।

लोटियो : हूँ बाणी रग-रग पैचाणूं हूँ ठाकरां, बानै भेदणो है तो छल अर कपट रो सहारो लेवणो ही पड़सी। आपांरी संस्कृत में एक कैवत है "शठे शाठ्यम समाचरेत्" बदमास रै सागै बदमासी रो बरताव करणो नीतिसम्मत है। छल-कपट रो सहारो लिया सू ही काम सफल हो सकै।

जवार . बो तो ठीक है, पण थारी भावी योजनावा कांई है ?

मीणो . योजनावां कोई लम्बी-चौडी कोनी, आपणै देश मे साधुआं रो घणो सम्मान है। बांरै प्रति आधी श्रद्धा-भक्ती है। साधुवां नै भगवान रो रूप मानै, बारौ अपमान आपरो अपमान समझै। साधु रो भेस अपणै-आपमें सुरक्षा रो ब्होत बड़ो कवच है। हूँ अर चौधरी साधु रो भेस बणा'र आगरै मे प्रवेश करसां।

जवार . योजना तो सागोपांग है पण आपारै अर अग्रेजा रै सोच में जमीं-आसमां रो अन्तर है। आपणी अै धारणावा अर मान्यतावा अंग्रेजा री धारणा सू भिन्न है। वै रूढिवादी परम्परा अर अन्धविश्वास में विश्वास को राखैनीं। बै अनुशासन नै ही धर्म मानै अर ओई बांरै उन्नति करण रो राज है।

लोटिया : म्हानै सीधो अंग्रेजां सूं कोई लेवणो-देवणो कोनी। म्हानै तो बठै रै किलेदार अर पहरेदारां सूं सम्पर्क साध'र बानैं विश्वास में लेवणा है। पहरेदारां रै सागै-सागै रस्तै चालतै राहगीरां रो विश्वास प्राप्त करसां। अै काम मे म्हा लोगां नै डेढ-दो महीना लाग जासी। ऐसूं आगै रो सगळो काम सरल हो जासी।

करणो : म्हां सामनै तो सगळां सूं बडी चुनौती है किलै रै सामनै धूणी लगावणी अर ओ काम दौरो है। किलेदार म्हां

लोगां ने कोई हालत मे धूणी को लगावण दै नी।

लोटियो : बै कांई बांरो बाप लगावण देसी। पार नई पडती दीखसी तो धक्का-मुक्की कर भीड भेळी कर लेसा अर धक्कै सू धूंणी जगा लेसां। एक बार जगी अर जगी, पछै साधु रै कोप अर श्राप सूं डर्योडो कोई मिनख धूणी हटावण री हिम्मत को जुटा सकैनीं।

फन्दसिंह : *(बीच में)* योजना तो सांतरी है, चौधरी। थारै अर करणै रो कोई जोड कोनी।

मीणो : जे पहरेदार कोई जोर-जबरदस्ती करसी तो रस्तै चालता आदमी करणदै कोनी, साधु रै नांव पर मरण-मारण नै त्यार हुजासी। धर्म रै मामलै में अंग्रेज सरकार भी फूंक-फूंक'र पग राखै।

लोटियो : ठाकरा म्हारै कनै तो एक ही तर्क है। रमता जोगी हां, सारी धरती म्हारै पट्टै लिखोड़ी है, जठे धूणो रोपां बोई म्हारो घर है। यार री मौज है। आज अठै–काल बठै।

मीणो : अलख जगावणी है, बम-बम भोले, अलख निरंजन, भले सूं भेटा, कुमाणस सू टाळा, पलक में खलक–अघोर भैरव विराजोड़ा है। प्रलय हुवण वाळी है, देवी भख मागै है, जै थाणो भलो चाइजै है तो शरणे आ जावो वरना मौत खा जासी।

(सगळा अैकै सागै जोर सूं हंसै)

जवार : वा भाई करणा, खूब समो बांध्यो। सांचेली धूणी रोपली। मौत रै नांव सूं आछा-आछां री रूह कांपै। हॉ चौधरी, आ बताओ कै म्हानै आगरे कद तांई पौचणो है ?

लोटियो : सम्पर्क राखला रिया, नई तो दो महीनां बाद कदैई आ जाया। म्हे मोड बणोडा किलै रै आगे धूणी तापता मिलसां।

जवार : इतै हूँ दो महीना में छिड़या-बिछड्या साथ्यां नै भेळा कर लेसूं।

मीणा : आप जद भी आवो, रणधावै नै सागै लावणो मत भूल्या। जा'र मनावण सूं वो मान जासी हॉ उदेवीर पूरबियै नै

जरूर-जरूर सागै लाया। बैनैं साथै लावण में दोलडो फायदो है, एक तो बो बठैरा सगळा रीति-रिवाजां रो जाणकार है अर सागै ही एक निरालो लडतियो है। लडै जणै पग रोप'र लड़ै। म्हारो मन कैवै है कै आ भिडन्त तो हुया रैसी।

जवार म्हारी भी योजना समझ लो, हूँ बरात सजा'र बीन रै भेस मे आगरै में प्रवेश करसू।

लोटियो हूँ अर करणो किलै रै सामनै धूणी तापता मिल जासां, आगै जिको भी करणो है बो बठै आगरै मे ही तै कर लेसां। तो ठीक, म्हे आज ही आगरै रवाना हुवा।

(सगळा अेकै सागै बोलै)

जै जोगमाया री।

मंच माथै अन्धारो

चौथो दरसाव

(आगरै रै किले रो एक भुर्ज, जठै डूंगजी कैद है। दरवाजे माथै हथोडै री आवाज अर कुछ टूटण रो भान हुवै।)

डूंगजी : आधी रात नै ताळो तोड़'र चोरां दांई घुसण आळो तूं कुण है ?

लोटियो : आपरो एक अदनो सेवक लोटियो जाट अर आपरो चहेतो करणियो मीणो हाजिर हुया है ठाकरां।

(लोटियो मोमबत्ती जगावै)

डूंगजी : प्राणां रो मोह त्याग'र जान जोखिम मे घाल'र भीड पड्यां साथ देवण वाळा थां भाइडां रो स्वागत है।

लोटियो : *(छीणी-हथोड़ी सूं हथकडी-वेड़्यां काटतां)* कैरी मा दूध पायो है'कै आजादी रै दीवाने वनराज नै पींजरे में राख लेवै। म्हे तो ब्होत शर्मिन्दा हां'कै आपनै इत्तै लम्बे बगत तांई अै काळ-कोटड़ी मे रैवणो पडियो, माफी बगसाई जावै।

डूंगजी : चौधरी, म्हारा बन्धन तो बीं दिन ही कटग्या हा जिकै दिन तूं पहरेदारां रै सागै साधु रै भेस में म्हनै आशीर्वाद देवण नै आयो। हूँ इयै घडी रो ब्होत बेसबरी सूं इन्तजार कर रियो हो, जवारसिंह कठै है ?

करणा : भुर्ज रै बारलै पासै पहरै पर खड़्या है।

(उणी टेम जवारसिंह रो हडबड़ी सूं मांय आवणो।)

जवार : जल्दी कर चौधरी किलै में जाग हुयगी है। किलै में चारूंकानी अफरा-तफरी मचगी है, जिकै निसरणी रै सहारे आपां किलै में घुस्या हा, बा निरसणी हटाईजगी

है। आपांरा खाली दस-बीस आदमी ही ऊपर चढ सक्या है।

डूगजी · घबरावण री कोई जरूरत कोनी जवारसिंह, हूँ अबै आजाद हूँ। म्हारी भुजावां में दस हजार हाथ्यां रो बळ है। चौधरी, म्हारी तलवार लावणी तो को भूल्यो नीं ?

लोटियो एक नई, दो-दो तलवारां ले'र आयो हूँ ठाकरां, भीड पड्यां काम देसी।

(लोटियो डूगजी रै हाथ में तलवार री मूठ पकड़ावै)

डूंगजी . चौधरी, इया कर, सामनै पांच कदम माथै एक बैरक है, बैमें देश री आजादी रा कई दीवाना बन्दी है। म्हारो बांसू इसारां-इसारां में ही वायदो हुयोडो है'कै हूँ छूटसू जद थे सागै ही छूटसो—बैरक रो ताळो तोड'र बांनै आजाद कर दै।

जवार : समय ब्होत थोडो है, काकोसा, पाछो कैद हुवण रो डर है। आपा पैली निकळ जावां, पछै देखसां।

डूंगजी · वायदै सू मुकरणो म्है सीख्यो कोनी जवारसिंह, पैली बै छूटसी पछै म्है छूटसू। करणा ! बैरकां रा ताळा तोड़। जवारसिंह जद तांई तूं सगळां साथ्यां नै एक ही जागां भेळा करलै।

जवार : सगळा एकजुट हुवोडा दीवार री आंड में खड्या है, खाली हुकम रो इन्तजार है। निसरणी सू निकळण रो रस्तो बन्द हुयग्यो है। स्थिति गम्भीर है, काकोसा।

(छीणी–हथोड़ी री आवाज)

डूंगजी भयंकर सूं भयंकर स्थिति सूं निपटण में हूँ सक्षम हूँ। अबै बारै निकळण रो जवारसिंह एक ही रस्तो बच्यो है। किलै रो मुख्य प्रवेश द्वार तोड'र बारै निकळणो पड़सी।

करणो *(धीमी आवाज में)* ठाकरां, बैरक रा ताळा तोड'र सगळां साथ्यां नै सागै कर लिया है। सगळा मरण-मारण नै त्यार है।

डूंगजी : चौधरी, आगै हुयजा अर किलै रै मुख्य प्रवेश द्वार रो

रस्तो दिखा।

लोटियो : *(बीच में)* फसील रै किनारै-किनारै चालता रैवो।

डूंगजी : जवारसिंह, कतार बणालो अर चौधरी अर म्हारै लारै-लारै चालता रैवो अर इयै बात रो खास ध्यान राख्या'कै किलै रै मुख्यद्वार तक पौच्या सूं पैली कई पर वार को करणो नीं। अन्धेरै रो लाभ उठावणो है। किलै मे आपा-धापी मच्योडी है। इयै अन्धेरै मे दुसमण अर दोस्त रो भेद को करीजै नीं। चुपचाप आगै बधणो है।

लोटियो : पूछण वाळै नै एक ही बात कैवणी है कै किलै रै मैदान में पौंचो। आ सुण'र सगळा किलै रै मैदान कानी भाजसी अर आपणै रस्तै मे कोई अड़चन को आवैनीं।

जवार : काकोसा, आप बीच में आ जावो।

डूंगजी : म्हारी चिन्ता छोडो, आप-आपरी रक्षा रो खुद ध्यान राखो। सगळां नै आप-आपरी ठोड़ माथै लडणो पडसी। दुर्ग रो मुख्यद्वार रण-प्रांगण हुसी–सगळां नै सावचेत रैवणो है। आर-पार री भिडन्त है।

उदैवीर : आप चिन्ता मत करो ठाकुर साब। भाडे रै लडतिया मे कितो'क दम है। सिणगारू घोडा है, लडणो बारै बस में कोनी।

डूंगजी : कुण उदैवीर ?

उदैवीर : हां ठाकुर साब। ताबेदार उदैवीरसिंह अरज करै।

शक्तिसिह : *(बीच में)* घणी उडीक सूं दो-दो हाथ करण रो मौको मिल्यो है।

डूंगजी : कुण बोले, शक्तिसिंह ?

शक्तिसिंह : हॉं मामोसा ! आप रो लाडणो भाणेज।

डूंगजी : भाभू किंयां है ?

शक्तिसिंह : तगडा है, कै'र भेज्यो है, डूंगजी नै साथै लेर आए, खाली हाथ आयो तो घर में जगां को है नीं।

डूंगजी : *(बीच में)* धन्य है इसी मा'वां जिका इसा सपूत जिण्या। आभो ऑ रै ताण ही खड्यो है। जवारसिंह ! और सागै

कुण-कुण है ?

जवार : सागै रणधावो है, गोपजी, मालजी अर मालजी रो भाई खड़गसिंह है, सगळा ही सैनिक भेस में है।

डूंगजी : आछी सूझ-बूझ रो काम करियो। पिछाण रो संकट टळग्यो।

जवार योजना वणावण सूं पैली ही सगळी सम्भावनावा पर विचार कर लियो हो काकोसा, डर तो होई'कै किणी भी तरै री परिस्थिति आ सकै। वैकल्पिक योजना वणाली ही'कै कोई अणहुणी विपत आवण पर मुकन्दसिह आपरै साथ्यां नै ले'र किले पर बारै सूं दबाव बधासी।

लोटियो लो मंजिल तांई पौंचग्या हॉ ठाकरां। सामनै ही किलै रो वद दरवाजो है।

डूंगजी : रुको अर सगळा साथी अठै ई थम जाओ। देखो, सामनै कई वे-तरतीब खड्या सैनिक है, आपांनै फैल'र हमलो करणो पडसी। पूरी-री-पूरी ताकत झोकणी पडसी। डावै पसवाड़ै हूँ अर उदैवीर रैसां, बाकी सगळां नै जीवणो मोर्चो सम्भालणो है। अर झपट्टै सूं हमलो करणो है। सगळा समझग्या...हमलो बोल दो।

भारत माता री जय..........हर–हर महादेव.....

(मारो-मारो री आवाज़ां)

डूगजी : किलै रो दरवाजो हथोडा री चोटा सूं को टूटैनी चौधरी। आगै वध'र आगळ खोल......

(हाय मरा....होय मरा.....बाप रे री आवाजां)

आवाज : आदमी नहीं, आफत के परकाले है, भागो-भागो अपनी-अपनी जान बचाओ....

आवाजां : भागो....भागो, जान बचाओ, अरे ओ आदमियां रो नहीं, जिन्ना री जमात रो हमलो है।

डूगजी : करणा, चौधरी री मदद कर.... उदैवीर पलटो दे झपट'र जीवणै मोर्चे नै दाब में लै।

(मारो......मारो)

उदैवीर : मोर्चो म्हारै पूरै दबाव में है आप सावचेती राख्या।

(चरमरा'र फाटक रो खुलणो, बारै सूं आवाज नेड़ै आंवती सुणीजै)

हर-हर महादेव. .

जय अम्बे. ....

भारत माता री जय.....

फिरंगियां भारत छोडो.. ...देश खाली करो

(रोवणै-चिरळावणै रै सागै-सागै घोड़ां की टापा।)

(मंच माथै धीरै-धीरै रोशनी हुवै, एक अंग्रेज दो-तीन सिपाइयां रै सागै)

फिरंगी : आखिर मानवी शेर पींजरै सूं निकळ भाग्यो।

(मंच माथै धीरै-धीरै अन्धारो)

सुपनाळू

(डॉ. एल.पी. टैसीटोरी रै जीवन माथै)

पहलो दरसाव

(इटली रो उदीने शहर। एल.पी. टैसीटोरी रो घर। टोरी आपरै घर में विचार-मगन बैठो है। दूर, जगळ सूं कदैई मोरियै री 'मेहा आव' तो कदैई पपैयै री 'पीऊ-पीऊ' सुणीजै। कदैई बादळां रै गरजणै रो तो कदैई झरणां री कल-कल रो सगीत सुणीजै। इणी बिचाळै टैसीटोरी री मा रामानो रोजा कमरै मै बड़ै अर टोरी नै सोयोडो समझती पाछी चली जावै। दूर सूं नेड़ी आवती कदैई 'मूमल' लोकगीत री धुन तो कदैई 'सुपनै' री धुन अर कदैई पाणी रै जहाज री सीटी सुणीजै। टैसीटोरी री मा चाय लियोड़ी भळै आवै)

मा : लुई ! अरे ओ लुई !

लुई : *(चिमकतो)* कुण. ...मा-सा ?

मा : तू बैठो है कै सोवै ? दिन रा सुपना देखणै री थारी बाण गई कोनी ?

लुई : अबार नींद री बेळा कठै है मा ! मै तो म्हारै हियै मे उपज्योडै सुपना में रम्योडो हो। दूर कठैई बाळू रा धोरा अर... ...

मा : *(बिचाळै ई बोलै)* बठै सूं आवण वाळै मनमोवणै संगीत में रम्योडो हो, क्यू, ओ ई तो कैवणो चावै ?

लुई *(सावळसर बैठतो)* थारी वात सोळै आना साची है मा ! पण तनै इणरो ठा किण भांत लाग्यो।

मा : बेटो सुपना लेवै अर मा नै बेरो नीं पडै, आ ई कदैई हुवै !

सैलंग इणी बात रो जिकरो तो तूं करतो रैवै। फेर आ क्यूं भूलै कै मै थारी जामण हूं। म्हारी कूख सू जलम दे'र तनै पाळ्यो-पोख्यो है। बेटे रै मन री बात मा सूं छानै रैवै ?

लुई . म्हारी हेताळू मा, धन्य है तू !

मा : फकत मै ही क्यूं, धरती री सगळी मावां धन्य हुया करै। आद सगत लुगाई जात सिरजणहार री सगळां सू सांतरी रचना हुया करै। सगळी सिस्टी उणी सूं ऊपनै।

लुई : मातृशक्ति नै म्हारा घणा-घणा निवण ।

मा · *(चाय री प्याली पकड़ावती)* थारै बंदरगाह पूगणै रो बगत हुयग्यो अर अजै तूं सूटकेस-ई सावळ को जचाई नीं ? काई बात है ? भारत जावण रो मतो फोर दियो का कोई नूवीं अबखाई हुयगी ?

लुई : कोई नूवीं अबखाई कोनी, मा। ओ अचूभो जरूर हुवै कै थे म्हारै भारत जावणै री बात इत्ते सोरै मन सूं कैवो जदकै आज ताई थानै म्हारो भारत जावणो अणखावणो लागतो रैयो है। मनै जावण सूं बरजता रैया अर अबै जको ताकीद कर रैया हो ?

मा : हूणीहार नै कुण टाळ सकै, लुई ? विधाता रै लेख मे मेख लगावण री सामरथ किण मे हुवै ? मैं तो खुद नै समझा ली। मा अर हुवणवाळी घर-धिराणी रा आंसू भी जिकै रो मतो नीं फोर सक्या, उणनै भारत जावण सूं कुण रोक सकै ?

(लुई री बहन एन्टोनिअटा उर्फ मारिया आवै)

मारिया : मैं रोकूंली। मै म्हारै भाई नै भारत नीं जावण देवूंली। मा रा आंसू पूंछ्या जा सकै। हुवणवाळी लुगाई नै प्रेम री सौगन दे'र ठगाई-पोटाई जा सकै पण एक भाई आपरी छोटी बहन नै रोवती-बिलखती छोड'र कठैई नीं जाय सकै।

लुई : तूं ठीक कैवे, मारिया ! बो कांयरो भाई जिको आपरी नानी गुड्डी-सी बहन नै रोवती-बिलखती छोड'र कठैई

चल्यो जावै । मै तो म्हारी लाडेसर बहन नै भी म्हारै सागै भारत ले जासूं।

मारिया · भाई । मारिया इत्ती भोळी कोनी जिकी थारै पोटावणै मे आ जावै।

लुई क्यू ? बठै तनै कोई डर लखावै ?

मारिया · बठै तूं तो किताबा सूं माथाफोडी करतो रैसी अर मै बैठी 'बोर' हुवती रैसूं।

लुई · उण महान देश में बोरियत रो काई काम मारिया ? वेदां री ऋचावां सू गूंजती मनभावणी घाट्यां, आभै रै अखण्ड मौन सू बतळ करतै हिमालै रा बरफीला पहाड, कलकल बैवती नदयां, गाछ-गछीलै मैदानां अर जंगळा में गूंजतो पखेरुआं रो चहचहाट, मोरियां री 'मेह-आव' री मतवाळी कूक किण रो मन नीं बिलमाय लेवै ?

मारिया : सुपना तो घणा-ई सांतरा है, भाई ! नन्दन वन री-सी कल्पना है।

लुई : मारिया, आ कल्पना कोनी, साच है। म्हारै अतीन्द्रिय ज्ञान सूं मैं बठै घूमूं। बठै रा रूंख म्हां सू बंतळ करै, प्रकृति रा भांत-भंतीला भेद वतावै। धरती पर साचाणी स्वर्ग है बठै, जठै री सरसरांवती हवा में तिरतो संगीत म्हारो मन मोवतो रैवै।

मारिया . आ गूंग इणीज भांत बधती रैई तो लागै कै एक दिन पागल नीं हुय जावो, म्हारा भाई-सा ।

लुई : थारो इण भांत डरणो अकारथ है, मारिया। म्हारै जीवण रै साच नै फकत भोग्यो जा सकै, बताईज नीं सकै।

मारिया : थांरी आ उळझवाडवाळी भेदू बातां म्हारै पल्लै नीं पडै। धरती पर रैवो तो धरती री वात करो।

लुई : अदीठ सूं आवणवाळी घोड़ै री टापां री गूंज रै सागै फूठरापै री मूरत अर जवानी री मदमस्त रागळ्यां उगेरती लुगाया किण रै मन नै नीं बिलमाय सकै, मारिया ?

मारिया . आपणे अठै इटली मे भी तो प्रकृति रो अखूट फूठरापो

खिंड्यो पड़्यो है। आल्प्स रा डूंगर, हरयै रूंखां री दूर-दूर ताई लीलोतरी, कलकल वैवती नद्यां, मनमोवणा बाग-बगीचा, सांचै में ढळी-मुजब फूठरी लुगायां—काई कोनी अठै, भाई-सा ?

लुई : मारिया, म्हारै मन रा भाव समझणै री कोसिस कर। प्रकृति रो फूठरापो अर लुगाया मनै बठै बुलावणै री ताकड को करै नीं। राजस्थान री धरती मनै हेला पाडै। प्राकृत अर डिंगल रा महाकाव्य मनै खाचै।

मारिया : सुपनां में उडणो छोडो अर आंख्यां खोलो। धरती पर पग टिका'र ऊभा हुवो।

लुई : मै तो धरती पर ऊभूं अर बैठूं। मारिया, तूं म्हारै हियै री हूक नै को समझ सकै नीं। बाळू रेत रै धोरा में मिनख-बायरै सूनवाड रो मौन म्हारै हियै में ऊंडो पूग'र मनै चेतावै। बगत रै बायरै में उडतो थको अणकूंत साहित रो खजानो मनै झाला देवै, जिकै नै फिरोळतां थकां अतीत री भूलीजती गाथावा सूं दर्शन री खिंडळ-मिडळ हुयोड़ी सांकळ नै सांधी जा सकै। विधाता स्यात् मनै इणीज खातर धरती पर भेज्यो हुवै। मारिया, मनै भारत जावणो पड़सी। मैं भारत जरूर जावूंला। वाल्मीकि अर तुलसी री उण धरती नै म्हारा निवण।

(लुई री मा आंसू पूछती माय चली जावै)

मारिया : उण तपतै धोरां में थारी काई गत हुसी ? तपतै तावडै अर खंखभरी आंध्यां रै अलावा बठै पड्यो काई है, भाई-सा ? खुद री जलमभोम रै खातर भी तो थांरो कोई फरज है, कोई ऋण है—उणनै क्यूं भूलो ?

लुई : ओ फरज निभावणै अर मांगत चुकावणै सारू ही तो मैं भारत जावूं। लडाकू लोग दुनिया नै खै-नास रै किनारै पूगाय दी अर मानखो पीडीजै। इटली रो शांतिदूत बण'र 'वसुधैव कुटुम्बकम्' रो सनेसो ले'र मै भारत जावूं। भारत म्हारै सुपना रो देश है। कोई अदीठ शक्ति अर अणजाण हाथ मनै खाच रैया है।

मारिया इण शुभ काम सारू म्हारी मंगळकामनावां थारै सागै है, भाई-सा ! थां जेहड़ै पक्की धारणावाळै नै कुण डिगा सकै। पण पाछो अठै आवण रो तो मतो है'क ?

लुई जरूर आवूंला, मारिया। तूं तो घणी समझदार हुयगी। मा रो ध्यान राखी। उणनै एकलपी हुवण रो लखाव ना हुवण देई।

(टैसीटोरी री मा आवै)

मा . मै एकली रैवूंली ई कियां ? सेलंग थारी ओळ्यूं म्हारै सागै रैसी। वा म्हारो लारो छोडै कोनी अर मैं एकलपी रैवूं कोनी।

मारिया : मै अर मा तो जियां-तियां काळजै पर भाठो राख लेसां, म्हारै आंसुवां नै थाम लेसां पण डोरा भाभी रै वां आंसुवां रा काईं हाल हुसी जिका रात-दिन थांरी याद में बहसी ? उण नै किण रै भरोसै छोड'र जावो हो ?

लुई . तूं है, मा है, भाई अटीलियो है। फेर डोरा कोई नानकी तो है कोनी। समझदार है, पढी-लिखी है। मैं घर-वसावण नै तो भारत जा कोनी रैयो हूं, फकत शोध रो काम करणनै जावूं।

(डोरा आवै, मारिया अर मा मांय जावै परा)

आव डोरा ! विदा करणनै आई है ?

डोरा हां ! इयां ई समझलै। मै तो थारै पगां री बेडी को बणूं नीं, पण डैडी नै किण भांत समझाऊ ? बै तो थारै भरोसै बैठा है। बै तो फकत आ-ई सोचै कै उणां रै पछै मैं एकली अरबा री जायदाद कियां सभाळूंला, जिकी री एकलपी मैं ई वारिस हूं। बै डरै कै धन रै लालच सूं कई नूवां रिस्तेदार वणसी, कई हमदर्द जलमसी। बै घणो जोर देवै कै भारत जावण सूं पैलां थारो-म्हारो ब्याव हुय जावै।

लुई : थारै पापा रो सोचणो सोळै आना ठीक है। हरेक बाप आपरी बेटी नै सोरी-सुखी देखणी चावै। मै भी तनै घणी चावूं, पण डर लागै कै ब्याव कर्‌यां पछै कठैई म्हारै

लक्ष्य सूं भटक नीं जावूं। म्हारा सुपना हकीकत नीं बण सकैला। म्हारो भरोसो राख, डोरा। थारै सिवाय कोई दूजी म्हारी घर-धिराणी नीं बण सकैली। तू जे नट जासी तो ऊमर-भर कुंवारो ही रैसू। थारो नेह-प्रेम म्हारै जीवण री अणमोल पूजी है। मै जठै भी जावूलो, थारी ओळ्यूं म्हारै सागै छाया ज्यू ही लागी रैसी।

डोरा : म्है अबै घणै दिनां इण भोळावै अर डिगू-पिचूं हालत मे नीं रैय सकूं। लुई, म्हारी भी सुणलै। म्है ब्याव रचा लियो है।

(लुई चिमकै)

लुई . ब्याव रचा लियो ? किण सूं ? कुण है बो भागवान जिकै री घर-धिराणी तूं बणसी ?

डोरा : काई करसी आ जाण'र। बो थारै जैहडो निर्मोही कोनी।

लुई : मनै समझणै री कोसिस कर, डोरा। ऐहडो ओळभो मनै ना दै। मै जे किणी सूं प्रेम करूं तो फकत थारै सूं।

डोरा : बातां बणावणी तो कोई थारै सूं सीख सकै। झूठै काम रो पोमावै। प्रेम-प्यार री दुहाई तो देवै पण न तो प्रेम-प्यार जाणै अर ना करै। कोरो ठूंठ है।

लुई : तूं मनै एकदम ठीक ओळख्यो। मै रसियो कोनी, फरज समझणियो हूं। मै तनै पक्को भरोसो दिराऊं कै जे ब्याव करसूं तो फकत थारै सू करसूं, नींतर ऊमर-भर कुंवारो ई रैसूं। म्हारो पतियारो कर।

डोरा : पतियारो ही तो आपणै जीवन री नींव है। इणी रै आसरै तो आपां एक-दूजै सूं बंध्योड़ा हां। लुई, म्हारो भी भरोसो राख कै एक भारतीय लुगाई री ज्यूं जुगां-जुगां ताई तनै अडीकूंली। प्रेम रो ओ पवित्र नातो टूटै कोनी।

लुई . म्हारी म्यारी डोरा !

(दोनूं एक-दूजे रै नेड़ा आवै)

मंच माथै अन्धारो

दूजो दरसाव

(रॉयल एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता रो दफ्तर। रामधन कमरै री सफाई करै)

रामधन : कितरी फूठरी जिंदगी है। किताबा नै झाडूं-फूकूं तो मैं अर पढै पढेसरी। वाह रे मुरलीमनोहर ! थारी लीलावां माय आ लीला भी गजब है–किणी नै राजा, किणी नै रंक......*(घड़ी मे दस टणका बाजै। थोड़ो थम'र)* सगळां सूं पैलां आवो अर पछै जावो ! पढणिया पढेसरया री निगै राखणो पाखती मे। पढीजतां-पढीजतां-ई किताबां जावै परी खूसै में या पेज चल्या जावै जेबां में। चोरी करै बै लोग अर पइसा कटै म्हारै जैहड़ै रईस रा। *(रामधन सफाई में लाग्यो रैवै अर फोन री घंटी बाजै। रिसीवर उठावै)* रामधन बोलूं-सा ! आप कुण सरदार बोलो ? काई नांव बतायो थां, लल्लूराम ? अरे सा'ब ओ नांव तो म्हारो हुवणो चाहीजै हो। हां-सा ! टामसन सा'ब अजे ताई पधारया कोनी।

(भट्टाचार्य आवै)

भट्टाचार्य : किण रो फोन हो ?

रामधन : कोई मेमसा'ब बोलै ही।

भट्टाचार्य : मेमसा'ब, कुण ही ? काई कैवै ही ?

रामधन पूछै ही कै बाजार मे बैगण रा काई भाव है ?

भट्टाचार्य . काई भाव बताया तूं ?

रामधन . मै तो कैय दियो कै आ सब्जी मंडी कोनी, पोथीखानो है। सुणीज्यो–सॉरी, रॉंग नम्बर।

भट्टाचार्य . बेवकूफ ! *(अठी–उठी देखतो)* हालताई सफाई क्यूं कोनी हुई ?

रामधन . सफाई तो कद री ही हुयगी। अबै तो दूसर सफाई करू।

भट्टाचार्य : दूसर ! क्यूं ?

रामधन : आंधी रो चैळको आयग्यो।

भट्टाचार्य : आंधी रो चैळको अर कोलकाता में ? कूड बोलै, साळा ! तूं घणो बोलण लागग्यो।

रामधन : बोलणो बंद कस्या लोग नीमतल्लै नीं पूगाय देसी ? राम नांव सत है !

भट्टाचार्य : नॉनसेस ! साळो मारवाड़ी कठै सूं बंगाल मे आय मस्यो !

(भट्टाचार्य मांय जावै, रामधन ऐकलो बोलै)

रामधन . बंगाली हुय'र मारवाडी सूं खसै। लागै कै अजै किणी मारवाडी सूं भेटा हुया कोनी।

(बारै सूं एल.पी. टैसीटोरी बड़ै)

लुई : मै मांय आ सकूं ?

रामधन · पधारो-सा ! *(कीं वेळा ध्यान सू देख'र)* आपरो स्वागत है-सा !

लुई : नमस्ते !

रामधन : आप-सा नै भी नमस्ते ! अगरेज हुय'र ई आप म्हारी भाषा इतरी फूठरी तरां सूं बोल लेवो ! स्यात! आप डॉ. लुई टैसीटोरी सा'ब हो !

लुई : ठीक पिछाण्यो। माइसेल्फ लुइजी पिओ टैसीटोरी।

रामधन : आपरै पधारणै सूं पैला ही दफ्तर में सूचना आयगी ही, बिराजो। टामसन सा'ब आवणवाळा है।

लुई · *(बैठता थकां)* थारो नांव काई ?

रामधन : बंदै नै रामधन कैया करै।

लुई : सातरो नांव है, रामधन ! अरथाव हुयो राम रो धन। राम रो नांव अठै रै लोगां रै हियै में रम्योड़ो। राम भारत रो आदर्श है।

(रामधन भाग'र पाणी लावै)

रामधन : पाणी हाजर है...........अरोगो-सा।

लुई : *(गिलास पकडतां)* अरोगो ! मारवाडी में खावणे अर पीवणै रै दोनू कामां खातर अरोगो कैईजै ?

रामधन : हा-सा।

लुई : तू राजपूतानै रो रैवासी है काई, रामधन ?

रामधन : हां-सा। मैं राजपूताना रै वीकानेर शहर रो रैवासी हूं।

लुई : मै राजपूतानै में शोधकार्य करणनै इटली सूं भारत आयो हूं। मनै प्राकृत, अपभ्रंश अर डिगळ री भी जाणकारी है।

रामधन : राजपूतानो घणो रंग-रगीलो है सा'व। आपरो जीव-सोरो हुय जासी। वठै वीरता अर सिणगार रो गजब रो मेळ है। रुतां भी सोवणी हुवै। कैवत है–
सीयाळै खाटू भलो, ऊनाळै अजमेर।
नागाणो नित रो भलो, सावण वीकानेर।।

लुई : मानखै री कंवळी सूं कंवळी मनगत रो दरसाव वठै मिलै। और कोई खास वात ?

रामधन : वठै आपनै मिलसी अलगोजै री तान, लोकगीतां री गूंजती सुर-लहरां..........ढोला ढोल-मजीरा बाजै रे, अस्सी कळी रो घाघरो निजारा मारै रै..........गायां नै चरावती गोरबंद गूंथ्यो......अर मिलसी राजराणी मीरां रा क्रिसन-कन्हैयै रै प्रेम-रस में रस्या-बस्या भजन.. .रूठोड़ा राणाजी म्हारो काई करसी.........अर सागै ही मिलसी बांकडली मूंछांवाळा मिनख। सुन्दरता री खाण अर सहज-सरल लुगायां। देसा–परदेसां में आपरै विणज री धाक जमावणिया धोळे-बुराक गाभां में सज्योड़ा सेठ अर सहित रा हेताळू गुणीजन। वठै काई कोनी ? संसार रो सगळो फूठरापो वठै खिंड्योडो लाधै।

लुई : रामधन ! तूं तो घणो समझवान अर भण्यो-गुण्यो लखावै। भळै अठै आ ना-कुछ नौकरी क्यूं करै ?

रामधन : दिनां रो फेर। कदैई-कदैई मिनख नै जीवन मे नाटक-ई

करणो पड़ जावै। कहावत भी है–'अणपढिया घोडा चढै, पढिया मांगै भीख।'

लुई : राजपूतानै री और कोई खासियत ?

रामधन : इटली सूं तो आप पधारिया पाणी रै जहाज माथै, पण बठै आपनै मिलसी रेगिस्तानी जहाज ऊंट। गावां मे जठै-कठै ई जावणो-आवणो पडै तो करणी ही पडै ऊंट री सवारी।

लुई : ऊंट री सवारी तो आराम री हुसी ?

रामधन : आराम री पछै क्यूं पूछणी ! टाक्यां पड़ जावै अर हळदी रा चोपा लगावणा पडै। नूवैं चढार री तो आ-ई हालत हुवै।

लुई : फेर तो घणी दुखदायी सवारी हुवै ऊंट री, क्यूं रामधन ?

रामधन : ना, सा ! बख पड्यां घणी-ई मजैदार सवारी है अर इण रै अलावा दूजो कोई रस्तो भी तो कोनी। गांव-गांव घूमणो हुवै तो इण रो ही आसरो लेवणो पडै। ओ ही मिल सकै। ऊंट री एक खास बात आ हुवै कै बो सात-आठ दिन ताई बिना चारै-पाणी रै रैवतो थको भी सवारी रै काम आय सकै। ऊंट राजपूतानै रै जनजीवण री ओळख करावै।

(टामसन आवै अर कीं ताळ ध्यान सूं देखै)

टामसन : मिस्टर एल.पी. टैसीटोरी ?

लुई : *(कुर्सी सूं उठतो थको)* आपरो अंदाजो एकदम ठीक है।

टामसन : आप बिराजो। म्हारो नांव टामसन है। डॉ. ग्रियर्सन रै कागद सूं आपरो परिचय मिलग्यो हो। भारत री धरती पर आप जैहड़ै विद्वान रो स्वागत !

लुई : धन्यवाद !

टामसन : आपरै पधारणै सूं पैली मुख्य कार्यालय सूं एशियाटिक सोसायटी रै बार्डिक हिस्टोरिकल सर्वे ऑफ राजपूताना रै सुपरिटेंडेट पद माथै आपरै नियुक्ति पत्र री नकल इण कार्यालय नै मिलगी ही। अठै नौ बरसां सूं चारणी अर

इतिहासू सहित री खोज रो काम चालै। सगळी जरूरी सामग्री अठै हाजर है। आपरी आगली योजना काई है ?

लुई : अबार तो मै आ सामग्री फिरोळणी चावूंला। आगै सारू आ है कै मै खुद राजपूताना जायनै उठै रै जनजीवन नै नेडै सू देखणो-जाणणो चावूंला, जिकै सूं नूवीं बातां अर तथ्या री ठोस जाणकारी मिल सकै। काम पर म्हारै हाजिर हुवणै री जाणकारी आप मुख्य कार्यालय नै भेज दिरावो अर राजपूताना जावणै री मूजरी भी किरपा करनै मंगवाय दो।

टामसन : इण बाबत कागद-पत्र आवण-जावण मे दो-तीन महीना लाग जासी अर मंजूरी आय ही जावै, आं भी पुख्ता कोनी कैय सकां।

लुई : बगत लाबो है पण इण रै परबारो कोई उपाव भी कोनी। मै बेगो ही राजपूताना जावणो चावूं। मंजूरी आवण ताई मै इणी दफ्तर रै पोथीखानै मे अध्ययन करणो चावूंला।

टामसन . क्यूं नई। पोथीखानै में आप कित्ती बगत चावो ?

लुई : पोथीखानै रो बगत काई है ?

टामसन : दिनूगै री दस बजी सूं रात री आठ बजी ताई।

लुई . मैं पूरै बगत पोथीखानै में ही रैवणो चावूला।

टामसन · जीमा-जूठो ?

लुई : उण री आप फिकर मत करो। जद म्हारै सामै जूनी पोथ्या हुवै तो भूख भाग जावै। बा म्हारै नेड़ै बावड़ै ही कोनी।

(दोनूं हंसै, भट्टाचार्य आवै)

टामसन : भट्टाचार्य ! डॉ. लुई सूं मिलो। आप है डॉ. एल.पी. टैसीटोरी। इटली सूं पधारया है। आप फ्लोरेंस विश्वविद्यालय सूं वाल्मीकि री रामायण अर तुलसीकृत रामचरितमानस पर शोध करता थकां फकत चोईस वरस री उमर में डाक्टरेट री उपाधि हासिल करी है। डॉ. लुई चावै कै वै पोथीखानै मे जकी भी भारतीय

भाषावां री पोथ्यां है,'बॉ रो अध्ययन करै। ऐ चावै जिकी पोथ्यां आप आ नै दिरावता रैवो अर जित्ती भी बगत ऐ अठै बेठणो चावै, पोथीखानो खुलो राखो। इण परबारी जिकी भी पोथ्यां ऐ सागै ले जावणी चावै, बै आ नै देवता रैवो। पोथ्या री गिणत अर बगत बाबत किणी भांत री पाबन्दी आं पर लागू नीं रैवैला।

भट्टाचाय : म्हारै कानी सूं आं री सेवा-चाकरी मे कोई कसर को रैवै नीं।

लुई : इण सुभीतै सारू धन्यवाद !

टामसन : धन्यवाद किण बात रो मिस्टर लुई ? ओ तो म्हांरो काम है, फरज है।

लुई . मिस्टर टामसन ! आप भारत में कित्तै बगत सूं हो ?

टामसन : लारलै सात बरसां सूं मैं भारत में हूं। सजा देवण रै मिस मनै भारत भेजीज्यो। शराब पी'र लन्दन री सडकां पर गोधम करणो म्हारो नितूको रो काम बणग्यो। भारत में आयां पछै अठै री कल्चर रो म्हारे माथै रंग चढग्यो अर हिन्दुस्तानी लड़की सूं ब्याव कर'र मैं पूरो भारतीय बणग्यो।

लुई : आपरी बोली-चाली सूं ई आप पूरा हिन्दुस्तानी लागण लागग्या।

टामसन : मैं तो भारत में आय'र पूरो हिन्दुस्तानी बणग्यो पण अठै रा लोग अजै भी म्हासूं डरै अर आतंकित रैवै।

लुई : शासक अर शासित रो आंतरो तो है ही। अठै रो जनमानस थोड़ो काचो है।

टामसन : चालो, जीमा-जूठै रो बगत हुयग्यो। बंगलै चालां। आज आप म्हारा पावणा हो।

(सगळा उठै)

मंच माथै अन्धारो

तीजो दरसाव

(शिवगज रो जैन उपासरो, जैनाचार्य विजयधर्मसूरि अर मुनिश्री इन्द्रविजय बैठा है)

इन्द्रविजय : गुरुदेव ! डॉ लुई टैसीटोरी रै आवण रो बगत हुयग्यो।

आचार्य : इण इटालियन विद्वान रो म्हारै पर सातरो रग चढ्योडो है अर उण सूं मिलणै री लगन लागगी। जर्मन विद्वान डॉ हर्मन जैकोबि रै मारफत उण सूं म्हारी चिट्ठी-पत्री हुई। उण रै मगावणै सूं मैं प्राकृत उपदेशिका, उपदेशमाला, पुण्याश्रम कथाकोष आद ग्रथ पढणनै भेज्या। आ मांय सूं कई-एक रो इटालियन मांय उल्थो करतां बो आपरी टीका रै सागै इंडियन एंटीक्वेरी रै संपादक मिस्टर रिचार्ड टेम्पल नै छापण सारू भेज्या अर बै छप भी गया।

इन्द्रविजय : आ लूंठै ग्रंथां रो इण विद्वान रै जीवन पर असर तो जरूर ही हुयो हुसी, गुरुदेव !

आचार्य : उण रै कागदां सूं तो ओ ई लखावै।

इन्द्रविजय : गुरुदेव ! विचारां रै सागै इण जवान रै व्यवहार अर आचरण पर भी असर जरूर सैंठो हुयो हुसी।

आचार्य : आं पोथ्यां सूं डॉक्टर लुई नै जैन धर्म रै विज्ञानू अर कल्याणकारी सरूप री जाणकारी हुयां असर ऐहडो हुयो कै उण शराब अर मांस रा त्याग कर दिया। अबै बो खालिस शाकाहारी बणग्यो।

इन्द्रविजय : गुरुदेव ! धर्म री आ ही तो महिमा हुवै। डॉक्टर लुई स्यात् थांरी प्रेरणा सूं है।

आचार्य : ऐहडो दावो तो कोनी र विजय एक अध्यापक रै पद

लिखी अर इणी बिचाळै ब्रितानी सरकार कानी सू उणनै भारत में नियुक्ति मिलगी।

(डॉ. एल.पी. टैसीटोरी आवै। डॉ. लुई झुकतां आचार्यश्री नै निवण करै)

धर्मलाभ ! इण मरुभोम में आपरो स्वागत !

लुई : इणनै मरुभोम ना कैवो, आचार्यश्री ! आ वीरभोम है। अठै वीर मिनखां री खेती हुवै। आ वीरां अर वीरागनावां री धरती है। इण रो कण-कण उणां रै खून सू रंगीज्योड़ो है। मैं इण धरती नै निवण करूं।

आचार्य : थानै अठै पूगण में किणी भांत रा फोडा तो को पड्या नीं'क, डॉ. लुई ?

लुई : आपरै दरसणां री लगन सूं इण दिस तो मैं सोच ही कोनी सक्यो। आपरै प्रताप अर आसीस सूं सब मंगळकारी है, गुरुदेव !

आचार्य : थारो काम कैड़ो-काई चालै है ?

लुई : अबार तो मैं जोधपुर नै म्हारो कमठाण बणायो है, पण अठै मदद री कमी लखावै। बेगी ही मनै दूसरी जागां ठावी करणी हुसी। सोचूं कै बीकानेर चल्यो जाऊं, गुरुदेव !

आचार्य : तूं ठंडै मुलक रो रैवासी है, बठै री आबोहवा में रैय लेसी ? धूड़भरी आंध्यां, खीरा बरसातो तावड़ो, अगन-झळा ज्यूं गरमी रै सागै ई सियाळै में डील नै सतबायरो-सो कर देवणवाळी ठारी थारै सूं सहन हुय जासी ?

लुई : म्हारै जीवन मे सियाळै-ऊनाळै रो अबै कोई अरथाव को रैयो नीं, आचार्यश्री। द्रौपदी रै स्वयंवर में मछली री आंख नै छोड अर्जुन नै कीं कोनी दीखतो तिण मुजब मनै भी अठै री कोई अबखाई को लखावै नीं।

आचार्य : ऐहड़ा हिमताळू लोग ही आपरो चींत्योड़ो काम सुफळ कर सकै। थारी तपस्या अर त्याग फळीभूत हुवै ! जैनाचार्यां री आसीस थनै मिलै !

तीजो दरसाव

(शिवगंज रो जैन उपासरो, जैनाचार्य विजयधर्मसूरि अर मुनिश्री इन्द्रविजय बैठा है)

इन्द्रविजय : गुरुदेव ! डॉ. लुई टैसीटोरी रै आवण रो बगत हुयग्यो।

आचार्य : इण इटालियन विद्वान रो म्हारै पर सांतरो रंग चढ्योड़ो है अर उण सूं मिलणै री लगन लागगी। जर्मन विद्वान डॉ. हर्मन जैकोवि रै मारफत उण सूं म्हारी चिट्ठी-पत्री हुई। उण रै मंगावणै सूं मैं प्राकृत उपदेशिका, उपदेशमाला, पुण्याश्रम कथाकोष आद ग्रंथ पढणनै भेज्या। आं मांय सूं कई-एक रो इटालियन माय उल्थो करतां बो आपरी टीका रै सागै इंडियन एंटीक्वेरी रै सपादक मिस्टर रिचार्ड टेम्पल नै छापण सारू भेज्या अर बै छप भी गया।

इन्द्रविजय : आ लूठै ग्रंथां रो इण विद्वान रै जीवन पर असर तो जरूर ही हुयो हुसी, गुरुदेव !

आचार्य : उण रै कागदां सूं तो ओ ई लखावै।

इन्द्रविजय : गुरुदेव ! विचारां रै सागै इण जवान रै व्यवहार अर आचरण पर भी असर जरूर सैठो हुयो हुसी।

आचार्य : आं पोथ्यां सूं डॉक्टर लुई नै जैन धर्म रै विज्ञानू अर कल्याणकारी सरूप री जाणकारी हुयां असर ऐहडो हुयो कै उण शराब अर मांस रा त्याग कर दिया। अबै बो खालिस शाकाहारी बणग्यो।

इन्द्रविजय : गुरुदेव ! धर्म री आ ही तो महिमा हुवै। डॉक्टर लुई स्यात् थांरी प्रेरणा सूं भारत आया है।

आचार्य : ऐहड़ो दावो तो कोनी करूं पण यशोविजय पाठशाला में एक अध्यापक रै पद पर उणने राखण री बात जरूर

लिखी अर इणी बिचाळै ब्रितानी सरकार कानी सूं उणनै भारत में नियुक्ति मिलगी।

(डॉ. एल पी टैसीटोरी आवै। डॉ लुई झुकतां आचार्यश्री नै निवण करै)

धर्मलाभ। इण मरुभोम में आपरो स्वागत !

लुई : इणनै मरुभोम ना कैवो, आचार्यश्री। आ वीरभोम है। अठै वीर मिनखा री खेती हुवै। आ वीरा अर वीरागनावा री धरती है। इण रो कण-कण उणा रै खून सू रंगीज्योडो है। मैं इण धरती नै निवण करूं।

आचार्य : थानै अठै पूगण में किणी भात रा फोडा तो को पड्या नीं'क, डॉ. लुई ?

लुई : आपरै दरसणां री लगन सूं इण दिस तो मैं सोच ही कोनी सक्यो। आपरै प्रताप अर आसीस सू सब मगळकारी है, गुरुदेव !

आचार्य · थारो काम कैडो-काई चालै है ?

लुई : अवार तो मैं जोधपुर नै म्हारो कमठाण बणायो है, पण अठै मदद री कमी लखावै। बेगी ही मनै दूसरी जागां ठावी करणी हुसी। सोचूं कै बीकानेर चल्यो जाऊं, गुरुदेव !

आचार्य : तूं ठंडै मुलक रो रैवासी है, बठै री आबोहवा मे रैय लेसी ? धूड़भरी आंध्यां, खीरा बरसातो तावडो, अगन-झळा ज्यूं गरमी रै सागै ई सियाळै में डील नै सतबायरो-सो कर देवणवाळी ठारी थारै सूं सहन हुय जासी ?

लुई : म्हारै जीवन में सियाळै-ऊनाळै रो अबै कोई अरथाव को रैयो नीं, आचार्यश्री। द्रौपदी रै स्वयंवर में मछली री आंख नै छोड अर्जुन नै कीं कोनी दीखतो तिण मुजब मनै भी अठै री कोई अबखाई को लखावै नीं।

आचार्य : ऐहड़ा हिमताळू लोग ही आपरो चींत्योडो काम सुफळ कर सकै। थारी तपस्या अर त्याग फळीभूत हुवै ! जैनाचार्या री आसीस थनै मिलै !

लुई : जैन धर्म जित्ती करडी तपस्या अर व्रत है, उणां री बरोबरी मे म्हारी आ तपस्या तो ना-कुछ है आचार्यश्री ! आपरी आसीस चाहीजै।

आचार्य : म्हारी आसीस तो सदा थारै सागै है। तप सूं आतमा ऊजळै, सकळप पक्का हुवै। थारी लगन, दृढता अर कर्तव्य खातर निष्ठा रै पाण ही तो तनै मनचींत्यै काम सारू मदद मिलती ही रैसी।

लुई आपरी आसीस ही म्हारो सगळा सू लूठो सहारो है, गुरुदेव।

आचार्य : जोधपुर, बीकानेर परबारा रणकपुर, रानी, आबू, अजमेर, उदयपुर, सादडी, पाली अर फळोदी जावणो भी ना भूली। ऐ सगळी ठौडा राजस्थानी संस्कृति री आतमा जैहड़ी है।

लुई : आपरो हुकम सिरमाथै, आचार्यश्री ! जोधपुर दरबार रो आज्ञापत्र लेयनै नागौर गयो। बठै दिगम्बरा रै एक बडै पोथीखानै में दस हजार पोथ्यां है। बठै रा अधिकारी भट्टारकजी पैलां तो पोथ्यां रा दरसण करावण सू ही नटग्या। घणी गरजां कर्‌यां पोथ्यां देखाळी। घणकरी किताबां री दसा माडी अर फाटी-टूटी है। दीवळ पोथ्यां नै खाय रैई है। पोथ्यां नै सूरज रा दरसण करावणा तो बै पाप समझै। बगतसर जे सार-संभाळ नीं हुई तो, गुरुदेव ! ऐ सगळा ग्रंथ स्वाहा हुय जासी। म्हे महान हा, अर म्हारी धरोहर लूंठी है, आ कैवतां पोमीजणवाळा महान आळसी अर सुस्त है। बडेरां री बडायां रा गूदड़ा ओढ्यां निकरमा हुया बैठ्या है।

आचार्य : ऐहडा बठीठा खावण री दरकार कोनी, डॉक्टर ! निकरमापणो तो आ रो सुभाव बणग्यो। देश नै इण रो लूंठो मोल चुकावणो पडसी जरूर। थारी रीस नै समझूं अर म्हारै कानी सूं ऐहड़ी कोसिस करसूं कै तनै बा सामग्री सोध सारू मिल जावै। मै बठै रै भट्टारकजी सूं संपर्क करूंला। मनै भरोसो है कै तनै बठै ग्रंथ देखण री इजाजत मिल जासी।

लुई : आचार्यश्री ! जैन धर्म में दिगम्बर अर श्वेताम्बर रो फंटवाड़ो क्यूं हुयो ?

आचार्य : धर्म मांय तो फटवाड़ को हुयो नीं, हां ! मानणिया जरूर एक-दूजै सूं फटग्या। देश, काल अर परिस्थितियां मुजब कई लोग बदळाव चायो अर कयां नै ओ मंजूर कोनी हुयो। एकमत को हुय सक्या नीं, तद दो फांटा हुयग्या।

लुई : इण सूं धर्म नै तो ठेस लागी ही हुसी आचार्यजी !

आचार्य : धर्म इत्तो निबळो कोनी, लुई। धर्म रो मूळ रूप तो थिर है, शाश्वत है। उण रो टिकाव साच री नींव पर है। आचार-विचार तो इण रा उपाग है, जिका मे फोरा-सारी री कोई खास गिणत कोनी। परिस्थितियां अर बगत रै मुजब उणां में फोर-सार तो हुवै हीज।

लुई : नूवीं दीठ मिली आ, आचार्यश्री !

आचार्य : अहिंसा, साच, ब्रह्मचर्य, अचौर्य, अपरिग्रह अर समदृष्टि जैन धर्म री मूळ बाता है, जिका नै श्वेताम्बरी अर दिगम्बरी दोनूं मानै।

लुई . इत्तै महान् सिद्धातां रै मानणियां में ओ फटवाडो क्यू हुयो, गुरुदेव ?

आचार्य ओ उळझवाडो तो आखी दुनिया मे है। सगळै धर्मा री मूळ बातां तो एक-सरीसी है, झगड़वाळ री जडां तो और कठै ही है। घणकरा लोग धर्म रा गूदडा ओढ'र जीवै। धर्म रै मूळ नै ओळखै कोनी। ऊपरा-ऊपरी री बातां नै पकड़-परा धार्मिक बणण रा सांग करै। जीवन नै जे महताऊ बणावणो अर उण ढब जीवणो हुवै तो प्रयोगधर्मी बणणो ही पडसी। इण सू ही खुद रो, जगत् रो अर देश रो कल्याण हुसी। जैन धर्म रो कैवणो है कै शान्ति रै सूत्र नै जीवन में कदैई ना छिटकावो।

लुई : नागौरवाळी बात नै लेय'र आपरै सामै मनै ऐहडी बात नीं कैवणी चाहीजती। माफी चावू, आचार्यश्री !

आचार्य   पिछतावै री दरकार कोनी डाक्टर ! थारी जागां मैं हुवतो तो इणीज भांत ताव खावतो। पीड़ तो पीड हुवै। साच नै प्रकटावणो कसूर कोनी। इण बाता री गैराई सूं पडताल कर्‌यां तनै समाधान भी मिल जासी। वै ठगीज्या है, बारै सागै धोखो हुयो है।

लुई   गुरुदेव ! नाराज ना हुया, ठगीजणो अर धोखो खावणो– दोनूं ही पाप है। अकल रै दिवाळियैपण नै दरसावै।

(श्रावक आवै, आचार्यश्री नै निवण करै)

श्रावक : वदना, आचार्यश्री !

आचार्य   धर्मलाभ ! पारसजी, घरै राजी-खुसी तो है ?

श्रावक : आपरी कृपा है गुरुदेव !......

लुई : *(बीच में बोलतां)* धर्मलाभ रो भाव अर अरथाव काई है, गुरुदेव ?

आचार्य . ओ अहिंसा रो बीजमत्र है कै आखी जीवाजूण धर्म नै जाणै, दयाभाव राखै अर हिसा नीं करै। बडेरा आचार्य घर-घर मे ओ सनेसो पुगावता रैया है। मै भी उणी परापरी नै निभाऊं। जैन धर्म रै चौबीसवै तीर्थकर भगवान् महावीर रै इण सनेसै नै मै दुनिया रै खूणै-खचूणै ताई पुगावण री आमना राखूं। विश्वबुधत्त्व रो ओ सनेसो जे सगळा सिकारलै तो देशां री आपसी होड मिट जावै, जुद्धां रै तांडव सूं लारो छूट जावै अर मिनख-जाया सुख-सांति सू जींवता-थकां उन्नति कर सकै। म्हारो ऐहड़ो पक्को भरोसो है, आमना है अर आ हीज आराधना है।

लुई : आप महान हो, गुरुदेव !

आचार्य : पारसजी, डॉ. लुई खातर विसाईं अर जीमा-जूठै रो सरजाम करो।

श्रावक : इणीज खातर तो मैं सेवामे हाजिर हुयो हूं, गुरुदेव !

(डॉ. लुई उठै, आचार्यश्री नै निवण करै)

मंच माथै अन्धारो

चौथो दरसाव

(महाराजा गंगासिंहजी आपरै पढाई वाळै कमरै में विराज्यां है, ए डी.सी आवै)

एडीसी खम्मा अन्नदाता। डॉ लुई टैसीटोरी आपरै दरसणां सारू हाजिर हुया है।

गंगासिंह : मांय लियावो।

(टैसीटोरी एडीसी सागै बड़ै)

वेलकम डॉ. लुई !

लुई : घणी खम्मा, योर हाइनेस !

गंगासिंह : मि. लुई टेक योर सीट।

लुई : सो काइंड ऑफ योर हाइनेस !

(लुई सामनै सोफै पर बैठे)

गंगासिंह : बीकानेर पधारणो कियां हुयो ?

लुई : मैं राजस्थानी भाषा अर साहित्य री शोध करू अर बीकानेर नै म्हारो कमठाण वणाऊं।

गंगासिंह : पण तूं जोधपुर क्यूं छोडणो चावै।

लुई : जोधपुर महाराज री तो म्हारै पर महरबानी है, योर हाइनेस। पण निचलै तबकै पर मदद री कमी रैवै। काम री दीठ सूं भी बठै रा हाल बख-पडता कोनी।

गंगासिंह : राजस्थानी अर हिन्दी रै सिवाय भळै किसी-किसी भासावां जाणो, डॉ. लुई ?

लुई : आथूणी भासावां में मातभासा इटालवी, लेटिन, जर्मन, ग्रीक अर अंगरेजी। भारत री भासावां में संस्कृत, हिन्दी, प्राकृत, डिंगल, गुजराती, मारवाडी, व्रज, बंगाली अर उर्दू।

गगासिह . बौळी भाषावां जाणो । भारत मे अर खासकर राजपूतानै मे थारी सोध रो विषय काई है ?

लुई किणी एक विषय री सोध कोनी करू। म्हारी सोध रो विषय तो लांबो-चौडो है। आथूणै जगत ज्यूं ही भारत में भी परापरी वाळै सिलसिलैवार इतिहास री कमी है। कैवणै रो अरथाव ओ कै तरतीब सू इतिहास लिखीजियो ही कोनी। साच तो ओ है कै आ राष्ट्रीय चरित्र री कमजोरी है। मै इतिहास री उण अणदीठ कड़्यां नै जोड़णो चावूं।

गंगासिह इतिहास लिखण री दिस कर्नल जेम्स टॉड सांतरो काम कस्यो है। बदै तनै तरतीबवार इतिहास दीखसी।

लुई कर्नल टॉड रो कियोडो काम महान है। सोनै रै आखरां में मांडणजोग है। पण म्हारो सोचणो जुदा है। मैं रेत रै धोरां मे सोई पड़ी सामग्री रै सागै-सागै अतीत री यादगार लियोडी खंडहरां, मसाणां मे खिंडी-थकी सामग्री नै भेळी कर'र शिलालेखा, मूरत्यां अर देवळ्यां रै आधार माथै अठै री गम्योडी राजनीतू, समाजू रै सागै-सागै धार्मिक संपत्ति नै उजास मे लावणी चावू। मै भारत री गम्योडी आन-बान नै उणरै ऊंचै आसण थरपणी चावूं।

गंगासिह . उद्देश्य तो सांगोपांग है, योर एम इज गुड। पण इणनै अमलीजामो पैरावणो घणो दौरो है। अठै लाइफ भौत टफ है। अठै री सूखी आबोहवा री गरमी अर सरदी बरदास्त कर लेसी, इण में मनै संको है। आवण-जावण सारू अठै फकत ऊंट री सवारी अर जे कदै-कदास बा भी नीं मिलै तो पाळो ही जात्रा करणी पडै।

लुई : मैं एक सैनिक रैयोडो हू, योर हाइनेस ! करडो जीवन जीवणै रो भी म्हारो अभ्यास कस्यो-थको है। मनै इटली अर भारत री आवहवा मे भी घणो फरक नीं लखावे।

गगासिंह : तो तूं सेना में भी रैयोडो है ?

लुई : मै सेना मे कैप्टन हो।

गंगासिह : में सैनिकां सू घणो हेत राखूं।

लुई : आपरो हेत राखणो वाजबी है, योर हाइनेस ! आप खुद सेनाध्यक्ष ठैस्या। आपरी निजू टुकडी गंगारिसालो जुद्ध-मैदान में लडै।

गंगासिंह : डाक्टर टोरी ! राष्ट्रकूटां, जिकां नै राठौड भी कैवै, बाबत थारी काई धारणा है ?

लुई . बै सातरा वीर है।

गंगासिंह : खाली वीर ही नीं, साहित रा सिरजणहार भी है।

लुई : माफी चावूं, योर हाइनेस ! किणी खास मिनख रै निजू गुणां रै आधार पर पूरी जात नै नीं बिडदाईज सकै। पृथ्वीराज राठौड री रच्योड़ी 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' साहितू जगत री अणमोल थाती है। डिंगल रो अमर काव्य है। ओ म्हारी सोध री प्राथमिकता में है।

गगासिह · साहित खातर थारै हिंवळास नै जाण'र जीव-सौरो हुयो, डाक्टर लुई ! पण तूं थारो कमठाण बीकानेर में क्यूं राखणो चावै ?

लुई : आ जागां म्हारी सोध-सींव रो बिचाळो है। फेर आपरी गुणग्राहकता, साहितू लगाव अर दातारपणै रै गुणां सूं खींचीजतो-थको ही बीकानेर आवण री तेवडी। काम री मींट सूं भी बीकानेर एक सांतरी जागां है।

गगासिंह लुई ! थारी बातां म्हारो जीव-सौरो कर दियो। बीकानेर में थारो स्वागत है। तनै तो घणो पैलां ही इटली सूं बीकानेर में आय जावणो चाहीजतो हो।

लुई : ओ म्हारो दुरभाग रैयो कै आप-सरीखी हस्ती सूं पैलां जाणचीण नीं हुई।

(गंगासिंह घंटी बजावै, अर्दली आवै)

गंगासिंह : कंट्रोलर आफ दी हाउसहोल्ड नै हाजिर करो।

अर्दली : खम्मा अन्नदाता ! *(अर्दली जावै)*

गंगासिह : डॉ. टोरी ! मैं चावूं कै तूं नूवैं सिरै सूं बीकानेर रो इतिहास लिखै। थारी योग्यता पर मनै पूरो भरोसो है। सभ्यता अर संस्कृति री पिछाण सारू एक संग्रहालय

भी मै थारी देख-रेख में थरपणो चावूं।

लुई : आपरी अगमदीठ सरावणजोग है, योर हाइनेस ! संग्रहालय री थरपणा दुनिया में बीकानेर री पिछाण संवारण में मदद करसी। म्हारी योग्यता री परख सारू आपरो घणो आभार ! आपरै भरोसै पर खरो उतर सकूं, आ ही म्हारै जीवन री लूंठी साध है अर ओ ही म्हारो सगळां सूं बडो पसाव हुसी, योर हाइनेस !

(कंट्रोलर ऑफ हाउसहोल्ड आवै)

दौलतसिंह : खम्मा अन्नदाता !

गंगासिंह : ऐ है डॉ. लुई टैसीटोरी। म्हारा निजू पावणा। लांबै बगत ताई बीकानेर में रैसी। आ रै रैवणै अर खाणै-पीणै रो सरंजाम म्हारै निजू खरच सूं कर दियो जावै।

दौलतसिंह : खम्मा अन्नदाता ! *(जावण वास्तै घूमै)*

गंगासिंह : भळै सुण ! मैनन नै कैय देई कै अनूप संस्कृत लाइब्रेरी रै डायरेक्टर नै परवानो भेजदै कै डॉ. लुई नै पुस्तकालय में सगळी भांत री सहूलियत दे दी जावै। बगत री पाबन्दी आ पर लागू को हुवैली नीं।

दौलतसिंह : खम्मा अन्नदाता।

गंगासिंह : डॉ. लुई ! भळै कोई सुभीतो चाहीजै ?

लुई : हुजूर री घणी ही महर है। जीवूंला तद ताणी आपरी दातारी रो करजदार रैवूंला।

गंगासिंह : इणनै दातारी ना कैवो। ओ म्हारो कर्तव्य है। बीकानेर नै थारो घर समझ'र काम करणो है।

लुई : बीकानेर नै घर समझ'र ही हाजिर हुयो हूं, योर हाइनेस !

गंगासिंह : आ घणी फूठरी अर घर जिसी बात कैई। नोबल मिसन बी ब्लेस्ड। मां करणी थारी रिछपाळ करै।

लुई : खम्मा अन्नदाता !

(दरवाजो खड़कै, चीफ सेक्रेटरी आवै।)

सेक्रेटरी : एक्सक्यूज मी, योर हाइनेस ! सॉरी टू डिस्टर्ब। टॉप सीक्रेट मैसेज।

(लुई ऊभो हुय जावै। सेक्रेटरी बद लिफाफो देवै। दोनूं पासी सू लिफाफो देख'र गंगासिंह खोलै। लिफाफै मे भळै लिफाफो। उणनै भी आछी तरां देखतां खोलै अर पढतां-पढता मूंढै पर गंभीरता आय जावै)

गंगासिंह : प्राइम मिनिस्टर नै फौरन म्हारै सू मिलण रों कैवो। डॉ लुई ! विश यू सक्सेस।

लुई : *(अभिवादन करतो)* योर हाइनेस !

मंच माथै अन्धारो

पांचवों दरसाव

(बीकासर गांव, जोरदान सांदू रो घर। जोरदान आपरै एक संगळियै सागै बैठो होको पीवै। कविराज किशोरदान बारहठ अर एल पी. टैसीटोरी आवै।)

किशोर : जय जोगमाया री, जोरदानजी।

जोरदान : आपनै भी जय जोगमाया री। धिन घडी, धिन भाग। पधारो। आज सूरज कठीनै ऊग्यो ? दिनूगै-दिनूगै कविराज किशोरदानजी रा दरसण-मेळा हुयग्या।

किशोर : सूरज रो ऊगणो तो अटल है, जोरदानजी ! ओ कैरै रोक्यां रुकै है। इत्तो ऊचो ना चढाओ। नीचै पड्यां गोडा फूट जासी।

जोरदान : म्हैं कोई अणहूती बात तो कैयी कोनी। आपरी विद्वत्ता जग-जाहिर है। देश मे डंको बाजै आपरै नांव रो।

किशोर : आ सब आप लोगा री महरबानी है कै आप मनै इत्तो मान देवो। आपणी बातां तो हुवती रैसी। पैलां पधारयोड़ै आं मेहमानां सूं मिलो। आप है इटली रा वासी डॉ. लुई टैसीटोरी सा'ब। सत समंदरां-पार सूं आया है।

जोरदान : स्वागत है आपरो। आपरै पधारियां म्हारो घर पवित्र हुयग्यो। गांवां रो जण-जण आपरै नांव नै ओळखै है। म्हैं म्हारै भाग नै सराऊ कै आप अठै पधार'र म्हारो अर गांव रो मान बधायो। धन्य है बो इटली देस, जठै आप जैहडा सपूत जलम्या। धिन है वीं माता री कूख, जिकी आप जिसै मनस्वी मिनख नै जलम दियो।

लुई : आ थांरी उदारता है कै इण भांत म्हारो बखाण करो, बिडदावो। मैं घणो पेलां ही आपसूं मिलणो चावतो, पण आं दिनां काम-काज रो उळझाड़ रैयो अर, कविराज

किशोरदानजी री उडीक भी ही। सोच्यो कै कविराज नै सागै लेय'र ही आपसूं मिलूंला। बियां सींथळ रा सीतारामजी बिट्‌ठू भी आवणवाळा हा, पण काई ठा कठै अटकग्या ?

जोरदान . बै अटकणवाळा जीव कोनी। कोई खास अड़ास हुयगी लागै। खोजतां-खोजतां आय जासी। राज रो काईं हुकम है, फरमावो।

किशोर : आप जूनै साहित री पोथ्यां री खोज करै। आपरै कनै कोई पुराणी पोथी हुवै तो डाक्टर सा'ब देखणी चावै।

जोरदान : पोथ्यां री काईं कमी है, घणी'ज है। शोध करण सारू दूजी सामग्री री भी कोई कमी कोनी। कोई खोज करणियो चाईजै।

किशोर : लाखीणी बात करी।

जोरदान : बाप-दादां नै मिल्योड़ा तांबापत्र मिल जासी, हाथ लिखी इतिहासू पोथ्यां मिल जासी, लोककथावां अर हरजस री पोथ्यां मिल जासी। रातभर जागो, देखो, सुणो, इसी बातां मिल जासी। हुंकारियो चाहीजै। पाबूजी री पड चित्रामां-सेती मिल जासी। बाबा रामदेवजी रै चमत्कारां रो हाल मिल जासी, भोमिया अर जोगण्यां री कथावां मिल जासी। फूलै लाखाणी अर जगदेव पंवार जिसै जूझारू मिनखां री ओळखाण मिल जासी।

लुई : आप कनै तो अखूट भंडार भर्‌यो पड़्यो है।

किशोर : सगळा संभाळ'र राख्या है, सा !

जोरदान : पोथी-पानड़ा तो सगळा हाजिर कर देसूं, पण एक बात है कै बेचण-खरीदण री कोई बात नीं हुवणी चाईजै। भूखा-तिसा रैय जासां, पण बाप-दादां रा नांव को बेचां नीं।

लुई : बेचणै-लेवणै री बात कुण करसी ? आपरी जागीर है। आप स्वतंत्र हो, जचै जियां करो। अराजकता तो अठै है कोनी। जे कोई काम री बात निगह आई अर थांरी

हामळ हुई तो नानूरामजी भाट नै बुला'र उणरी नकल करा लेसां। सुलेख में बारी जोड़ कोनी।

जोरदान : आप अराजकता री बात करो ? राज हुवतां थकां भी म्हे तो लुटीजग्या।

किशोर : बै लूटणवाळा दूसरा हा जोरदानजी ! थे समझो जिका, ऐ कोनी। डाक्टर सा'ब साहित रा रसिया है, पारखू है। आप वैज्ञानिक आधार माथै डिंगळ री व्याकरण त्यार करी है। राव जैतसी रै छंद रो संपादन कर्यो है। हळदीघाटी ज्यू ई बीकानेर री रातीघाटी रै शौर्य नै उजागर कर्यो है। वचनिका रै रचणहार खिड़िया जगा री जाणकारी करणै सारू सीतामऊ, सेमलखेड, मालवा रै दूर-दराज इलाकां में घूम्या है। वेलि क्रिसन रुकमणी री रो सम्पादन कर्यो है।

लुई : जोरदानजी लूटण री जिकी बात कैई, बा घणकरी'क साची है। ऐहडा मौका हरेक राष्ट्र रै जीवन में आवै। पराजित राष्ट्र आपरी अस्मिता नै गुमाय देवै। परतंत्रता री बेड़्यां समूचै राष्ट्र नै पांगळो कर देवै। अठै भी ओ सगळो हुयो है। राजनीतू उठा-पटक री बेळा शैक्षणिक बुनियाद रा चूळिया हालग्या। अठै रो समाजू ढांचो चरमराग्यो। ऊंचै आसणा पर बिराज्या मनीषी धरती-भेळा आयग्या।

किशोर : श्रीमान ! ओ सगळो तो हुवणो ही हो। सत्ता रो बदळाव अर बो भी विदेशी हाथां मे। बै अठै री संस्कृति नै कद पांगरण देवै। रोटी-रोजी री आफत खड़ी हुयगी। आदमी जावै तो जावै कठै ? पेट री दाझ बुझावण खातर मान-मुरतब छोड'र माडो-मांदो जिसो भी काम मिल्यो, सिकारणो पड़ग्यो।

लुई : पराजित राष्ट्र नै ऐहडै दौर सूं गुजरणो ही पडै, जोरदानजी ! विजेता तो आपरी भाषा, संस्कृति अर गीरबो पराजित राष्ट्र पर लादै ही।

जोरदान : ओ सगळो ई तो अठै हुयो। डॉक्टर सा'ब, वेद, उपनिषद्

अर बीजै शास्त्रा में बताईजी-थकी आध्यात्मिक भावभूमि पर आधारित जीवनशैली नै छोड'र अठै रै मिनखा नै रोजगारोन्मुखी शिक्षा अंगेजणी पडी जिकै मे अंगरेजी रा दो-च्यार धिस्या-पिट्या सबद जाणणा जरूरी हुयग्या। बगत रै बायरै मे आ ही देश री नियति बणगी।

लुई : आप लोगां री कूंत बिलकुल ठीक है।

जोरदान : बेबस हां-सा ! बगत री बलिहारी है। समृद्ध परंपरा रै पाण आदर्श जीवन बितावणिया आथूणी भूडी संस्कृति रै लारै गैला हुय रैया है। बै लोग देसी भेष अर भाषा नै निमधा समझै। सभ्यता रो सगळो ठेको तो जाणै ऐ ही लेय राख्यो हुवै।

किशोर : पीढ्यां रै आंतरै सूं आ अबखाई और घणी उळझगी। देश नै मारग दिखावणिया पुरोधा चल्या गया। भावी पीढी नै इण परंपरा री उपादेयता, महत्ता अर मोल रो ज्ञान कोनी।

जोरदान : साची कैवो किशोरदानजी ! बांरी समझ मुजब आं रो मोल रद्दी रै कागजां सूं बेसी को हो नीं। ज्ञान अर परख बिना मोती भी काकरां भेळा हुयग्या अर हीरा कोड्यां रै मोल तुलग्या। कई मूळ ग्रंथ जर्मनी चल्या गया तो कयां नै अंगरेज हाथबसू कर लिया। कई म्हां लोगां री लापरवाही सूं काळ रा गासिया बणग्या तो शेष गांवां मे खिंड्या पड़्या है।

लुई : बीत्योडो बगत पाछो बावड़ै कोनी, जोरदानजी। समझदारी इणी में है कै 'बीती ताही बिसारदे, आगे की सुधि लेह'। मोह-नींद नै त्याग'र इण काम नै बधावण सारू अबै भी कमर कसली जावै तो ई घणकरो'क कमाईज सकै।

जोरदान : देश नै दिसाबोध देवणवाळां री भी कमी है। डॉक्टर सा'ब, अबै काई कर्‌यो जावै, आप ही की बतावो।

लुई : लूठै मिनखां रै कमरां री सोभा बधावणवाळी अलमारियां रै ठंडै बस्तां में बंधी-थकी उण बेमैदा-सामग्री नै बारै काढ'र उंणरो उपयोग करणो चाईजै। सागै ई गांवां में

दबी पड़ी उण लोप हुयोड़ी संपदा नै सोध'र दुनिया रो ध्यान उण पासी दिरायो जावै तो अतीत नै भळै महिमा-मंडित कर्‍यो जा सकै। इणमें सफळता री पूरम्पूर संभावना है।

जोरदान : इसै पुनीत काम में आपनै म्हां लोगां रो पूरो-पूरो सहयोग मिलसी डाक्टर सा'ब !

लुई : धन्यवाद ! राजपूतानै रै इतिहासू संदर्भ मे चारणां रै योगदान नै विसराईज नीं सकै। चारण तो इतिहास रा पर्यायवाची है। उणां पर अतिरंजना रो दोस लगायो जावै। मिनख सुभाववाळी कमजोरियां किण में कोनी हुवै ? नीर-क्षीर रो विवेक करणिया विज्ञ-जन सार काढ लेवै। अतिरंजना अर अतिघृणा दोनूं ही इतिहासू लेखन में वर्जित है।

किशोर : ईसकै सूं इसो आरोप लोग लगावै है, डाक्टर सा'ब ! आ तो बां लोगां री समझ री भूल है।

लुई : इसी भरमावणी स्थिति हुय जावै। अठै रा घणकरा लोग मनै अंगरेज समझै। भारत रो मिनख अंगरेज अर बीजै योरोपवासी में कोई भेद को मानै नीं। गोरी चामड़ी वाळो हरेक बारै खातर अंगरेज हुवै। अंगरेजां रो आतंक अठै घृणा अर भेद री भींतां खड़ी करदी। चामड़ी इकसार हुवणै सूं मनै भी कदै-कदास इणरो खामियाजो भुगतणो पड़ै, जदकै मैं इटालियन हूं, अंगरेज कोनी। राजस्थानी भासा री सेवा ही म्हारो लक्ष्य है।

जोरदान : डाक्टर सा'ब ! म्हारी बातां सूं आपरी भावना नै ठेस लागी हुवै तो आप मनै माफी बगसाया। जित्तो और जैहड़ो सहयोग आप चावोला, आपनै धपटवां मिलैला।

किशोर : जोरदानजी ! बातां ही करता रैसो का खावणै-पीवणै री बात भी करसो ?

जोरदान : बातां ही बातां में सुध ही विसरग्यो। हुकम, काईं अरोगसो ? राज रै दुवारो चालसी या देसी हाजिर करूं ?

किशोर : भोरा-भोर राम रो नांव लो।

जोरदान : शरबत तो चालसी ?

किशोर : शरबत रा चांचला रैवणदो। आपणै तो छाछ-राबड़ी री बात करो। धीणो-धपाणो कियां-काईं है ?

जोरदान : च्यार-पांच भैस्यां है अर गायां में सात-आठ राठी, दो-तीन सिंधण......लिछमणा ! सुण !

(लिछमण आवै)

जोधपुर सूं रामकरणजी आवणवाळा है, बां रो ध्यान राखी। अर जा वेगो-सो छाछ-राबडी परोसल्या।

लिछमण : हुकम ! अबार लाऊं-सा *(पाछो माय जावै परो)*।

किशोर : गायां री नस्लां तो चोखी राख-छोडी है। इयां देशी भी माड़ी तो को हुवै नीं पण दूध कीं कमती देवै।

जोरदान : देशी भी ही, पण लारलै साल परणायदी। अबै तो राठी अर सिंधण है। अबै आ बतावो कै भोजन में काई अरोगसो ?

किशोर : फोफळिया, फळ्यां, सांगरी हुवै तो सांगरी रै साग सागै बाजरी रा सोगरा।

जोरदान : चक्र भी हाजिर है, सा'ब भी सागै है।

किशोर : सा'ब री ही तो अडांस है। दारू-मांस रो सेवन को करै नीं।

जोरदान : योरोपवासी होय'र निरामिष ? संसार रो आठवों अजूबो है।

किशोर : जैन धर्म सूं प्रभावित है।

जोरदान : आ तो खूब रैयी। ऊपरा-ऊपरी बोच लिया। जमीं माथै आवण ही नीं दिया।

(दोनूं आंख्यां ही आंख्यां में मुळकै। मांय सूं लिछमण थाळी वगैरह लियां आवै, लारै-लारै एक जणो हाथ में पाटा लियां आवै)

पाटो कठै है ? पैली पाटो लगावो। पछै थाळी राखो।

किशोर : सवाल टेढो है डाक्टर सा'ब। पण म्हारी समझ मुंजब गयै बगत में क्षत्रिय शस्त्र अर शास्त्र दोनां रा धणी हा। भगवान राम अर कृष्ण रा उदाहरण सामनै है।

ोरदान . आप ठीक फरमावो। अबै थोडो लोकगीतां रो ई आनंद लेय लेवां। गोगा ! केसरिया बालम सुणा डाक्टर सा'ब नै।

। . बडो हुकम !

ा गीत गावै अर चम्पा नाचण लागै)

जावो। जावण सूं पैलां बाखळ में बैठ'र खाणो-बीजो

।

. ।

(लिछमण रो साथी पाटो लगावै, लिछमण थाळी राखै)

अरोगो–सा !

(डाक्टर लुई ऊभा हुय'र हाथ धोवै)

लिछमणा ! तूं जा अर सांवतै नै बुला'र ला। कैये, आवतो पाबूजी री पड सागै लावै। वांचणी है। पूठो घिरतां चम्पा अर गोगली नै ई कैवतो आये कै गावण वास्तै आवणो है अर जे राणो घरै हुवै तो वैनै-ई सागै लेवती आवै। जीम्यां पछै ओ प्रोग्राम हुसी। जे ऐरै बिचाळै बगत मिलसी तो पोथ्यां देखता रैसां। नीं तो रातनै तो पोथ्यां देखणी ही है।

(सगळा लोग छाछ-रावड़ी खावै-पीवै। दो-तीन आदमी आय'र बैठै)

सावतो · जै, जुहारडा !

जोरदान आ भाई सांवता ! सा'ब नै पाबूजी री पड़ बांच'र सुणा।

सावतो : हुकम !

(सांवतो पड़ बाचै, पड बांच्यां पछै लुई ताळी बजावै)

लुई इणमे लोकदेवता पाबूजी रो जस गाईज्यो। इणनै बांचण री शैली भी अनूठी है। बड़ी भावोत्पादक है। मै फळोदी जांवती बेळा पाबूजी री जनम-ठौड़ देख'र आयो।

किशोर : राजपूतानै मे पाबूजी राठौड़ अर बाबा रामदेवजी री लोकदेवता रै उणियारै खूब मानता है।

जोरदान . अरे भाई सुभाना ! बाबा रामदेवजी रो भजन तो सुणा डाक्टर सा'ब नै।

(सुभानो मंडळी रै सागै बैठ'र भजन गावै। भजन पूरो हुवै तद गोगा अर चम्पा आवै, बैठै)

लुई . रामदेवजी रो क्षेत्र घणो लांबो-चोड़ो है। आं नै मानणियां री गिणत देश मे घणी-ई है। मै कदै-कदास सोचूं कै भारत रा घणकरा'क अवतार क्षत्रिय कुल में ही क्यू हुया ?

किशोर : सवाल टेढो है डाक्टर सा'ब। पण म्हारी समझ मुंजब गयै बगत में क्षत्रिय शस्त्र अर शास्त्र दोना रा धणी हा। भगवान राम अर कृष्ण रा उदाहरण सामनै है।

जोरदान : आप ठीक फरमावो। अबै थोडो लोकगीता रो ई आनंद लेय लेवां। गोगा ! केसरिया बालम सुणा डाक्टर सा'ब नै।

गोगा : बडो हुकम !

(गोगा गीत गावै अर चम्पा नाचण लागै)

जोरदान : अबै थे जावो। जावण सूं पैलां बाखळ मे बैठ'र खाणो-बीजो खायलो।

सांवतो : बडो हुकम !

(सगळा बारै जावै परा)

लुई : घणो आंतरै, इटली में बैठो जिका सुपना मैं देख्या करतो, बै आज अठै परतख हुयग्या। जीवन में कृतकृत्य हुयग्यो। निवण है मरुधरा नै।

(डॉ. लुई दोनूं हाथ जोड़तां सिर जमीन पासी झुकावै)

मंच माथै अन्धारो

(लिछमण रो साथी पाटो लगावै, लिछमण थाळी राखै)

अरोगो–सा ।

(डाक्टर लुई ऊभा हुय'र हाथ धोवै)

लिछमणा ! तूं जा अर सांवतै नै बुला'र ला। कैयै, आवतो पाबूजी री पड़ सागै लावै। बांचणी है। पूठो धिरतां चम्पा अर गोगली नै ई कैवतो आये कै गावण वास्तै आवणो है अर जे राणो घरै हुवै तो वैनै-ई सागै लेवती आवै। जीम्यां पछै ओ प्रोग्राम हुसी। जे ऐरै विचाळै वगत मिलसी तो पोथ्यां देखता रैसां। नीं तो रातनै तो पोथ्यां देखणी ही है।

(सगळा लोग छाछ-रावड़ी खावै-पीवै। दो-तीन आदमी आय'र बैठै)

सांवतो : जै, जुहारडा !

जोरदान : आ भाई सांवता ! सा'ब नै पावूजी री पड बांच'र सुणा।

सांवतो : हुकम !

(सावतो पड बांचै, पड़ बांच्या पछै लुई ताळी बजावै)

लुई : इणमें लोकदेवता पाबूजी रो जस गाईज्यो। इणनै बांचण री शैली भी अनूठी है। बड़ी भावोत्पादक है। मै फळोदी जांवती बेळा पाबूजी री जनम-ठौड देख'र आयो।

किशोर : राजपूतानै मे पाबूजी राठौड अर बाबा रामदेवजी री लोकदेवता रै उणियारै खूब मानता है।

जोरदान : अरे भाई सुभाना ! बाबा रामदेवजी रो भजन तो सुणा डाक्टर सा'ब नै।

(सुभानो मंडळी रै सागै बैठ'र भजन गावै। भजन पूरो हुवै तद गोगा अर चम्पा आवै, बैठै)

लुई : रामदेवजी रो क्षेत्र घणो लांबो-चोड़ो है। आं नै मानणियां री गिणत देश में घणी-ई है। मै कदै-कदास सोचूं कै भारत रा घणकरा'क अवतार क्षत्रिय कुल मे ही क्यू हुया ?

किशोर   संवाल टेढो है डाक्टर सा'ब। पेण म्हारी समझ मुंजब गयै बगत में क्षत्रिय शस्त्र अर शास्त्र दोनां रा धणी हा। भगवान राम अर कृष्ण रा उदाहरण सामनै है।

जोरदान . आप ठीक फरमावो। अबै थोडो लोकगीतां रो ई आनंद लेय लेवा। गोगा ! केसरिया बालम सुणा डाक्टर सा'ब नै।

गोगा : बडो हुकम !

(गोगा गीत गावै अर चम्पा नाचण लागै)

जोरदान : अबै थे जावो। जावण सू पैलां बाखळ मे बैठ'र खाणो-बीजो खायलो।

सावतो · बडो हुकम !

(सगळा बारै जावै परा)

लुई : घणो आंतरै, इटली में बैठो जिका सुपना मैं देख्या करतो, बै आज अठै परतख हुयग्या। जीवन में कृतकृत्य हुयग्यो। निवण है मरुधरा नै।

(डॉ. लुई दोनूं हाथ जोड़तां सिर जमीन पासी झुकावै)

मंच माथै अन्धारो

छठो दरसाव

(डॉक्टर लुई आपरै कमरै में मांचै पर सोयोड़ो है। कनै ही राखोड़ी एक टेबल पर दो-तीन भांत री दवायां री बोतला पडी है। रूपा कमरै मे आवै)

रूपा : सा'बजी ! दवाई अरोगलो।

लुई . बार-बार दवाई लेवणो भी एक छातीकूटो है। फकत दवाई लियां सूं ही मिनख ठीक को हुवैनीं। जिजीविषा भी चाहीजै।

रूपा : बींरी कठै कमी है थांरै कनै ! सा'बजी उणरी तो आप साकार मूरत हो। रात-दिन पोथ्यां फिरोळता रैवो, थकणै रो नांव ही कोनी जाणो, सगती रो भंडार अर पूतळा हो। दवाई रै सागै दुआ भी चाहीज्या करै, जिकी हूँ आपरै खातर करू ही हूं।

लुई : काईं लागै है तूं म्हारी ? कीं गनो का साख हुयां ही दुआ असर देखाळै।

रूपा : साब'जी आ सीख और किणी नै देवो। रूपा ना तो इत्ती भोळी अर न ठगीजण वाळी। दुआ रो साख सूं काई लेणो-देणो ? बा तो रस्तै चालतै री भी लाग सकै। अपणायत में खून रा साख कठै आडा आवै ? बठै संसार को रैवै नीं। बठै तो आतमा सूं आतमा रो मिलाप हुवै।

लुई : रूपा ! तूं पढी-लिखी तो कौनी पण समझदार खासी है। दार्शनिक ज्यूं बातां करण लागरी है।

रूपा : समझदार हुवण खातर पढाई-लिखाई जरूरी को हुवैनीं, सा'बजी ! अकल तो भगवान री दियोडी काम आवै। फेर मनै तो आखरज्ञान भी है। म्हारै बापू री मौत सगळो-कीं गडबड़ा दियो।

लुई : रूपा ! जीवन भी एक अबूझ पहेली हुवै। प्रेम उणरी नैसर्गिक चाह हुवै। बठै बंधण नीं हुवै। पंखेरू रा-सा पांखड़ा हुवै उण रै। प्रेम नै वाणी को दे सक्यो नीं, ओ ही म्हारो कसूर है।

रूपा : सा'बजी..........

लुई : (बिचाळै-ई बोलै) रूपा ! तू रात-दिन म्हारी सेवा में लागी रैवै। ना तो रातनै सोवै अर ना ही दिन में बिसाई लेवै। तूं बीमार पड़गी तो थारी सार-संभाळ कुण करसी ? कठैई आ नीं हुय जावै कै मै तो ठीक हुय जावूं अर तू बीमार पड जावै।

रूपा : मै तो बीमार पड़णो चावूं, सा'बजी ! म्हारी दुआ बो कबूलै जद नी। एकात री उण मौन बेळा में मै तो परमपिता परमात्मा सू अरदास करती ही रैवूं कै म्हारी उमर थानै लाग जावै।

लुई : मैं तो कोनी चावूं कै थारी दुआ कबूलीजै। म्हारी मौत नै तूं अंगेज मत रूपा ! कजा जे आ ही गई है तो म्हारी मौत मनै ही भरण दै।

रूपा : सा'बजी थूको मूंढै सूं। ऐहडी अपसुगनी बातां नीं करणी'। थे जरूर ठीक हुय जासो।

(डा. लुई खांसै, बारै सूं रूपा रो भाई श्रीनाथसिंह आवै)

श्रीनाथ : काई हुयो रूपा ? सा'बजी नै बगतसर दवाई दी'क नीं ? खांसी क्यूं आवै है ? जा, बेगी-सी गरमा-गरम 'चाय बणाय ला।

(रूपा खथावळ सूं माय जावै। लुई खांसै, श्रीनाथ सहारो देय'र सुवाणै।)

सा'बजी ! तबीयत ठीक कोनी लखावै काई ? डाक्टर सा'ब थानै घणो बोलणै री मनाही कर राखी है अर थे जिको बोल्यां बिना रैवो ही कोनी।

लुई : चुप तो हू। पूरी तरा आराम करूं। बिस्तर सूं उंठूं तकात कोनी और काई चावो हो थे लोग ?

श्रीनाथ : सा'बजी ! थे तो रीसाणा हुयग्या। मैं तो थांरै भलै री ही बात कैयी। थानै ऐहडी हालत मे देख'र म्हांरो हीयो कळपै।

लुई : थासू अर रूपा सूं रीसाणो हुय'र जासू भी कठै ? थां लोगां सूं बेसी म्हारो नजदीकी है भी कुण ? थे लोग जिण भांत तन-मन सूं म्हारी सेवा कर रैया हो उण रो बदळो मैं कियां उतार सकूंला ?

श्रीनाथ : इणमें म्हांरो काई एहसान है सा'बजी ? सेवा करां तो पगार भी पावा।

लुई : पगार तो पगार ही हुवै अर सेवा, सेवा ही हुवै। पगार सूं सेवा रो मोल को हुय सकै नीं, श्रीनाथसिंह ! *(बोलतां-बोलतां खासण लागै)*

श्रीनाथ : रूपा !

(रूपा चाय लियां आवै, रूपा अर श्रीनाथसिंह सहारो देय'र डा लुई नै बैठाळै। रूपा चाय पावै। लुई चाय पाछी काढ देवै अर खासण लागै, श्रीनाथसिह लुई नै पाछो सुवाण देवै)

रूपा ! सा'बजी री तबीयत तो बिगडती जावै। इटली सू भारत री लावी जात्रा में आयोडै थाकेलै सूं बुखार हुयग्यो। बुखार बिगड'र निमोनिया बणग्यो। मै डाक्टर सा'ब नै ले'र आवूं। अबार बै अस्पताळ मे ई मिल जासी। रूपा ध्यान राखी, इण मे सुन्नीपात हुवण रो डर रैवै।

रूपा : भाईसा ! डाक्टर नै लेय'र बेगा बावड्या !

श्रीनाथ : बस, गयो'र आयो।

(श्रीनाथसिंह खाथावळो-सो बारै जावै)

लुई : रूपा ! पाणी।

(रूपा चमचै सूं पाणी पावै अर डील रै हाथ लगावै)

रूपा : थांरो डील तो भट्टी ज्यू तपै, सा'वजी !

(रूपा मूंढो फोर'र रोवण लागै, लुई बुखार में वडवड़ावै)

लुई : म्हारो हाथ क्यू झालै ? छोड मनै, मै कुण हूं थारो ?

(रूपा आसू पूंछती पाछी घूमै)

प्यारो भाई अटीलियो आल्प्स री पहाड़िया री भेट चढग्यो। इटली पूगण सूं सात दिन पैली मा-सा परलोकवासी हुयग्या। सिरजणहार 'री ऐ टेढी-मेढी ओळ्यां समझ लेवणो काई इत्तो सौरो है ? रूपा ! आवण में इत्ती देर क्यूं करदी ? बीं ओढरदानी नै अरदास करणनै गई ही ? बीं रै भंडार मे काई कमी है ! मांगो ज्यूं ही मिलै !

रूपा : सा'बजी.......सा'बजी ! थे किण सूं बाता करो हो ? मैं तो थारै कनै ही बैटी हूं। म्हारा तो शिव समझो ..कन्हैयो समझो.......सब ....

लुई : *(बड़बडावै)* आछै उद्देश्य खातर 'स्व' नै होम देवणो पडै। 'स्व' है कठै ? बो तो कदैई रो विराट् में लीन हुयग्यो।

रूपा : सा'बजी ! होश में आवो।

लुई : *(बड़बड़ावै)* विधाता इण सिस्टी नै क्यूं उपायी ? फकत लीला करणनै। आ बात सिकारीजण अर गळै उतरण जोगी कोनी। आ तो मिनख री कल्पना-मात्र है। जगत रै नियंता नै लीला करण री फुरसत कठै ? शहनाई बाजै लागी.........

रूपा : *(आंसू पूंछती)* सा'बजी ! संभळो ! जीवण री डोर नै हाथ सूं ना छोडो। पकडी राखो। थे तो बहादुर हो, समझदार हो। हिम्मत राखो, सा'बजी ! डाक्टर सा'ब आवणवाळा है। *(रूपा रोवण लागै)*

लुई : *(आंख्यां खोलै)* रूपा ! कोई गीत सुणा। मनै नींद आवै। मैं सोवणो चावूं।

(बैकग्राउंड मे सुपनो लोकगीत सुणीजै अर गीत रै बाजतां-बाजतां......)

रूपा : सा'बजी........सा'बजी ! *(डा. लुई नै झालै)* हाय रै

विधाता... म्हारी उमर सा'बजी नै लाग जावै अर आणी जागां तूं म्हनै अठै सूं उठाले।

(रोवती रोवती)

सा'बजी, साब'जी ! ओ थां काई करियो सा'बजी ? भाईसा नै तो थोड़ा अडिगता वे डाक्टर बाबू नै लैवण गया है अबार आ जासी। सा'बजी ओ ओलमो आप म्हारै माथै क्यूं राख दियो। म्हे अबै भाईसा नै काई जबाब देसूं।

बोलो सा'बजी, आंख्यां खोलो। म्हे थानै थांरी पसन्द री मुमल सुंणावूं....

(गीत..)

काळी–काळी काजळिये री रेख ज्यूं, कोई भुरोड़े बादळ में चमके बीजळी....

(डाक्टर अर श्री नाथसिंह आवे)

रोवती रोवती... सा'बजी... आंख्यां खोलो सा'बजी. देखो डाक्टर सा'ब पधारग्या।

(डाक्टर नाड़ देख'र)

डाक्टर : नो मोर....

श्रीनाथ . ओ आप काई कैवो हो डाक्टर सा'ब ?

(रूपा भागे अर भींत माथै हाथ मार'र आपरी चूड़ियां भांग लेवै)

(गम्भीर संगीत री धुन)

मंच माथै अन्धारो

आपके नाटक पढ़े अभिभूत हुई। राजस्थानी संस्कृति से ओत-प्रोत। पारिवारिक पृष्ठ भूमि "मूंडे बोले"। "टैलीटोरी" पर आपने खूब लिखा, जो सेवायें उनकी रही उस पर बीकानेर निवासियों ने बहुत कम लिखा। आपने उस कमी की भरपाई कर दी। वहां के उस समय के वातावरण का आपने सफल चित्रांकन कर दिया। तीनों नाटकों ने मुझपर अपना प्रभाव डाला है।

"पैम्पल" भी पूरी मौलिकता लिये हुए है। दर्शकगण की भाषा नाटक को आकर्षित किये बिना नहीं रह सकती। भाषा जाहिर करती है कि दरबारी अथवा कोर्ट की तहजीब, अदब कायदे से लेखक की कितनी वाकफियत है।

-पद्मश्री, डॉ. लक्ष्मीकुमारी चुण्डावत

श्री सूरजसिंह पवार एक निपुण नाटककार, सुदक्ष अभिनेता, कुशल निर्देशक होने के साथ-साथ राजस्थानी एवं हिन्दी के सुलेखक हैं। आपके अद्यावधि हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा में प्रणीत तीस-पैंतीस नाटक प्रकाशित हैं।

श्री पवार ने अन्वेषण अनुसंधान के उस विदेशी याज्ञिक की साहित्यिक यात्रा का अपनी सशक्त एवं सहज भाषा में भाव सनीमा द्वारा आहुति दी है।

मैं आशा करता हूँ कि साहित्य-संसार प्रस्तुत नाटक का सम्मान करेगा और श्री पवार उत्तरोत्तर लेखन द्वारा राजस्थान के गौरव से जन-मानस को परिचित करवाते रहेंगे।

-सौभाग्यसिंह शेखावत

श्री पवार स्वयं एक अच्छे अभिनेता हैं और उन्हें मंचीय जीवन का लम्बा अनुभव है, अतः इस अनुभव की छाप भी इन एकांकियों पर दिखलाई पड़ती है। छोटे-छोटे संवाद, गतिशील कथानक, मनोद्रेक करने वाली भाषा आदि बातें उन्हें मंच के अनुकूल बनाती हैं।

-डॉ. किरण नाहटा

सामाजिक सरोकार की मनोवैज्ञानिक स्थितियों से हास्य उत्पन्न करने की लेखक की कोशिश कामयाब है। आज के व्यस्त युग में अमीर-गरीब, नेता-अभिनेता, छोटा-बड़ा अथवा ज्ञानी-अज्ञानी सभी लोग परेशान हैं अतः इस गम्भीर वातावरण में इन्सान को दो क्षण की खुशी या हसने को मिल जाय तो इससे बढ़कर कोई औषधि नहीं।

-हमीदुल्ला